पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Grade-10

Hindi

SA-II

Specimen Copy

2021-22

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	अक्तूबर	पाठ-६-मधुर-मधुर मेरे	महादेवी वर्मा
०२		पाठ-७-पद्य-तोप	विरेंन डंगवाल
०३		पाठ-६-गिरगिट	अंतोन चेखव
०४		पाठ-८-पद्य-कर चले हम फ़िदा	कैफी आजमी
०५		व्याकरण –समास,अव्यय	
०६		लेखन-निबंध ,पत्र–लेखन	
०७	नवंबर	पाठ-६-अब कहाँ दूसरों के दुःख से	निदा फ़जली
०८		पाठ-७-पतझर में टूटी पत्तियां १-गिन्नी का सोना २-झेन की देन	रविन्द्र केलेकर
०९		संचयन पाठ-३-टोपी शुक्ला	राही मासूम रज़ा
		व्याकरण-मुहावरे, रस, अलंकार	
१०		लेखन-संवाद, चित्र-लेखन	
११	दिसंबर	पाठ-८-कारतूस	हबीब तनवीर
१२		पाठ-९-आमंत्रण	रविन्द्र नाथ ठाकुर
१३		व्याकरण-रस ,अलंकार ,शुद्ध –अशुद्ध वर्तनी	
१४		लेखन –निबंध	

पाठ-६
मधुर मधुर मेरे दीपक जल

पाठ प्रवेश

दूसरों से बातें करना,दूसरों को समझाना ,दूसरों को सही रास्ता दिखाना ऐसे काम तो सब करते हैं। कोई आसानी से कर लेता है ,कोई थोड़ी कठिनाई उठा कर ,कोई थोड़ी झिझक और संकोच के बाद और कोई किसी तीसरे का सहारा ले कर करता है। लेकिन इससे कहीं ज्यादा परिश्रम का काम होता है आपने आप को समझाना। अपने आप से बात करना ,अपने आप को सही रास्ते पर बनाये रखने की कोशिश करना। अपने आपको हर परिस्थिति में ढालने के लिए तैयार रखना ,हर स्थिति में सावधान रहना और अपने आपको को चैतन्य बनाये रखना।

प्रस्तुत पाठ में कवयित्री आपने आप से जो उम्मीदें कर रही है , अगर वो उम्मीदें पूरी हो जाती हैं तो न केवल उसका , हम सभी का बहुत भला हो सकता है। क्योंकि हम शरीर से भले ही अनेक हों किन्तु प्रकृति ने हम सब को एक मनुष्य जाति के रूप में बनाया है।

पाठ सार

इस कविता के माध्यम से कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीपक (ईश्वर के प्रति आस्था) तू मधुरता और कोमलता से ज्ञान का रास्ता प्रकाशित करता जा। अपनी सुगंध को अर्थात अपनी अच्छाई को इस तरह फैला जैसे एक धुप या अगरबत्ती अपनी खुशबु को फैलाते हैं। तेरे प्रकाश की कोई सीमा ही न रहे और इस तरह जल की तेरे शरीर का एक - एक अणु उसमें समा कर प्रकाश को फैलाए अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि अज्ञान का अँधेरा बहुत गहरा होता है अतः इसे दूर करने के लिए तन मन दोनों निछावर करने होते हैं।

कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीप तू सब को रोमांचित करता हुआ जलता जा। इस तरह से जल कि सभी तुझसे तेरी आग के कुछ कण मांगे अर्थात सभी जिसे भी ज्ञान की जरुरत हो वो तेरे पास आये। तू उन्हें ऐसा प्रकाश दे या ऐसा ज्ञान दे कि वो कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार रहे। ज्ञान इतना होना चाहिए की सबके काम आ सके और कोई उसमे जल कर भस्म ना हो जाये। इसलिए कवयित्री कहती है कि दीपक तू कंपते हुए इस तरह जल की तेरा प्रभाव सब पर पड़े। कवयित्री कहती हैं कि आकाश में जलते हुए अनेक तारे तो हैं परन्तु उनमें दीपक की तरह प्रेम नहीं है क्योंकि उनके पास प्रकाश तो है परन्तु वे दुनिया को प्रकाशित नहीं कर सकते। वहीँ दूसरी ओर जल से भरा सागर अपने हृदय को जलाता रहता है क्योंकि उसके पास इतना पानी होने के बावजूद भी वह पानी किसी के काम का नहीं है और बादल बिजली की सहायता से पूरी दुनिया पर बारिश करता है उसी तरह कवयित्री कहती है कि मेरे मन के दीपक तू भी अपनी नहीं दूसरों की भलाई करता जा।

पाठ की व्याख्या

मधुर मधुर मेरे दीपक जल
युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर।

शब्दार्थ
प्रतिक्षण - हर घडी
प्रतिपल - हर पल
प्रियतम - आराध्य , ईश्वर
आलोकित – प्रकाशित
प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इन पंक्तियों की कवयित्री महादेवी वर्मा है। इन पंक्तियों में कवयित्री मन के दीपक को जला कर दूसरों को रह दिखने की प्रेरणा दे रही है।
व्याख्या -: कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीपक (ईश्वर के प्रति आस्था) तू मधुरता और कोमलता से जलता जा और हर पल ,हर घडी ,हर दिन और युगो -युगो तक मेरे आराध्य अथवा ईश्वर का या ज्ञान का रास्ता प्रकाशित करता जा अर्थात ईश्वर में आस्था बनी रहे।

सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन;
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल गल
पुलक पुलक मेरे दीपक जल।
सौरभ - सुगंध
विपुल - विस्तृत
मृदुल - कोमल
अपरिमित - असीमित ,अपार
पुलक – रोमांच
प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इन पंक्तियों की कवयित्री महादेवी वर्मा है। इन पंक्तियों में कवयित्री अपने मन के दीपक को अनन्त रौशनी (ज्ञान) फैलाने को प्रेरित कर रही हैं।
व्याख्या कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीपक, तू अपनी सुगंध को अर्थात अपनी अच्छाई को इस तरह फैला जैसे एक धुप या अगरबत्ती अपनी खुशबु को फैलाते हैं। अपने स्वच्छ शरीर के सहारे अपनी कोमल मोम को इस तरह से पिघला दे कि तेरे प्रकाश की कोई सीमा ही न रहे और इस तरह जल की तेरे शरीर का एक - एक अणु उसमें समा कर प्रकाश को फैलाए अर्थात कहने का तात्पर्य यह

है कि अज्ञान का अँधेरा बहुत गहरा होता है ।अतः इसे दूर करने के लिए तन मन दोनों निछावर करने होते हैं। कवयित्री कहती हैं कि मेरे मन के दीप तू सब को रोमांचित करता हुआ जलता जा।

सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला कण
विश्व शलभ सिर धुन कहता 'मैं
हाय न जल पाया तुझमें मिल।
सिहर सिहर मेरे दीपक जल।

नूतन - नया
ज्वाला कण - आग की लपट
शलभ - पतंगा
सिर धुन - पछताना
सिहर – कांपना

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इन पंक्तियों की कवयित्री महादेवी वर्मा है। इन पंक्तियों में कवयित्री दीपक को इस तरह से जलने को कहती है कि सबको बराबर प्रकाश मिले और किसी को उस प्रकाश से हानि ना हो।

व्याख्या-: कवयित्री कहती हैं कि कि मेरे मन के दीपक तू इस तरह से जल कि सभी ठण्डे , मुलायम और नए तुझसे तेरी आग के कुछ कण मांगे अर्थात सभी जिसे भी ज्ञान की जरुरत हो वो तेरे पास आये। तू उन्हें ऐसा प्रकाश दे या ऐसा ज्ञान दे कि वो कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार रहे। पतंगे पछताते हुए कहें कि वो तेरी आग में समा कर क्यों नहीं जले अर्थात सांसारिक लोग भी तेरी तरह बनना चाहें अर्थात ज्ञान इतना होना चाहिए की सबके काम आ सके और कोई उसमे जल कर भस्म ना हो जाये। इसलिए कवयित्री कहती है कि दीपक तू कंपते हुए इस तरह जल की तेरा प्रभाव सब पर पड़े अर्थात सब अपनी जरुरत और क्षमता के हिसाब से प्रकाश या ज्ञान ले सकें।

सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला कण
विश्व शलभ सिर धुन कहता 'मैं
हाय न जल पाया तुझमें मिल।
सिहर सिहर मेरे दीपक जल।

नूतन - नया
ज्वाला कण - आग की लपट
शलभ - पतंगा
सिर धुन - पछताना
सिहर – कांपना

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इन पंक्तियों की कवयित्री महादेवी वर्मा है। इन पंक्तियों में कवयित्री दीपक को इस तरह से जलने को कहती है कि सबको बराबर प्रकाश मिले और किसी को उस प्रकाश से हानि ना हो।

व्याख्या-: कवयित्री कहती हैं कि कि मेरे मन के दीपक तू इस तरह से जल कि सभी ठण्डे , मुलायम और नए तुझसे तेरी आग के कुछ कण मांगे अर्थात सभी जिसे भी ज्ञान की जरुरत हो वो तेरे पास आये। तू उन्हें ऐसा प्रकाश दे या ऐसा ज्ञान दे कि वो कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार रहे। पतंगे पछताते हुए कहें कि वो तेरी आग में समा कर क्यों नहीं जले अर्थात सांसारिक लोग भी तेरी तरह बनना चाहें अर्थात ज्ञान इतना होना चाहिए की सबके काम आ सके और कोई उसमे जल कर भस्म ना हो जाये। इसलिए कवयित्री कहती है कि दीपक तू कंपते हुए इस तरह जल की तेरा प्रभाव सब पर पड़े अर्थात सब अपनी जरुरत और क्षमता के हिसाब से प्रकाश या ज्ञान ले सकें।

Q1- किसको आधुनिक युग की मीरा कहा गया है ?

A) पंत को

B) वेदना और करुणा को

C) मधुर मधुर मेरे दीपक जल की कवयित्री महादेवी वर्मा को

D) किसी को नहीं

Q2- महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा क्यों कहा गया ?

A) लिखने की कला के कारण

B) गीत गुनगुनाने की कारण

C) क्योंकि मीरा की ही तरह महादेवी वर्मा जी ने भी अपनी विरह की पीड़ा को कविता की कला का रंग दे दिया

D) माता जी के कारण

Q3- महादेवी वर्मा के ह्रदय में भक्ति भाव के अंकुर किसने बोए ?

A) विरह की पीड़ा ने

B) शैशवावस्था में शादी के कारण

C) पति के कारण

D) माता जी के प्रभाव के कारण

Q4- महादेवी वर्मा जी की मुख्य कृतियों के नाम लिखें |

A) नीरजा

B) सांध्य गीत

C) दीपशिखा

D) सभी

Q5- महादेवी की गद्य रचनाओं का उल्लेख करें |

A) अतीत के चलचित्र

B) स्मृति की रेखाएं

C) श्रृंखला की कड़ियाँ

D) सभी

Q6- महादेवी वर्मा के काव्य की विशेषताओं का उल्लेख करें |

A)वेदनात्मक

B) संगीतात्मक

C) गीत तत्त्व ,छायावाद एवं प्रकृतिचित्रण

D) सभी

Q7- महादेवी वर्मा की भाषा शैली कैसी है ?

A) कठोर

B) कठिन

C) कोमल

D) सरस एवं संगीतात्मक

Q8- कवयित्री ने इस कविता में दीपक को किस किसका प्रतीक माना है ?

A) परोपकार

B) वेदना

C) त्याग

D) सभी

Q9- इस कविता में कवयित्री ने किस दीपक को सम्बोधित किया है ?

A) सूरज को

B) चंदा को

C) तारो को

D) जीवन रुपी दीपक को

Q10- कवयित्री दीपक को जलने के लिए क्यों कहती है ?

A) अँधेरा मिटाने के लिए

B) बिजली नहीं है

C) तेल खत्म हो गया है

D) तांकि ईशवर रुपी प्रियतम का पथ प्रकाशमान रहे उन्हें कवयित्री तक पहुँचने में कोई परेशानी न हो

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

प्रश्न 1 -: प्रस्तुत कविता में 'दीपक ' और 'प्रियतम ' किसके प्रतिक हैं ?

उत्तर -: प्रस्तुत कविता में 'दीपक ' ईश्वर के प्रति आस्था का और 'प्रियतम ' उसके आराध्य ईश्वर का प्रतिक है।

प्रश्न 2 -: दीपक से किस बात का आग्रह किया जा रहा है और क्यों ?
उत्तर -: कवयित्री ने दीपक को निरंतर जलने के लिए इसलिए कहा है क्योंकि जब दीपक निरंतर जलेगा तो उसके आराध्य अर्थात ईश्वर तक जाने का ज्ञान रूपी रास्ता हमेशा प्रकाशमान रहेगा।
प्रश्न 3 -: 'विश्व - शलभ' दीपक के साथ क्यों जल जाना चाहता है ?
उत्तर -: विश्व - शलभ दीपक के साथ अपने आपको मिलाकर प्रकाशमय होना चाहता है। जिस तरह दीपक अपने आपको जला कर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलता है पतंगा भी उसी के साथ मिलकर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाना चाहता है।

प्रश्न 4 -: आपकी दृष्टि में मधुर मधुर मेरे दीप जल कविता का सौंदर्य इन में से किस पर निर्भर करता है ?

(क) शब्दों की आवृति पर

(ख) सफल बिंब अंकन पर

उत्तर -: इस कविता में सौंदर्य दोनों पर निर्भर है। पुनरुक्ति रूप में शब्द का प्रयोग है - मधुर मधुर, युग युग, गल गल,पुलक पुलक, सिहर सिहर, विहँस विहँस आदि कविता को लयबद्ध बनाते हुए प्रभावी बना रहे हैं। दूसरी ओर बिम्ब योजना भी सफल है - विश्व शलभ सिर धुन कहता, मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन जैसे बिम्ब हैं।
प्रश्न 5 -: कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाह रही है?
उत्तर -: कवयित्री अपने प्रियतम अर्थात ईश्वर का पथ आलोकित करना चाह रही है।

प्रश्न 6 -: कवयित्री को आकाश में तारे स्नेहहीन से क्यों प्रतीत हो रहें हैं ?
उत्तर -: कवयित्री को आकाश में तारे स्नेहहीन से प्रतीत हो रहे है क्योंकि उनमे प्रकाश तो है परन्तु वे दूसरों को प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं।

प्रश्न 7 -: पतंगा अपने क्षोभ को किस प्रकार व्यक्त कर रहा है ?
उत्तर -: पतंगा पछता कर अपना क्षोभ व्यक्त कर रहा है। वह सोचता है कि वह उस दीपक के साथ ही क्यों नहीं जल गया क्योकि पतंगा दीपक के साथ जल कर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाना चाहता था।

प्रश्न 8 -: मधुर मधुर ,पुलक पुलक ,सिहर सिहर और विहँस विहँस कवयित्री ने दीपक को हर बार अलग अलग तरह से जलने को क्यों कहा है ?स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: कवयित्री अपने मन रूपी दीपक को मधुरता , कंपन , रोमांच और ख़ुशी हर परिस्थिति में जलने के लिए कहा है ताकि हर परिस्थिति में कवयित्री अपने आराध्य अर्थात ईश्वर के मार्ग को प्रकाशमान बनाये रखे।

प्रश्न 9 -: निचे दी गई काव्य - पंक्तियों को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए -:

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
    जलमय सागर का उर जलता,
    विद्युत ले घिरता है बादल।
विहँस विहँस मेरे दीपक जल।

(क) स्नेहहीन दीपक से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर -: स्नेहहीन दीपक से तात्पर्य उन व्यक्तिओं से है जो दूसरों के लिए कुछ भी नहीं कर सकते।

(ख) सागर को जलमय कहने से क्या अभिप्राय है और उसका ह्रदय क्यों जलता है ?

उत्तर -: सागर के पास भरपूर पानी होने के बाद भी वह पानी किसी काम नहीं आता लेकिन बादल के पास जितना भी पानी होता है वो संसार पर बरसा देता है यह देख कर सागर का ह्रदय जलता है।

(ग) बादलों की क्या विशेषता बताई गई है ?

उत्तर -: बादलों में जल भरा होता है वो इस जल को संसार पर बरसा कर संसार को हरा भरा करते हैं और बिजली की चमक से संसार को प्रकाशमान करते हैं अतः बादल का स्वभाव परोपकारी कहा गया है।

(घ) कवयित्री दीपक को विहँस विहँस कर जलने को क्यों कह रही है ?

उत्तर -: कवयित्री दीपक को सबकी भलाई करते हुए जलने को इसलिए कहती है क्योंकि उसने देखा है कि सागर भरपूर पानी के बाद भी किसी की प्यास नहीं भुजा सकता और बादल थोड़े से पानी से सबको खुश कर देता है तो कवयित्री भी चाहती है की वो सागर ना बन कर बादल बने और सबकी भलाई करे।

प्रश्न 10 -: क्या मीराबाई और आधुनिक मीरा महादेवी वर्मा इन दोनों ने अपने अपने आराध्य देव से मिलने के लिए जो युक्तियाँ अपनाई हैं ,उनमे आपको कुछ समानता या अंतर प्रतीत होता है ? अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर -: महादेवी वर्मा ने ईश्वर को निराकार ब्रम्ह माना है और उसी को अपना अराध्य भी मानती हैं। सबकुछ समर्पित करने की इच्छा भी की है परन्तु उसके स्वरूप का वर्णन नहीं किया है। मीरा कृष्ण को अपना प्रियतम मानती है और उनकी सेविका बनना चाहती हैं। उनके स्वरूप और सौन्दर्य की रचना भी की है। इन दोनों में बस इतना ही फर्क है कि महादेवी अपने अराध्य को निर्गुण मानती है और मीरा अपने प्रियतम की सगुण उपासक है।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए

(1)-: दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल गल

उत्तर -: कवयित्री का मानना है की मेरे आस्था के दीपक तू जल जल कर अपने जीवन के एक - एक कण को गला दे और उस प्रकाश को सागर की भांति फैला दे। ताकि दूसरे लोग भी उसका लाभ उठा सकें।

2)-: युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर।

उत्तर -: कवयित्री का भाव यह है कि आस्था रूपी दीपक जलता रहे और युगों - युगों तक प्रकाश फैलाता रहे ताकि प्रियतम रूपी ईश्वर का मार्ग हमेशा प्रकाशित रहे अर्थात ईश्वर में आस्था बनी रहे।

3)-: मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन;

उत्तर -: इस पंक्ति में कवयित्री का मानना है कि इस कोमल तन को मोम की तरह पिघलना होगा ताकि प्रियतम तक पहुंचना संभव हो अर्थात ईश्वर प्राप्ति के लिए कठिन साधना करनी पड़ती है

पाठ-७ पद्य –तोप

कवि - वीरेन डंगवाल

जन्म - 5 अगस्त 1947 (उत्तराखंड)

तोप पाठ सार

प्रस्तुत पाठ हमें याद दिलाता है कि कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। भारत में उसका स्वागत किया गया था परन्तु धीरे - धीरे वो हमारी शासक बन गई। अगर उन्होंने कुछ बाग़ - बगीचे बनाये तो उन्होंने तोपें भी तैयार की। कवि कहते हैं कि यह जो 1857 की तोप आज कंपनी बाग़ के प्रवेश द्वार पर रखी गई है इसकी बहुत देखभाल की जाती है। जिस तरह यह कंपनी बाग़ हमें विरासत में अंग्रेजों से मिला है उसी तरह यह तोप भी हमें अंग्रेजों से ही विरासत में मिली है। सुबह और शाम को बहुत सारे व्यक्ति कंपनी के बाग़ में घूमने के लिए आते हैं। तब यह

तोप उन्हें अपने बारे में बताती है कि मैं अपने ज़माने में बहुत ताकतवर थी। अब तोप की स्थिति बहुत बुरी है- छोटे बच्चे इस पर बैठ कर घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। चिड़ियाँ इस पर बैठ कर आपस में बातचीत करने लग जाती हैं। कभी - कभी शरारती चिड़ियाँ खासकर गौरैयें तोप के अंदर घुस जाती हैं। वह हमें बताना चाहती है कि ताकत पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि ताकत हमेशा नहीं रहती।

तोप पाठ की व्याख्या

कंपनी बाग़ के मुहाने पर
धर रखी गई है यह 1857 की तोप
इसकी होती है बड़ी सम्हाल, विरासत में मिले
कंपनी बाग़ की तरह
साल में चमकाई जाती है दो बार।

मुहाने - प्रवेश द्वार पर
धर रखी - रखी गई
सम्हाल - देखभाल
विरासत - पूर्व पीढ़ियों से प्राप्त वस्तुएँ

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि वीरेन डंगवाल हैं। इन पंक्तियों में कवि ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में इस्तेमाल की गई तोप का वर्णन किया है।

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि यह जो 1857 की तोप आज कंपनी बाग़ के प्रवेश द्वार पर रखी गई है इसकी बहुत देखभाल की जाती है। जिस तरह यह कंपनी बाग़ हमें विरासत में अंग्रेजों से मिला है, उसी तरह यह तोप भी हमें अंग्रेजों से ही विरासत में मिली है। जिस तरह कंपनी बाग़ की साल में दो बार अच्छे से देखरेख की जाती है उसी तरह इस तोप को भी साल में दो बार चमकाया जाता है।

सुबह शाम आते हैं कंपनी बाग़ में बहुत से सैलानी
उन्हें बताती है यह तोप
कि मैं बड़ी जबर
उड़ा दिए थे मैंने
अच्छे - अच्छे सूरमाओं के धज्जें
अपने ज़माने में

सैलानी - दर्शनीय स्थलों पर आने वाले यात्री
जबर - ताकतवर
सूरमाओं - वीर
धज्जें - चिथड़े - चिथड़े करना

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि वीरेन डंगवाल हैं। इन पंक्तियों में कवि बताना चाहता है कि तोप का प्रयोग कहाँ हुआ था !

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि सुबह और शाम को बहुत सारे व्यक्ति कंपनी के बाग़ में घूमने के लिए आते हैं। तब यह तोप उन्हें अपने बारे में बताती है कि मैं अपने ज़माने में बहुत ताकतवर थी। मैंने अच्छे अच्छे वीरों के चिथड़े उड़ा दिए थे। अर्थात उस समय तोप का डर हर इंसान को था।

अब तो बहरहाल
छोटे बच्चों की सवारी से अगर यह फारिग हो
तो उसके ऊपर बैठकर
चिड़ियाँ ही अकसर करती है गपशप
कभी -कभी शैतानी में वे इसके भीतर भी घुस जाती हैं
खासकर गौरैयें
वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

बहरहाल - बुरी स्थिति
फारिग - मुक्त, खाली

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि वीरेन डंगवाल हैं। इन पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि किसी भी बुराई को हिम्मत और होंसलों के सहारे खत्म किया जा सकता है।

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि अब तोप की स्थिति बहुत बुरी है। छोटे बच्चे इस पर बैठ कर घुड़सवारी का खेल खेलते
हैं। जब बच्चे इस पर नहीं खेल रहे होते तब चिड़ियाँ इस पर बैठ कर आपस में बातचीत करने लग जाती हैं। कभी -कभी शरारती चिड़ियाँ खासकर गौरैयें तोप के अंदर घुस जाती हैं। वो छोटी सी चिड़िया ऐसा करके हमें बताना चाहती हैं कि कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो एक ना एक दिन उसका भी अंत निश्चित होता है।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1 -: विरासत में मिली चीजों की बड़ी संभाल क्यों होती है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: विरासत में मिली चीजों की बडी संभाल इसलिए होती है क्योंकि ये हमें अपने पूर्वजों , परम्पराओं और इतिहास की जानकारी देते हैं और इसी के साथ हमें सीख भी देते हैं। इसलिए इन्हें अमूल्य माना जाता है।

प्रश्न 2 -: इस कविता से आपको तोप के बारे में क्या जानकारी मिलती है ?

उत्तर -: इस कविता में हमें तोप के विषय के बारे में यह जानकारी मिलती है कि यह तोप 1857 में एक शक्तिशाली हथियार था जिसकी सहायता से कई वीरों के प्राण लिए गए थे परन्तु आज यह तोप

केवल देखने की वस्तु मात्र रह गई है अब बच्चे इस पर घुड़सवारी करते हैं और चिड़ियाँ इस पर गपशप करती है।

प्रश्न 3 -: कंपनी बाग़ में राखी तोप क्या सीख देती है ?

उत्तर -: कंपनी बाग़ में रखी तोप हमें अंग्रेजों के अत्याचारों और हमारे शहीदों की याद दिलाती है और सावधान रहने की सलाह देती है ताकि कोई दोबारा हम पर राज ना करे। इसी के साथ तोप यह सीख भी देती है कि चाहे कोई कितना भी अधिक शक्तिशाली क्यों न हो एक ना एक दिन उसका अंत हो ही जाता है।

प्रश्न 4 -: कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात कही गई है। ये दो अवसर कौन से होंगे ?

उत्तर -: भारत की स्वतंत्रता के प्रतिक दो दिन 15 अगस्त और 26 जनवरी हैं। इन्ही दो उपलक्ष्यों पर कंपनी बाग़ को सजाया जाता है और तोप को चमकाया जाता है।

(ख) निम्नलिखित के भाव स्पष्ट कीजिए -:

(1)-: अब तो बहरहाल
छोटे बच्चों की सवारी से अगर यह फारिग हो
तो उसके ऊपर बैठकर
चिड़ियाँ ही अकसर करती है गपशप

उत्तर -: इन पंक्तियों में कवि ने तोप की वर्तमान स्थिति का वर्णन किया है ,एक समय में जहाँ तोप ने सबको डरा कर रखा था वही आज बच्चे उस पर घुड़सवारी कर रहे हैं और चिड़ियाँ उस पर बैठ कर गपशप कर रही हैं।

(2)-: वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

उत्तर -: आज कम्पनी बाग़ में रखी तोप किसी का कुछ नई बिगाड़ सकती । छोटी छोटी चिड़ियें भी उस पर खेलती फुदकती रहती हैं । यह ये बात दर्शाता है कि कोई कितना भी शक्तिशाली और क्रूर क्यों ना, हो एक दिन उसे शांत होना ही पड़ता है।

(3)-: उड़ा दिए थे मैंने
अच्छे - अच्छे सूरमाओं के धज्जें

उत्तर :- इन पंक्तिओं में तोप अपनी प्रशंसा कर रही है की 1857 में उससे ज्यादा शक्तिशाली कोई नहीं था उसने कई वीरों को मारा था।

*बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- तोप कविता के कवि कौन है ?

A) वीरेन

B) वीरेन डंगवाल

C) महादेवी वर्मा

D) कोई नहीं

Q2- कविता के अनुसार तोप कहाँ रखी गई है ?

A) प्रवेश द्वार पर

B) शहर में

C) शहर के प्रवेश द्वार में

D) कंपनी बाग़ के प्रवेश द्वार पर

Q3- तोप कंपनी बाग़ के प्रवेश द्वार पर क्यों रखी गई है ?

A) तांकि सबको याद रहे ईस्ट इंडिया जैसी कंपनी दोबारा देश में न आ सके

B) वहाँ सुन्दर लगती है

C) बाग़ की सुंदरता बढ़ाने के लिए

D) तांकि सब फोटो खिचवा सके

Q4- यह तोप कब की है ?

A) १९५७ की

B) १८५० की

C) १९५० की

D) १५९५

Q5- तोप को साल में कितनी बार चमकाया जाता है ?

A)तीन बार

B) पांच बार

C) सात बार

D) दो बार

Q6- कविता में किस तरह के छंदो का प्रयोग किया गया है ?

A)चौपाई

B) कविता

C) दोहे

D) मुक्त

Q7- यह तोप हमें कहाँ से मिली है ?

A) युद्ध में

B) बुजुर्गो से

C) विरासत में

D) कोई नहीं

Q8- यह तोप किसने प्रयोग की थी ?

A) बुजुर्गो ने

B) झाँसी की रानी ने

C) अंग्रेजो ने १८५७ में

D) कोई नहीं

Q9- तोप को मुहाने पर क्यों रखा गया है ?

A) तांकि आने जाने वाले लोग आसानी से देख सके

B) मुहाने की सुंदरता बढ़ाने के लिए

C) शान बनाने के लिए

D) कोई नहीं

Q10- विरासत का क्या अर्थ है ?

A) धन

B) पुरानी वस्तुएँ

C) पुराना खज़ाना

D) पूर्वजों से मिला धन एवं वस्तुएँ

Q11- तोप अपने बारे में क्या बता रही है ?

A) वह बहुत बड़ी है

B) वह अब कुछ नहीं कर सकती

C) कि वह अपने वक़्त में बहुत शक्तिशाली थी

D) कोई नहीं

Q12- श्रीकांत वर्मा को किस कविता संग्रह के लिए पुरस्कारमिला ?

A) इसी दुनिया

B) दुष्चक्र में स्त्रष्टा

C) तोप के लिए

D) सभी

Q13- तोप के माध्यम से कवि ने क्या सन्देश दिया है ?

A) पूर्वज शक्तिशाली थे

B) हम तोपों से नहीं डरते

C) पूर्व की गल्तियों को न दोहराने का सन्देश

D) सभी

Q14- अब कम्पनी बाग मे आये लडके तोप पर बैठ कर क्या करते हैं ?

A) तोप चलाते हैं

B) तस्वीर खीचते हैं

C) दोस्तो को दिखाते हैं

D) तोप पर बैठ कर घुड सवारी करते हैं

पाठ-५-गद्य-गिरगिट
अन्तोन चेखव

(गिरगिट पाठ सार

प्रस्तुत पाठ की कहानी में रूस के महान लेखक ने एक ऐसी घटना का वर्णन किया है जब रूस में जार की उपाधि धारक राजाओं के शासन में वहाँ की शासन व्यवस्था चापलूसों के भरोसे चल रही थी।वहाँ पर हालत इतने ख़राब थे कि वहाँ के अधिकारी कानून के या आम आदमी की ऐसी शिकायत पर भी सही फ़ैसला नहीं कर पाते थे जिसमें दोषी कोई आदमी नहीं बल्कि कोई खतरनाक कुत्ता ही हो।

पुलिस इंसपेक्टर ओचुमेलॉव दूसरों से हथियायी बेर की एक किस्म झरबेरियाँ की एक टोकरी को ले कर चौराहे से गुजर रहा था। तो अचानक उसके कानों में कुछ शोर सुनाई पड़ा। ओचुमेलॉव मुड़ा और भीड़ की ओर चल पड़ा। उसने देखा कि एक कुत्ता तीन टाँगों पर रेंगता हुआ आ रहा था वह इसलिए रेंग रहा था क्योंकि एक आदमी ने गिरते-पड़ते किसी तरह से उस कुते की एक टाँग को पकड़ लिया था। वह आदमी अपना दायाँ हाथ ऊपर हवा में उठा कर खड़ा था और वहाँ पर मौजूद लोगों को अपनी खून से लतपथ ऊँगली को दिखा रहा था। ओचुमेलॉव ने उस आदमी को पहचान लिया। वह ख्यूक्रिन नाम का सुनार था । उस भीड़ के बीचोंबीच अपनी अगली टाँगों को फैलाए हुए, नुकीले मुँह वाला और पीठ पर फैले हुए पीले दाग वाला, सफ़ेद रंग का बारजोई नामक प्रजाति का कुत्ता ऊपर से नीचे तक काँप रहा था और अपराधी की तरह नज़र आ रहा था। घटना के बारे में पूछने पर उस आदमी ने बताया कि वह तो चुपचाप अपने रस्ते पर चल रहा था। इतने में अचानक इस कमअक्ल कुत्ते ने बिना किसी कारण के ही उसकी ऊँगली को काट लिया। ख्यूक्रिन की बात सुन कर ओचुमेलॉव कुते के बारे में पूछता है कि वह कुत्ता है किसका। वह इस मामले को छोड़ेगा नहीं। वह उस कमअक्ल आदमी को इतना जुर्माना लगाएगा कि उसको पता चल जयेगा कि कुतों और जानवरों को इस तरह कही भी फालतू खुला छोड़ देने का क्या परिणाम हो सकता है। वह अपने सिपाही से पता लगाने को कहता है कि वह पिल्ला किसका है और इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार कर के बिना देरी किए, कुत्ते को मार देने को कह देता है। इतने में भीड़ में से कोई कहता है कि लगता है ये कुत्ता जनरल झिगालॉव का है। ये सुन कर

ओचुमेलॉव हड़बड़ा जाता है क्योंकि उसने कुत्ते को मरवाने का आदेश दे दिया था। वह ख्यूक्रिन की तरफ़ मुड़ता है और उससे कहने लगा कि उसको ये बात समझ नहीं आ रही है कि आखिर इस कुत्ते ने उसे कैसे काट लिया। ये उसकी ऊँगली तक आखिर पहुंचा कैसे। ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन को ही कोसते हुए कहता है कि जरूर उसकी ऊँगली में कील इत्यादि लग गई होगी और उसने अचानक ही सोच लिया होगा कि चोट का पूरा इल्जाम कुत्ते पर डाला जाए ताकि उस कुत्ते के मालिक पर दबाव डालकर पैसे वसूल कर सके। सिपाही ध्यान से कुत्ते को देख कर कहता है कि वो कुत्ता जनरल साहब का नहीं है क्योंकि जनरल साहब के पास तो ऐसा कोई कुत्ता नहीं है। जब सिपाही कहता है कि उसे एकदम पक्का विश्वास है कि वो कुत्ता जनरल साहब का नहीं है, तब ओचुमेलॉव फिर से ख्यूक्रिन की ओर हो जाता है और कहता है कि इस कुत्ते ने उसे काटा है तो एक बात को याद रखना है कि इस कुत्ते को किसी भी हालत में छोड़ना नहीं है। इसे हर हालात में मज़ा चखाना ही है। सिपाही फिर से सोचते हुए बोला कि शायद यह जनरल साहब का ही कुत्ता है। कल ही उसने बिलकुल इसी तरह का एक कुत्ता उनके आँगन में देखा था। अब ओचुमेलॉव जानता था कि वह बहुत बार अपनी राय को बदल चूका था इसलिए अब उसने कहा की उस कुत्ते को जरनल साहब के पास ले जाया जाए और अब उन्हीं से पूछा जाए की क्या वह कुत्ता उनका है या नहीं। जब उस कुत्ते के बारे में कोई ठीक से नहीं बता पा रहा था तब ओचुमेलॉव को जनरल साहब के घर में खाना बनाने वाला दिखाई देता है, वह उसको बुलाता है और उससे पता करने की कोशिश करता है। पर बावर्ची मना करते हुए कहता है कि उसने अपनी पूरी ज़िन्दगी में इस तरह के कुत्ते को जरनल साहब के घर में नहीं देखा है। यह सब सुनकर ओचुमेलॉव कहता है की अब और ज्यादा जानने की जरुरत नहीं है। वह कुत्ता फालतू है, अब इस कुत्ते को मार कर सारी घटना को ही ख़त्म कर देना चाहिए। इस पर बावर्ची प्रोखोर कहता है कि यह कुत्ता जनरल साहब का नहीं है, परन्तु यह उनके भाई का है। जब ओचुमेलॉव को पता चला की जनरल का भाई आया है तो ओचुमेलॉव बावर्ची से कहता है कि थोड़ा सोच कर देखो कि जनरल साहब के भाई साहब जनरल साहब से मिलने आए हैं और वह इतना भी नहीं जनता। और ये कुत्ता उनका है। ये जान कर बहुत ख़ुशी हुई, ले जाइए इसे, ये तो बहुत ही सूंदर कुत्ता है। प्रोखोर कुत्ते को सँभालकर काठगोदाम से बाहर चला जाता है और भीड़ ख्यूक्रिन की हालत पर हँसने लगती है। ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन को डराते हुए कहता है की वह उससे बाद में निपटेगा और अपने लम्बे चोगे को शरीर पर डालता हुआ, बाजार के उस चैराहे को पार करता हुआ अपने रास्ते पर निकल जाता है।

बार-बार अपनी बात से पलटने और बड़े अधिकारियों के कुत्ते तक की सिफ़ारिश करने कारण इस पाठ का नाम गिरगिट रखा गया है। और ऐसी शासन व्यवस्था के लिए ही कवि तुलसीदास ने कहा होगा 'समरथ को नहिं दोष गुसाई' अर्थात समर्थवान लोगों का कोई दोष नहीं होता।

गिरगिट पाठ की व्याख्या

हाथ में बंडल थामे, पुलिस इंसपेक्टर ओचुमेलॉव नया ओवरकोट पहने हुए, बाजार के चौराहे से गुजरा। उसके पीछे, अपने हाथों में, जब्त की गई झरबेरियों की टोकरी उठाए, लाल बालों वाला एक सिपाही चला

आ रहा था। चारों ओर ख़ामोशी थी..... चौराहे पर किसी आदमी का निशान तक नहीं था। दुकानों के खुले दरवाज़े, भूखे जबड़ों की तरह, भगवान की इस सृष्टि को उदास निगाहों से ताक रहे थे। कोई भिखारी तक उनके आस-पास नहीं दिख रहा था। बंडल - गठ्ठा

ओवरकोट - बड़ा कोट

जब्त - कब्ज़ा करना या हथिया लेना

झरबेरियाँ - बेर की एक किस्म

हाथों में गठ्ठा थामे हुए, पुलिस इंसपेक्टर ओचुमेलॉव अपना नया बड़ा कोट पहन कर, बाजार के चौराहे से गुजर रहा था। उसके पीछे एक लाल बालों वाला एक सिपाही चल रहा था, जिसके हाथों में एक टोकरी थी जिसमें बेर की एक किस्म झरबेरियाँ थी, जिसको उन्होंने दूसरों से हथिया लिया था। चारों ओर ख़ामोशी थी अर्थात कोई शोर सुनाई नहीं दे रहा था। चौराहे पर कोई भी आदमी दिखाई नहीं दे रहा था। दुकानों के खुले हुए दरवाजे ऐसे लग रहे थे जैसे भूख के कारण उनका मुँह खुला हुआ हो क्योंकि कोई भी उनके अंदर खरीददारी करने नहीं जा रहा था और लग रहा था जैसे वे भगवान के द्वारा बनाई इस दुनिया को उदास नजरों से देख रहे हों। यहाँ तक की कोई भिखारी भी उनके आस-पास नहीं भटक रहा था।

सहसा ओचुमेलॉव के कानों में एक आवाज़ गूँजी- "तो तू कटेगा? तू? शैतान कहीं का! ओ छोकरो! इसे मत जाने दो। इन दिनों काट खाना मना है। पकड़ लो इस कुत्ते को। आह....!"

तब किसी कुत्ते के किकियाने की आवाज़ सुनाई दी। ओचुमेलॉव ने उस आवाज की दिशा में घूमकर घुरा और पाया की एक व्यापारी पिचूगिन के काठगोदाम में से एक कुत्ता तीन टाँगों के बल पर रेंगता चला आ रहा है। छींट की कलफ़ लगी कमीज़ और बिना बटन की वास्केट पहने हुए, एक व्यक्ति कुत्ते के पीछे दौड़ रहा था। गिरते-पड़ते उसने कुत्ते को पिछली टाँग से पकड़ लिया। फिर कुत्ते का किकियाना और एक चीख- "मत जाने दो " दुबारा सुनाई दी। दुकानों में ऊँघते हुए

बंडल - गठ्ठा

ओवरकोट - बड़ा कोट

जब्त - कब्ज़ा करना या हथिया लेना

झरबेरियाँ - बेर की एक किस्म

हाथों में गठ्ठा थामे हुए, पुलिस इंसपेक्टर ओचुमेलॉव अपना नया बड़ा कोट पहन कर, बाजार के चौराहे से गुजर रहा था। उसके पीछे एक लाल बालों वाला एक सिपाही चल रहा था, जिसके हाथों में एक टोकरी थी जिसमें बेर की एक किस्म झरबेरियाँ थी, जिसको उन्होंने दूसरों से हथिया लिया था। चारों ओर ख़ामोशी थी अर्थात कोई शोर सुनाई नहीं दे रहा था। चौराहे पर कोई भी आदमी दिखाई नहीं दे रहा था। दुकानों के खुले हुए दरवाजे ऐसे लग रहे थे जैसे भूख के कारण उनका मुँह खुला हुआ हो क्योंकि कोई भी उनके अंदर खरीददारी करने नहीं जा रहा था और लग रहा था जैसे वे भगवान के द्वारा बनाई इस दुनिया को उदास नजरों से देख रहे हों। यहाँ तक की कोई भिखारी भी उनके आस-पास नहीं भटक रहा था।

सहसा ओचुमेलॉव के कानों में एक आवाज़ गूँजी- "तो तू कटेगा? तू? शैतान कहीं का! ओ छोकरो! इसे मत जाने दो। इन दिनों काट खाना मना है। पकड़ लो इस कुत्ते को। आह....!"
तब किसी कुत्ते के किकियाने की आवाज़ सुनाई दी। ओचुमेलॉव ने उस आवाज की दिशा में घूमकर घुरा और पाया की एक व्यापारी पिचूगिन के काठगोदाम में से एक कुत्ता तीन टाँगों के बल पर रेंगता चला आ रहा है। छींट की कलफ़ लगी कमीज़ और बिना बटन की वास्केट पहने हुए, एक व्यक्ति कुत्ते के पीछे दौड़ रहा था। गिरते-पड़ते उसने कुत्ते को पिछली टाँग से पकड़ लिया। फिर कुत्ते का किकियाना और एक चीख- "मत जाने दो " दुबारा सुनाई दी। दुकानों में ऊँघते हुए
कुत्ता तीन टाँगों पर इसलिए रेंग रहा था क्योंकि मांड लगी हुई छींट की कमीज़ और बिना बटन की वास्केट पहने हुए, एक आदमी उस कुत्ते के पीछे दौड़ रहा था और उसने गिरते-पड़ते किसी तरह से उस कुत्ते की एक टाँग को पकड़ लिया था। फिर दुबारा से कुत्ते की वही कष्ट से भरी हुई चीख और उस आदमी का दुबारा चिल्लाना कि 'मत जाने दो' सुनाई दिया। शोर को सुन कर दुकानों में से कुछ चेहरे बाहर देखने लगे जो लग रहा था कि आधी नींद से जागे हों और देखते-ही-देखते थोड़ी देर में ही न जाने कहाँ से लकड़ी के गोदाम के इर्द-गिर्द भीड़ खड़ी हो गई, ऐसा लग रहा था मानो वो भीड़ जमीन फाड़ कर आई हो।
"हुजूर! यह तो जनशांति भंग हो जाने जैसा कुछ दीख रहा है",सिपाही ने कहा।
ओचुमेलॉव मुडा और भीड़ की तरफ चल दिया। उसने काठगोदाम के पास बटन विहीन वास्केट धारण किए हुए उस आदमी को देखा, जो अपना दायाँ हाथ उठाए वहाँ मौजूद था तथा उपस्थित लोगों को अपनी लहूलुहान ऊँगली दिखा रहा था उसके नशीले-से हो आए चेहरे पर साफ़ लिखा दिख रहा था- "शैतान की औलाद! मैं तुझे छोड़ने वाला नहीं!
और उसकी ऊँगली भी जीत के झंडे की तरह गड़ी दिखाई दे रही थी। ओचुमेलॉव ने इस व्यक्ति को पहचान लिया। वह ख्यूक्रिन नामक सुनार था और इस भीड़ के बीचोंबीच, अपनी अगली टाँगे पसारे, नुकीले मुँह और पीठ पर फैले पीले दागवाला, अपराधी-सा नजर आता, सफ़ेद बारज़ोई पिल्ला, ऊपर से निचे तक काँपता पसरा पड़ा था। उसकी आँसुओं से सनी आँखों में संकट और आंतक की गहरी छाप थी।

जनशांति भंग - लोगों की शान्ति में दखल
विहीन - बिना
धारण - पहनना
लहूलुहान - खून से लतपथ
पसारना - फैलाना
बारज़ोई - कुत्ते की एक प्रजाति

शोर और भीड़ को देख कर सिपाही ओचुमेलॉव से कहता है कि साहब, यह तो ऐसा दिखाई पड़ रहा है जैसे लोगो की शांति को भंग किया जा रहा है। यह सुन कर ओचुमेलॉव मुड़ा और भीड़ की ओर चल पड़ा। जब वह लकड़ी के गोदाम के पास पंहुचा तो उसने वहाँ बिना बटन वाली

वास्केट को पहने हुए एक आदमी देखा, जो वहाँ पर अपना दायाँ हाथ ऊपर हवा में उठा कर खड़ा था और वहाँ पर मौजूद लोगों को अपनी खून से लतपथ ऊँगली दिखा रहा था। उसका चेहरा गुस्से से ऐसे लाल हो गया था जैसे नशे में डूबे व्यक्ति का होता है और उसके चेहरे को देख कर साफ लग रहा था कि जैसे वह कुत्ते से कह रहा हो कि शैतान की औलाद वह उसे छोड़ने वाला नहीं है। और उस व्यक्ति की ऊँगली भी ऐसे दिखाई पड़ रही थी जैसे किसी ने जीत का झंडा गाड़ दिया हो। ओचुमेलॉव ने उस आदमी को पहचान लिया। वह ख्यूक्रिन नाम का सुनार था और उस भीड़ के बीचोंबीच अपनी अगली टाँगों को फैलाए हुए, नुकीले मुँह वाला और पीठ पर फैले हुए पीले दाग वाला, सफ़ेद रंग का बारजोई नमक प्रजाति का कुत्ता ऊपर से नीचे तक काँप रहा था और अपराधी की तरह नज़र आ रहा था। उसकी आँखे आँसुओं से भरी हुई थी और उसमें खतरे और डर का मिश्रण दिखाई दे रहा था।

"यह सब क्या हो रहा है?" भीड़ को चीरते हुए ओचुमेलॉव ने सवाल किया-"तुम सब लोग इधर क्या कर रहे हो? तुमने अपनी यह ऊँगली ऊपर क्यों उठा रखी है? चिल्ला कौन रहा था?"

"हुज़ूर! मैं तो चुपचाप चला जा रहा था," मुँह पर हाथ रखकर खाँसते हुए ख्यूक्रिन ने कहा- "मुझे मित्री मित्रिच से लकड़ी लेकर कुछ काम निपटाना था, तब अचानक इस कम्बख्त ने अकारण मेरी ऊँगली काट खाई। माफ़ करें। आप तो जानते हैं मैं ठहरा कामकाजी आदमी..... मेरा काम भी एकदम पेचीदा किस्म का है। मुझे लग रहा है एक हफ्ते तक मेरी यह ऊँगली अब काम करने लायक नहीं हो पाएगी। तो हुज़ूर! मेरी गुजारिश है कि इसके मालिकों से मुझे हरज़ाना तो दिलवाया जाए। यह तो किसी कानून में नहीं लिखा है हुज़ूर कि आदमखोर जानवर हमें काट खाएँ और हम उन्हें बरदाश्त करते रहें। अगर हर कोई इसी तरह काट खाना शुरू कर दे तो यह जिंदगी तो नर्क हो जाए....."

निपटाना - ख़त्म करना था

कम्बख्त – कमसमझ

अकारण - बिना किसी कारण

पेचीदा - जटिल / कठिन

गुजारिश - प्रार्थना

हरज़ाना - हानि होने पर उसके बदले में दिया जानेवाला धन

आदमखोर - आदमियों को खाने वाला

बरदाश्त – झेलना

जब ओचुमेलॉव वहाँ भीड़ के पास पहुँचा तो उसने कई प्रश्न एक साथ किए जैसे- यह सब क्या हो रहा है? तुम सब लोग इधर क्या कर रहे हो? तुमने अपनी यह ऊँगली ऊपर क्यों उठा रखी है? चिल्ला कौन रहा था?
इन प्रश्नों के उत्तर में ख्यूक्रिन मुँह पर हाथ रखकर खाँसते हुए कहता है कि साहब, वह तो चुपचाप अपने रस्ते पर चल रहा था। उसे मित्री मित्रिच से लकड़ी लेकर अपना कुछ काम ख़त्म करना था। इतने में अचानक इस कमअक्ल कुत्ते ने बिना किसी कारण के ही उसकी ऊँगली को काट लिया। फिर ख्यूक्रिन ओचुमेलॉव से माफ़ी मांगते हुए कहता है कि वह तो रोजमर्रा का काम करने वाला एक छोटा आदमी है और उसका काम भी बहुत ज्यादा कठिन है। ख्यूक्रिन आगे कहता है कि उसे लग रहा है कि उसकी ऊँगली एक हफ्ते से पहले काम करने योग्य नहीं हो पाएगी। इसलिए वह ओचुमेलॉव से प्रार्थना करता है कि उसे उस कुत्ते के मालिक से हानि होने पर उसके बदले में दिया जाने वाला धन दिलवाया जाए। ख्यूक्रिन ओचुमेलॉव से कहता है कि यह तो किसी कानून में नहीं लिखा है कि आपको कोई आदमखोर जानवर काट खाएँ और आप चुप-चाप सहन करते जाएँ। अगर इसी तरह सभी काट खाते रहे तो इंसानों की जिंदगी तो नर्क ही बन जाएगी।

"हूँ.. ठीक है, ठीक है," ओचुमेलॉव ने अपना गला खँखारते और अपनी त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा- "ठीक है यह तो बताओ कि यह कुत्ता किसका है। मैं इस मामले को छोड़ने वाला नहीं हूँ। कुत्ते को इस तरह आवारा छोड़ देनी का मज़ा मैं इसके मालिकों को चखाकर रहूँगा। जो कानून का पालन नहीं करते, अब उन लोगों से निबटने का वक्त आ गया है। उस बदमाश आदमी को मैं इतना जुर्माना ठोकूँगा ताकि उसे इल्म हो जाये कि कुत्तों और जानवरों को इस तरह आवारा छोड़ देने का क्या नतीज़ा होता है? मैं उसे ठीक करके रहूँगा," तब सिपाही की तरफ मुड़कर उसने अपनी बात जारी रखी- "येल्दीरीन! पता लगाओ यह पिल्ला किसका है और इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार करो। इस कुत्ते को बिना देर किए ख़त्म कर दिया जाए। शायद यह पागल हो.... मैं पूछ रहा हूँ आखिर यह किसका कुत्ता है?"

खँखारना - गला साफ़ करना

त्योरियाँ - भौहें चढ़ाना

निबटना - समाधान

इल्म - जानकारी / ज्ञान

नतीज़ा – परिणाम

ख्यूक्रिन की बात सुन कर ओचुमेलॉव अपना गला साफ करता है और अपनी भौंहों को चढ़ाते हुए कहता है कि ये सब तो ठीक है परन्तु यह तो बताओ कि यह कुत्ता है किसका। ओचुमेलॉव कहता है कि वह इस मामले को छोड़ेगा नहीं। अपने कुत्ते को इस तरह फालतू खुला छोड़ने का मज़ा तो वह उस कुत्ते के मालिक को जरूर देगा। ओचुमेलॉव कहता है कि जो लोग कानून का पालन नहीं करते हैं उनका समाधान करने का समय आ गया है। वह उस कमअक्ल आदमी को इतना जुर्माना लगाएगा कि उसको पता चल जयेगा कि कुत्तों और जानवरों को इस तरह कही भी फालतू खुला छोड़ देने का क्या परिणाम हो सकता है। वह उस इंसान को सबक सिखा कर रहेगा। ये बातें कहता हुआ ओचुमेलॉव सिपाही की ओर मुड़ता है और सिपाही से कहता है कि येल्दीरीन! पता लगाओ यह पिल्ला किसका है और इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार करो। बिना देरी किए इस कुत्ते को मार दो। क्या पता यह कुत्ता पागल हो। ओचुमेलॉव एक बार फिर से पूछता है कि कुत्ता आखिर है किसका?"

"हूँ.. ठीक है, ठीक है," ओचुमेलॉव ने अपना गला खँखारते और अपनी त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा- "ठीक है यह तो बताओ कि यह कुत्ता किसका है। मैं इस मामले को छोड़ने वाला नहीं हूँ। कुत्ते को इस तरह आवारा छोड़ देनी का मज़ा मैं इसके मालिकों को चखाकर रहूँगा। जो कानून का पालन नहीं करते, अब उन लोगों से निबटने का वक्त आ गया है। उस बदमाश आदमी को मैं इतना जुर्माना ठोकूँगा ताकि उसे इल्म हो जाये कि कुत्तों और जानवरों को इस तरह आवारा छोड़ देने का क्या नतीज़ा होता है? मैं उसे ठीक करके रहूँगा," तब सिपाही की तरफ मुड़कर उसने अपनी बात जारी रखी- "येल्दीरीन! पता लगाओ यह पिल्ला किसका है और इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार करो। इस कुत्ते को बिना देर किए ख़त्म कर दिया जाए। शायद यह पागल हो.... मैं पूछ रहा हूँ आखिर यह किसका कुत्ता है?"

खँखारना - गला साफ़ करना

त्योरियाँ - भौंहें चढ़ाना

निबटना - समाधान

इल्म - जानकारी / ज्ञान

नतीज़ा – परिणाम

ख्यूक्रिन की बात सुन कर ओचुमेलॉव अपना गला साफ करता है और अपनी भौंहों को चढ़ाते हुए कहता है कि ये सब तो ठीक है परन्तु यह तो बताओ कि यह कुत्ता है किसका। ओचुमेलॉव कहता है कि वह इस मामले को छोड़ेगा नहीं। अपने कुत्ते को इस तरह फालतू खुला छोड़ने का

मज़ा तो वह उस कुत्ते के मालिक को जरूर देगा। ओचुमेलॉव कहता है कि जो लोग कानून का पालन नहीं करते हैं उनका समाधान करने का समय आ गया है। वह उस कमअक्ल आदमी को इतना जुर्माना लगाएगा कि उसको पता चल जयेगा कि कुत्तों और जानवरों को इस तरह कही भी फालतू खुला छोड़ देने का क्या परिणाम हो सकता है। वह उस इंसान को सबक सिखा कर रहेगा। ये बातें कहता हुआ ओचुमेलॉव सिपाही की ओर मुड़ता है और सिपाही से कहता है कि येल्दीरीन! पता लगाओ यह पिल्ला किसका है और इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार करो। बिना देरी किए इस कुत्ते को मार दो। क्या पता यह कुत्ता पागल हो। ओचुमेलॉव एक बार फिर से पूछता है कि कुत्ता आखिर है किसका?" "तुम सही कहते हो। जनरल साहब के सभी कुत्ते मँहगे और अच्छी नस्ल के हैं, और यह- ज़रा इस पर नजर तो दैड़ाओ। कितना भद्दा और मरियल-सा पिल्ला है। कोई सभ्य आदमी ऐसा कुत्ता काहे को पालेगा? तुम लोगों का दिमाग ख़राब तो नहीं हो गया है। यदि इस तरह का कुत्ता मॉस्को या पीटर्सवर्ग में दिख जाता, तो मालूम हो उसका क्या हश्र होता? तब कानून की परवाह किए बगैर इसकी छुट्टी कर दी जाती। तुझे इसने काट खाया है, तो प्यारे एक बात गाँठ बाँध ले, इसे ऐसे मत छोड़ देना। इसे हर हालत में मज़ा चखवाया जाना जरुरी है। ऐसे वक्त में...."

"शायद यह जनरल साहब का ही कुत्ता है।" गंभीरता से सोचते हुए सिपाही ने कहा- "इसे देख लेने भर से तो नहीं कहा जा सकता कि यह उनका नहीं है। कल ही मैंने बिलकुल इसी तरह का एक कुत्ता उनके आँगन में देखा था।"

"हाँयह ज !नरल साहब का ही तो है," भीड़ में से एक आवाज उभर कर आई।

भद्दा गन्दा / बदसूरत -

मरियल कमज़ोर -

सभ्य भला आदमी / शिष्ट -

हश्र हाल -

गाँठ बाँध लेना स्मरण या याद रखना -

जब सिपाही कहता है कि उसे एकदम पक्का विश्वास है कि वो कुत्ता जनरल साहब का नहीं है, तब ओचुमेलॉव फिर से ख्यूक्रिन की ओर हो जाता है और कहता है कि सिपाही सही कह रहा है। जनरल साहब के सभी कुत्ते मँहगे और अच्छी नस्ल के हैं, और इस कुत्ते को ध्यान से देखो। ये कितना बदसूरत और कमजोर है। कोई भी भला और समृद्ध आदमी ऐसा कुत्ता क्यों पालेगा? सभी का दिमाग ख़राब हो गया है जो इस कुत्ते को जरनल साहब का कुत्ता कह रहे हैं। अगर

इस तरह का कुत्ता मॉस्को या पीटर्सवर्ग में दिख जाता, तो वहाँ पर किसी भी कानून की कोई परवाह किये बिना इसे मार दिया जाता। ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन से कहता है कि इस कुत्ते ने उसे काटा है तो एक बात को याद रखना है कि इस कुत्ते को किसी भी हालत में छोड़ना नहीं है। इसे हर हालात में मज़ा चखाना ही है। अभी ओचुमेलॉव की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि सिपाही फिर से सोचते हुए बोला कि शायद यह जनरल साहब का ही कुत्ता है। इस कुत्ते को सिर्फ देख कर कुछ नहीं कहा जा सकता कि यह उनका कुत्ता है की नहीं। कल ही उसने बिलकुल इसी तरह का एक कुत्ता उनके आँगन में देखा था। सिपाही की बात को सही ठहराते हुए भीड़ में से कोई बोला कि हाँ, यह कुत्ता जनरल साहब का ही तो है।

"हूँ! येल्दीरीन, मेरा कोट पहन लेने में ज़रा मेरी मदद करो। मुझे इस हवा से ठण्ड लगने लगी है। इस कुत्ते को जरनल साहब के पास ले जाओ और पता लगाओ कि क्या यह उन्ही का तो नहीं है? उनसे कहना कि यह मुझे मिला और मैंने इसे वापिस उनके पास भेजा है। और उनसे यह भी विनती करना कि वे इसे गली में चले आने से रोकें। लगता है कि यह काफ़ी मँहगा प्राणी है, और यदि हाँ, हर गुंडा-बदमाश इसके नाक में जलती सिगरेट घुसेड़ने लगे, तो यह तबाह ही हो जाएगा। तुम्हें मालूम है कुत्ता कितना नाज़ुक प्राणी है। और तू अपना हाथ नीचे कर बे! गधा कहीं का। अपनी इस भद्दी ऊँगली को दिखाना बंद कर। यह सब तेरी अपनी गलती है...."

विनती - प्रार्थना

तबाह - बर्बाद

नाज़ुक – कोमल

जब सिपाही ने फिर सोच कर बोला कि शायद यह जनरल साहब का ही कुत्ता है, तो ओचुमेलॉव फिर से हड़बड़ा गया और फिर से उल्टी-सीधी बातें करने लगा जैसे- अपने सिपाही से कोट पहनाने में मदद करने को कहने लगा क्योंकि अब उसे हवा के कारण ठण्ड लग रही थी। वह बहुत बार अपनी राय को बदल चुका था इसलिए अब उसने कहा की उस कुत्ते को जरनल साहब के पास ले जाया जाए और अब उन्हीं से पूछा जाए की क्या वह कुत्ता उनका है या नहीं? यदि उनका हो तो उनसे कहना कि यह ओचुमेलॉव को मिला है और उसने इसे वापिस उनके पास भेजा है। और उनसे यह भी प्रार्थना करना कि वे इसे गली में आने से रोकें क्योंकि देखने से ही लग रहा है कि यह बहुत मँहगा है और अगर यह इसी तरह गलियों में घूमेगा तो गुंडे-बदमाश इसके नाक में जलती सिगरेट घुसेड़ने लगेंगे और इसकी खूबसूरती बरबाद हो जाएगी। ओचुमेलॉव वहाँ मैजूद लोगो को कहता है कि क्या उनको पता भी है कि कुत्ता कितना कोमल

प्राणी होता है। फिर ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन से कहता है कि वह अपना हाथ निचे कर दें और अपनी गन्दी ऊँगली को दिखाना बंद कर दे। ये सब जो उसके साथ हुआ है वह उसी की गलती की वजह से हुआ है।"उधर देखो, जनरल साहब का बावर्ची आ रहा है। ज़रा उससे पता लगाते हैं.... ओ प्रोखोर! इधर आना भाई। इस कुत्ते को तो पहचानो..... क्या यह तुम्हारे यहाँ का है?" "एक बार फिर से तो कहो! इस तरह का पिल्ला तो हमने कई ज़िन्दगियों में नहीं देखा होगा।"

"अब अधिक जाँचने की जरुरत नहीं है," ओचुमेलॉव ने कहा- "यह आवारा कुत्ता है। इसके बारे में इधर खड़े होकर चर्चा करने की जरुरत नहीं है। मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूँ कि यह आवारा है, तो है। इसे मार डालो और सारा किस्सा ख़त्म!"

"यह हमारा नहीं है," प्रोखोर ने आगे कहा- "यह तो जनरल साहब के भाई का है, जो थोड़ी देर पहले इधर पधारे हैं। अपने जनरल साहब को 'बारजोयस' नस्ल के कुत्तों में कोई दिलचस्पी नहीं है पर उनके भाई को यही नस्ल पसंद है।"

बावर्ची - खाना बनाने वाला

आवारा - फालतू

किस्सा - कहानी / घटना

दिलचस्पी - शौक

नस्ल - जाति / वंश

जब उस कुत्ते के बारे में कोई ठीक से नहीं बता पा रहा था तब ओचुमेलॉव को जनरल साहब के घर में खाना बनाने वाला दिखाई देता है, वह उसको बुलाता है और उससे पता करने की कोशिश करता है। ओचुमेलॉव उससे पूछता है कि ज़रा वह उस कुत्ते को पहचान कर बताये क्या वह जनरल साहब का है? इस पर बावर्ची मना करते हुए कहता है कि उसने अपनी पूरी ज़िन्दगी में इस तरह के कुत्ते को जरनल साहब के घर में नहीं देखा है।

यह सब सुनकर ओचुमेलॉव कहता है की अब और ज्यादा जानने की जरुरत नहीं है। वह कुत्ता फालतू है, उसके बारे में यहाँ भीड़ लगाकर बात करने की जरुरत नहीं है और उसने तो पहले ही बताया था कि वह कुत्ता फालतू है। अब इस कुत्ते को मार कर सारी घटना को ही ख़त्म कर देना चाहिए। इस पर बावर्ची प्रोखोर कहता है कि यह कुत्ता जनरल साहब का नहीं है, परन्तु यह उनके भाई का कुत्ता है। जो थोड़ी देर पहले जनरल साहब के पास आये हैं। जनरल साहब को 'बारजोयस' प्रजाति के कुत्तों का कोई शौक नहीं है, परन्तु उनके भाई को तो यही प्रजाति पसंद है।

"क्या? क्या जनरल साहब के भाई साहब पधार चुके हैं? वाल्दीमीर इवानिच?" आह्लाद से सन आए अपने चेहरे को समेटते हुए, ओचुमेलॉव ने हैरानी के भाव प्रदर्शन के साथ कहा- "कितना अद्भुत संयोग रहा। और मुझे मालूम तक नहीं। अभी कुछ दिन रुकेंगे?"

"हाँ! यह सही है।"

"तनिक सोचो! वे अपने भाई साहब से मिलने पधारे हैं और मैं इतना भी नहीं जानता। तो यह उनका

कुत्ता है। बहुत ख़ुशी हुई.... इसे ले जाइए.... यह तो एक अति सुंदर 'डॉगी' है। यह इसकी ऊँगली पर झपट पड़ा था? हा-हा-हा! बस-बस! अब काँपना बंद कर भाई! गर्र-गर्र..... नन्हा-सा शैतान गुस्से में है..... बहुत खूबसूरत पिल्ला है।"

यह सब सुनकर ओचुमेलॉव कहता है की अब और ज्यादा जानने की जरुरत नहीं है। वह कुत्ता फालतू है, उसके बारे में यहाँ भीड़ लगाकर बात करने की जरुरत नहीं है और उसने तो पहले ही बताया था कि वह कुत्ता फालतू है। अब इस कुत्ते को मार कर सारी घटना को ही ख़त्म कर देना चाहिए। इस पर बावर्ची प्रोखोर कहता है कि यह कुत्ता जनरल साहब का नहीं है, परन्तु यह उनके भाई का कुत्ता है। जो थोड़ी देर पहले जनरल साहब के पास आये हैं। जनरल साहब को 'बारजोयस' प्रजाति के कुत्तों का कोई शौक नहीं है, परन्तु उनके भाई को तो यही प्रजाति पसंद है।

"क्या? क्या जनरल साहब के भाई साहब पधार चुके हैं? वाल्दीमीर इवानिच?" आह्लाद से सन आए अपने चेहरे को समेटते हुए, ओचुमेलॉव ने हैरानी के भाव प्रदर्शन के साथ कहा- "कितना अद्भुत संयोग रहा। और मुझे मालूम तक नहीं। अभी कुछ दिन रुकेंगे?"

"हाँ! यह सही है।"

"तनिक सोचो! वे अपने भाई साहब से मिलने पधारे हैं और मैं इतना भी नहीं जानता। तो यह उनका कुत्ता है। बहुत ख़ुशी हुई.... इसे ले जाइए.... यह तो एक अति सुंदर 'डॉगी' है। यह इसकी ऊँगली पर झपट पड़ा था? हा-हा-हा! बस-बस! अब काँपना बंद कर भाई! गर्र-गर्र..... नन्हा-सा शैतान गुस्से में है..... बहुत खूबसूरत पिल्ला है।"

आह्लाद - प्रसन्नता

प्रदर्शन - दिखाना

तनिक - थोड़ा

धमकाया - डराना / भय दिखाना

जब ओचुमेलॉव को पता चला की जनरल का भाई आया है तो वह ख़ुशी से जरनल के बावर्ची से पूछने लगा कि क्या सच में जनरल साहब के भाई साहब वाल्दीमीर इवानिच आये हुए है? फिर अपने चेहरे पर आई ख़ुशी को छुपाते हुए और अपने चेहरे पर बनावटी हैरानी की भावनाओं के साथ कहता है कि कितनी आश्चर्य की बात है और उसे कुछ पता भी नहीं। फिर पूछता है की अभी तो वे कुछ दिन जरनल साहब के पास ही रुकेंगे न? बावर्ची हामी भरते हुए कहता है कि ओचुमेलॉव सही कह रहा है। ओचुमेलॉव बावर्ची से कहता है कि थोड़ा सोच कर देखो कि जनरल साहब के भाई साहब जनरल साहब से मिलने आए हैं और वह इतना भी नहीं जनता। और ये कुत्ता उनका है। ओचुमेलॉव कहता है कि जान कर बहुत ख़ुशी हुई, ले जाइए इसे, ये तो बहुत ही सूंदर कुत्ता है। ओचुमेलॉव हँसता हुआ ख्यूक्रिन को देखता है और कहता है की वह कुत्ता ख्यूक्रिन की ऊँगली पर झपट पड़ा था। फिर ओचुमेलॉव कुत्ते को प्यार करते हुए कहता है कि वह काँपना बंद कर दे। कुत्ता गर्र-गर्र की आवाज करके गुस्सा दिखाता है और ओचुमेलॉव फिर प्यार दिखता हुआ कहता है कि वह तो नन्हा शैतान है जो गुस्से में है और वह एक बहुत ही सुंदर पिल्ला है। प्रोखोर कुत्ते को सँभालकर काठगोदाम से बाहर चला जाता है और

भीड़ ख्यूक्रिन की हालत पर हँसने लगती है। ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन को डराते हुए कहता है की वह उससे बाद में निपटेगा और अपने लम्बे चोगे को शरीर पर डालता हुआ, बाजार के उस चैराहे को पार करता हुआ अपने रास्ते पर निकल जाता है।

Q1- गिरगिट कहानी के लेखक कौन हैं ?

A) अंतोन चेखव

B) प्रह्लाद

C) कोई नहीं

D) फ़ाज़ली

Q2- लेखक का जन्म कब हुआ ?

A) १८६० में

B) १९६० में

C) १७६० में

D) १८६४ में

Q3- लेखक का जन्म कहाँ हुआ ?

A) रूस के तगनोर नगर में

B) रूस में

C) बर्लिन में

D) ताशकंद में

Q4- लेखक ने किन लोगो पर व्यंग किये ?

A) तत्कालीन अवसरवादी लोगों पर

B) पुलिस पर

C) सरकार पर

D) किसी पर नहीं

Q5- अवसरवादी लोगों पर व्यंग्य करते हुए किस बात का परिचय दिया ?

A) साहस का

B) शक्ति का

C) बुद्धि का

D) बेईमानी का

Q6- कौन रूस के लिए कठिन था ?

A) १८९० से १९०० तक का

B) १८५० से

C) १८६० से १८९० तक

D) कोई नहीं

Q7- गिरगिट कहानी मूल रूप से कौन सी भाषा में लिखी गयी थी ?

A) अंग्रेजी

B) हिंदी

C) रूसी

D) फ़ारसी

Q8- गिरगिट कहानी कब लिखी गई ?

A) १८८४ में

B) १७८४ में

C) १६८४ में

D) कोई नहीं

Q9- पुलिस इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव ने क्या पहना हुआ था ?

A) कमीज़

B) ओवरकोट

C) नया ओवर कोट

D) कोई नहीं

Q10- सिपाही के हाथों में क्या था ?

A) टोकरी

B) बेर की टोकरी

C) झरबेरियों की टोकरी

D) कोई नहीं

गिरगिट प्रश्न - उत्तर -

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए -

प्रश्न 1 - ख्यूक्रिन ने मुआवज़ा पाने की क्या दलील दी?

उत्तर - ख्यूक्रिन ने कहा की वह तो रोजमर्रा का काम करने वाला एक छोटा आदमी है और उसका काम भी बहुत ज्यादा कठिन है। उसे लग रहा है कि उसकी ऊँगली एक हफ्ते से पहले काम करने योग्य नहीं हो पाएगी। इसलिए वह ओचुमेलॉव से प्रार्थना करता है कि उसे उस कुत्ते के मालिक से हानि होने पर उसके बदले में दिया जाने वाला धन दिलवाया जाए।

प्रश्न 2 - ख्यूक्रिन ने ओचुमेलॉव को ऊँगली ऊपर उठाने का क्या कारण बताया?

उत्तर - ख्यूक्रिन ने ओचुमेलॉव को ऊँगली ऊपर उठाने का कारण बताया कि उसे लकड़ी लेकर अपना कुछ काम ख़त्म करना था। इतने में अचानक उस कमअक्ल कुत्ते ने बिना किसी कारण के ही उसकी ऊँगली को काट लिया।

प्रश्न 3 - येल्दीरीन ने ख्यूक्रिन को दोषी ठहराते हुए क्या कहा?

उत्तर - येल्दीरीन ने ख्यूक्रिन को दोषी ठहराते हुए कहा कि ख्यूक्रिन हमेशा कोई न कोई शरारत करता रहता है। इसी ने अपनी जलती सिगरेट से इस कुत्ते की नाक को जलाया होगा, वरना ये कुत्ता बेवकूफ़ थोड़ी न है जो इसको इस तरह से काट लेता।

प्रश्न 4 - ओचुमेलॉव ने जनरल साहब के पास यह सन्देश क्यों भिजवाया होगा कि 'उनसे कहना कि यह मुझे मिला और मैंने इसे वापिस उनके पास भेजा है'?

उत्तर - ओचुमेलॉव एक चापलूस किस्म का सिपाही था। जनरल साहब के पास यह सन्देश कि उनका कुत्ता उसे मिला और उसी ने उनके पास उसको भेजा है इसलिए भिजवाया ताकि जरनल साहब की नजरों में वह खुद को बेहतरीन साबित कर सकें।

प्रश्न 5 - भीड़ ख्यूक्रिन पर क्यों हँसने लगती है?

उत्तर - भीड़ ख्यूक्रिन पर इसलिए हँसने लगती है क्योंकि ख्यूक्रिन मुआवज़े की बात कर रहा था और अंत में उसे कुछ भी नहीं मिला और ओचुमेलॉव के पल-पल बदलते व्यवहार से लग रहा था जैसे वह ख्यूक्रिन का मज़ाक बना रहा था।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए -

प्रश्न 1 - किसी कील-वील से ऊँगली छील ली होगी- ऐसा ओचुमेलॉव ने क्यों कहा?

उत्तर - जब ओचुमेलॉव सब लोगों से पूछ रहा था कि कुत्ता किसका है तो भीड़ में से किसी ने जवाब दिया कि लगता है ये कुत्ता जनरल झिगालॉव का है। ये सुन कर ओचुमेलॉव हड़बड़ा गया क्योंकि उसने कुत्ते को मरवाने के लिए कह दिया था। वह ख्यूक्रिन की तरफ़ मुड़ा और ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन को ही कोसते हुए कहने लगा कि जरूर उसकी ऊँगली में कील इत्यादि लग गई होगी और उसने अचानक ही सोच लिया होगा कि चोट का पूरा इल्जाम कुत्ते पर डाला जाए ताकि उस कुत्ते के मालिक पर दबाव डालकर पैसे वसूल कर सके।

प्रश्न 2 - ओचुमेलॉव के चरित्र की विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर - ओचुमेलॉव एक भ्रष्ट, चालाक, स्वार्थी, मौकापरस्त और दोहरे व्यक्तित्व वाला व्यक्ति है। दुकानदारों से जरदस्ती चीज़े ऐंठता है। वह एक इंस्पेक्टर होते हुए भी कर्तव्यनिष्ठ नहीं है। वह अपने फायदे के लिए किसी के भी साथ अन्याय कर सकता है। अपने आप को जनरल साहब की नजरों में अच्छा साबित करने के लिए वह ख्यूक्रिन को ही दोषी साबित करके कुत्ते को ये कहकर जनरल साहब के घर भिजवाता है कि वह उसी को मिला था। ओचुमेलॉव एक अवसरवादी व्यक्ति है, जहाँ उसे अपना लाभ दिखता है वह वहीं पहुँचता है।

प्रश्न 3 - यह जानने के बाद की कुत्ता जनरल साहब के भाई का है- ओचुमेलॉव के विचारों में क्या परिवर्तन आया और क्यों?
उत्तर - ओचुमेलॉव पहले तो कुत्ते को मरियल, भद्दा, आवारा कहता है और कहता है कि हो सकता है कि कुत्ता पागल हो इसलिए उसे मर देना चाहिए। लेकिन जैसे ही ओचुमेलॉव को पता चलता है कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है, ओचुमेलॉव के विचारों में परिवर्तन आ जाता है। फिर उसे वही मरियल, भद्दा, आवारा कुत्ता सुंदर और मँहगा 'डॉगी' लगने लगता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वह जनता है कि ये बाते जनरल साहब तक पहुंचेगी।

प्रश्न 4 - ख्यूक्रिन का यह कथन कि 'मेरा एक भाई भी पुलिस में है....।' समाज की किस वास्तविकता की ओर संकेत करता है?
उत्तर - ख्यूक्रिन का यह कथन कि 'मेरा एक भाई भी पुलिस में है....।' समाज में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' लोकोक्ति की और संकेत करती है। अर्थ यह हुआ कि यदि आपका कोई परिचित उच्च पद पर कार्यरत है तो आप हर जगह अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से रख सकते हैं। आप किसी पर भी रौब दिखा सकते है। कहानी में ख्यूक्रिन भी वही करने का प्रयास कर रहा था।
प्रश्न 5 - इस कहानी का शीर्षक 'गिरगिट' क्यों रखा होगा? क्या आप इस कहानी के लिए कोई अन्य शीर्षक सुझा सकते हैं? अपने शीर्षक का आधार भी स्पष्ट कीजिए।
उत्तर - इस कहानी का शीर्षक 'गिरगिट' इस लिए रखा गया होगा क्योंकि गिरगिट समय के साथ-साथ अपने आप को बचने के लिए अपना रंग बदलता रहता है। उसी तरह इंस्पेक्टर भी मैका देख कर अपने विचारों और बातों से ही बदल जाता है। कुत्ते के लिए ही उसके विचार परिस्थितियों के अनुसार बदल जाते हैं।
हमारे हिसाब से इस पाठ का एक शीर्षक चापलूसी भी रखा जा सकता है क्योंकि ओचुमेलॉव पूरी कहानी में कही पर भी चापलूसी का कोई एक मौका नहीं छोड़ता है।

<p>प्रश्न 6 - गिरगिट कहानी के माध्यम से समाज की किन विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है? क्या आप ऐसी विसंगतियाँ अपने समाज में भी देखते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - गिरगिट कहानी के माध्यम से समाज की अनेक विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है जैसे भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चापलूसी, भाई भतीजावाद और अवसरवादिता आदि।

कानून के रहते हुए भी लोगो को चापलूसों के कारण अन्याय का सामना करना पड़ता है क्योंकि चापलूस हमेशा ऊँचे पदों पर बैठे लोगों की ही तरफदारी करते हैं। पूरी शासन व्यवस्था भेदभाव पर ही टिकी हुई है। जो व्यक्ति आदर्शों पर चलता है उस व्यक्ति को आज के समाज में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

ऐसी विसंगतियाँ हम अपने समाज में भी देखते हैं। आजकल हर जगह, समाचार पत्र, न्यूज़ चैनल पर भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चापलूसी और अवसरवादिता से परेशान हुए लोगों की खबरें भरी पड़ी होती हैं। आजकल लोग अवसरवादिता को ज्यादा और सच्चाई को कम महत्त्व देते हैं।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए –

(1) उसकी आँसुओं से सनी आँखों में संकट और आंतक की गहरी छाप थी।

उत्तर - ख्यूक्रिन ने कुत्ते को बुरी तरह से घसीटा था, जिससे उसे बहुत ज्यादा तकलीफ हो रही थी। उसकी आँखे आँसुओं से भरी हुई थी और उनमें खतरे और डर का मिश्रण दिखाई दे रहा था। क्योंकि ख्यूक्रिन का चेहरा गुस्से से ऐसे लाल हो गया था जैसे नशे में डूबे व्यक्ति का होता है और उसके चेहरे को देख कर साफ लग रहा था कि जैसे वह कुत्ते से कह रहा हो कि शैतान की औलाद वह उसे छोड़ने वाला नहीं है।

(2) कानून सम्मत तो यही है..... कि सब लोग अब बराबर हैं।

उत्तर - येल्दीरीन के ये कहने पर कि ख्यूक्रिन ने अपनी जलती सिगरेट से इस कुत्ते की नाक को जलाया होगा, तभी कुत्ते ने उसे काटा है, ख्यूक्रिन गुस्से में आ जाता है और येल्दीरीन को कहता है कि जब उसने उसे ऐसा कुछ करते हुए देखा ही नहीं है तो वह झूठ बोल रहा है। और ओचुमेलॉव को बुद्धिमान बताते हुए कहता है कि साहब तो बहुत बुद्धिमान हैं और उनको अच्छी तरह से पता है कि कौन सच बोल रहा है और कौन झूठ। और अगर उनको लगता है कि वह झूठ बोल रहा है तो उस पर अदालत में मुकदमा चला दो। कानून का तो यही मानना है कि अब सभी बराबर हैं।

(3) हुजूर! यह तो जनशांति भंग हो जाने जैसा कुछ दीख रहा है।

उत्तर - जब ओचुमेलॉव चौराहे से गुजर रहा था तो अचानक ओचुमेलॉव के कानों में कुछ शोर सुनाई दिया। शोर को सुन कर दुकानों में से कुछ चेहरे भी बाहर देखने लगे थे और देखते-ही-देखते थोड़ी देर में ही न जाने कहाँ से लकड़ी के गोदाम के इर्द-गिर्द भीड़ खड़ी हो गई, ऐसा लग रहा था मानो वो भीड़ जमीन फाड़ कर आई हो। शोर और भीड़ को देख कर सिपाही ओचुमेलॉव से कहता है कि साहब, यह तो ऐसा दिखाई पड़ रहा है जैसे लोगो की शांति को भंग किया जा रहा है।

गद्य भाग

पाठ-6-अब कहाँ दूसरों के दुःख से दुखी होनेवाले

(निदा फ़ाजली)

पाठ प्रवेशः-

प्रकृति ने यह धरती उन सभी जीवधारियों के लिए दान में दी थी जिन्हें खुद प्रकृति ने ही जन्म दिया था। लेकिन समय के साथ-साथ हुआ यह कि आदमी नाम के प्रकृति के सबसे अनोखे चमत्कार ने धीरे-धीरे पूरी धरती को अपनी जायदाद बना दिया और अन्य दूसरे सभी जीवधारियों को इधर -उधर भटकने के लिए छोड़ दिया।इसका अन्जाम यह हूआ कि दूसरे जीवधारियों की या तो नस्ल ही ख़त्म हो गई या उन्हें अपने ठिकानों से कहीं दूसरी जगह जाना पड़ा जहाँ आदमी ना पहुँचा हो। कुछ जीवधारी तो आज भी अपने लिए ठिकानों की तलाश कर रहे हैं।

अगर इतना ही हुआ होता तो भी संतोष किया जा सकता था लेकिन आदमी नाम का यह जीव सब कुछ समेटना चाहता था और उसकी यह भूख इतना सब कुछ करने के बाद भी शांत नहीं हुई। अब वह इतना स्वार्थी हो गया है कि दूसरे प्राणियों को तो पहले ही बेदखल कर चुका था परन्तु अब वह अपनी ही जाति अर्थात मनुष्यों को ही बेदखल करने में जरा भी नहीं हिचकिचाता। परिस्थिति यह हो गई है कि न तो उसे किसी के सुख-दुःख की चिंता है और न ही किसी को सहारा या किसी की सहायता करने का इरादा। यदि आपको भरोसा नहीं है तो इस पाठ को पढ लीजिए और पाठ को पढ़ते हुए अपने आस पास के लोगों को याद भी कीजिए और ऐसा जरूर होगा कि आपको कोई न कोई ऐसे व्यक्ति याद आयेंगे जिन्होंने किसी न किसी के साथ ऐसा बर्ताव किया होगा|

सारः-

इस पाठ में वर्णन किया गया है कि किस तरह आदमी नाम का जीव सब कुछ समेटना चाहता है और उसकी यह भूख कभी भी शांत होने वाली नहीं है। वह इतना स्वार्थी हो गया है कि दूसरे प्राणियों को तो पहले ही बेदखल कर चुका था परन्तु अब वह अपनी ही जाति अर्थात मनुष्यों को ही बेदखल करने में जरा भी नहीं हिचकिचाता। परिस्थिति यह हो गई है कि न तो उसे किसी के सुख-दुःख की चिंता है और न ही किसी को सहारा या किसी की सहायता करने का इरादा।

लेखक कहता है कि बचपन में उनकी माँ हमेशा कहती थी कि शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं। पूजा के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि उस समय फूलों को तोड़ने पर फूल श्राप देते हैं। नदी पर जाओ तो उसे नमस्कार करनी चाहिए वह खुश हो जाती है। कभी भी कबूतरों और मुर्गों को परेशान नहीं करना चाहिए।

ग्वालियर में लेखक का एक मकान था, उस मकान के बरामदे में दो रोशनदान थे। उन रोशनदानों में कबूतर के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था। बिल्ली ने जब कबूतर के एक अंडे को तोड़ दिया तो लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा। अब लेखक समय के साथ मनुष्यों की बदलती भावनाओं के लिए एक उदाहरण देते हैं - दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर आपने घोंसला बना रखा था। उनके बच्चे अभी छोटे थे। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। लेकिन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर किसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा दी थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खिड़की को भी बंद किया जाने लगा था। अब दोनों कबूतर खिड़की के बाहर रात-भर चुप-चाप और दुखी बैठे रहते थे। मगर अब न तो सोलोमेन है जो उन कबूतरों की भाषा को समझ कर उनका दुःख दूर करे और न ही लेखक की माँ है जो उन कबूतरों के दुःख को देख कर रत भर प्रार्थना करती रहे। अर्थ यह हुआ कि समय के साथ-साथ व्यक्तियों की भावनाओं में बहुत अंतर आ गया है

अंत में लेखक हमें बताना चाहता है कि हमें नदी और सूरज की तरह दुसरो के हित के कार्य करने चाहिए और तोते की तरह सभी को सामान समझना चाहिए तभी संसार के सभी जीवधारी प्रसन्न और सुखी रह सकते हैं।

व्याख्या:-

बाइबिल के सोलोमेन जिन्हें कुरआन में सुलेमान कहा गया है, ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह थे। कहा गया है, वह केवल मानव जाति के ही राजा नहीं थे, सारे छोटे-बड़े पशु-पक्षी के भी हाकिम थे। वह इन सबकी भाषा भी जानते थे। एक दफा सुलेमान अपने लश्कर के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियों ने घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनी तो डर कर एक दूसरे से कहा,'आप जल्दी से अपने-अपने बिलों में चलो, फ़ौज आ रही है। 'सुलेमान उनकी बातें सुनकर थोड़ी दूर पर रुक गए और चींटियों से बोले, घबराओ नहीं, सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है। मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ, सबके लिए मुहब्बत हूँ। चींटियों ने उसके लिए ईश्वर से दुआ की और सुलेमान अपनी मंज़िल की ओर बढ़ गए।
ईसाईयों के पवित्र ग्रन्थ बाइबिल में जिसे सोलोमेन कहा जाता है, उन्हीं को इस्लाम के पवित्र ग्रन्थ कुरआन में सुलेमान कहा गया है। सुलेमान ईसा से 1025 वर्ष पहले एक बादशाह थे। उनके बारे में कहा जाता है कि वे केवल मानव जाति के ही राजा नहीं थे, बल्कि जितने भी छोटे-बड़े पशु-पक्षी थे वे सभी के राजा या मालिक कहे जाते थे। वह सभी पशु-पक्षियों की भाषा भी जानते थे। एक बार सुलेमान अपनी सेना के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे।
ऐसी एक घटना का जिक्र सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी आत्मकथा में किया है। उन्होंने लिखा है - 'एक दिन उनके पिता नहाकर लौटे। माँ ने भोजन परोसा। उन्होंने जैसे ही रोटी का कौर तोड़ा। उनकी नज़र अपनी बाजू पर पड़ी। वहाँ एक काला च्योंटा रेंग रहा था। वह भोजन छोड़ कर उठ खड़े हुए। 'माँ ने पूछा,'क्या बात है? भोजन अच्छा नहीं लगा?' शेख अयाज़ के पिता बोले,'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।'

(यहाँ लेखक ने शेख अयाज़ के पिता की अच्छाई का वर्णन किया है)

सुलेमान की नेक दिली की तरह एक और उसी तरह की घटना का वर्णन सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी जीवन कथा में किया है। उन्होंने लिखा है कि एक दिन उनके पिता कुँए से नहाकर लौटे। उनकी माँ ने भोजन परोसा। अभी उनके पिता ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़ा ही था कि उनकी नज़र उनके बाजू पर धीरे-धीरे चलते हुए एक कीड़े पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने कीड़े को देखा वे भोजन छोड़ कर खड़े हो गए। उनको खड़ा देख कर शेख अयाज़ा की माँ ने पूछा कि क्या बात है? क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? इस पर शेख अयाज़ के पिता ने जवाब दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है वे उसी को उसके घर यानि कुँए के पास छोड़ने जा रहें हैं।

बाइबिल और दूसरे पावन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का ज़िक्र मिलता है। उनका असली नाम लश्कर था, लेकिन अरब ने उनको नूह के लक़ब से याद किया है। वह इसलिए कि आप सारी उम्र रोते रहे। इसका कारण एक ज़ख्मी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार एक ज़ख़्मी कुत्ता गुजरा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, 'दूर हो जा गन्दे कुत्ते !' इस्लाम में कुत्तों को गन्दा समझा जाता है। कुत्ते ने उसकी दुत्कार सुन कर जवाब दिया......'न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इंसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।'
(यहाँ लेखक ने नूह नाम के ईश्वर के सन्देश वाहक का उदाहरण दिया है)

बाइबिल और जितने भी दूसरे पवित्र ग्रन्थ हैं उनमें नूह नाम के एक ईश्वर के सन्देश वाहक का वर्णन मिलता है। उनका असली नाम नूह नहीं था उनका नाम लश्कर था, लेकिन अरब के लोग उनको इस नाम से याद करते हैं क्योंकि वे सारी उम्र रोते रहे। इसका कारण एक जख्मी कुत्ता था। नूह के सामने से एक दिन एक जख्मी कुत्ता गुजर रहा था, उस कुत्ते को देख कर नूह ने उसे अपमानित करते हुए कहा कि गंदे कुत्ते तू दूर हो जा। ऐसा नूह ने इसलिए कहा क्योकि इस्लाम में कुत्तों को गन्दा समझा जाता है। कुत्ते ने उसकी अपमान जनक बात को सुन कर जवाब दिया कि न तो वह अपनी मर्जी से कुत्ता बना है और न ही नूह अपनी मर्जी से इंसान बना है। जिसने भी हमें बनाया है वो सबका मालिक तो एक ही है।नूह ने जब उसकी बात सुनी और दुखी हो मुद्दत तक रोते रहे। 'महाभारत' में युधिष्ठिर का जो अंत तक साथ निभाता नज़र आता है, वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था। सब साथ छोड़ते गए तो केवल वही उनके एकांत को शांत कर रहा था।
(यहाँ लेखक ने अपने थोड़े शब्दों में अधिक कहने की कला को दर्शाया है)
लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहता है कि उस ईश्वर ने हम सभी प्राणधारियों को एक ही मिट्टी से बनाया है। यदि सभी से प्राण निकल कर वापिस मिट्टी बना दिया जाए तो किसी का कोई निशान नहीं रहेगा जिससे पहचना जा सके कि कौन सी मिट्टी किस प्राणी की है। भाव यह हुआ की लेखक कहना चाहता है व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व पर घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि यह कोई नहीं जानता की उसमें कितनी मनुष्यता है और कितनी पशुता।नूह ने जब कुत्ते की यह बात सुनी कि जिसने भी हमें बनाया है वो सबका मालिक तो एक ही है।तो वह लम्बे समय तक अपनी मूर्खता पर रोते रहे। उन्हें महाभारत का वह दृश्य याद आ गया जहाँ एक कुत्ता (जो यमराज थे) युधिष्ठिर का अंतिम समय तक साथ निभाता नजर आता है जबकि बाकी सभी पाण्डवों और द्रौपदी ने उनका साथ छोड़ दिया था।

निया कैसे वजूद में आई? पहले क्या थी? किस बिन्दु से इसकी यात्रा शुरू हुई? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रन्थ अपनी-अपनी तरह से। संसार की रचना भले

ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारे खड़ी कर दी हैं।

दुनिया कैसे अस्तित्व में आई? पहले यह दुनिया क्या थी? किस बिन्दु से दुनिया के बनने की यात्रा शुरू हुई? इन सभी प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है और सभी जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं वो अपनी-अपनी तरह से देते हैं। इन प्रश्नों के सही उत्तर किसी को पता चले या न चले लेकिन ये बात सही है कि ये धरती किसी एक की नहीं है। जितने भी जीवधारी इस धरती पर रहते हैं जैसे पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर - इन सभी का धरती पर बराबर का अधिकार है। परन्तु ये अलग बात है की अपने आप को बुद्धिमान बताने वाला मनुष्य धरती को अपनी निजि जायदाद समझ कर दूसरों के लिए बड़ी- बड़ी दीवारे खड़ी कर रहा है।

(यहाँ पर लेखक बढ़ती हुई आबादी के कारण होने वाले प्राकृतिक बदलावों का वर्णन किया है लेखक कहता है कि जब पृथ्वी अस्तित्व में आई थी, उस समय पूरा संसार एक परिवार की तरह रहा करता था लेकिन अब इसके टुकड़ें हो गए हैं और सभी एक-दूसरे से दूर हो गए हैं। पहले सभी बड़े-बड़े बरामदों और आंगनों में मिल-जुलकर रहा करते थे परन्तु आज के समय में सभी का

जीवन छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में सिकुड़ने लगा है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे-वैसे समुद्र अपनी जगह से पीछे हटने लगा है, लोगों ने पेड़ों को काट कर रास्ते बनाना शुरू कर दिया है। प्रदुषण इतना अधिक फैल रहा है कि उससे परेशान हो कर पंछी बस्तियों को छोड़ कर भाग रहे हैं। बारूद से होने वाली मुसीबतों ने सभी को परेशान कर रखा है। वातावरण में इतना अधिक बदलाव हो गया है कि गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफ़ान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ न जाने और क्या-क्या ,ये सब मानव द्वारा प्रकृति के साथ किये गए छेड़-छाड़ का नतीजा है। प्रकृति एक सीमा तक ही सहन कर सकती है। प्रकृति को जब गुस्सा आता है तो क्या होता है इसका एक नमूना कुछ साल पहले मुंबई में आई सुनामी के रूप में देख ही चुके हैं। ये नमूना इतना डरावना था कि मुंबई के निवासी डर कर अपने-अपने देवी-देवताओं से उस मुसीबत से बचाने के लिए प्रार्थना करने लगे थे।

कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेल कर उसकी जमीन को हथिया रहे थे। बेचारा समंदर लगातार सिमटता जा रहा था।

पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगे समेटीं, थोड़ा सिमटकर बैठ गया। फिर जगह कम पड़ी तो उकडूं बैठ गया। फिर खड़ा हो गया.... जब खड़े रहने की जगह काम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है। परन्तु आता है तो रोकना

मुश्किल हो जाता है ,और यही हुआ, उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को उठा कर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समंदर के किनारे पर आ कर गिरा। दूसरा बांद्रा के कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह और तीसरा गेट-वे-ऑफ इंडिया पर टूटफूट कर सैलानियों का नजारा बना बावजूद कोशिश, वे फिर से चलने फिरने के काबिल नहीं हो सके।
(यहाँ लेखक ने प्रकृति के भयानक गुस्से का वर्णन किया है)

कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लिए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। बेचारा समुद्र लगातार सिकुड़ता जा रहा था। पहले तो समुद्र ने अपनी फैली हुई टांगों को इकठ्ठा किया और सिकुड़ कर बैठ गया। फिर भी बिल्डर नहीं माने तो समुद्र जगह कम होने के कारण घुटने मोड़ कर बैठ गया। अब भी बिल्डर नहीं माने तो समुद्र खड़ा हो गया..... इतनी जगह देने पर भी जब बिल्डर नहीं माने तो समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता है।

समुद्र के साथ भी वही हूआ - जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हूआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है। एक को वर्ली के समुद्र के किनारे फेंका तो दूसरे को बांद्रा के कार्टर रोड के सामने मुँह के बल गिरा दिया और तीसरे को गेट-वे-ऑफ इंडिया के पास पटक दिया जो अब घूमने आये लोगों का मनोरंजन का साधन बना हूआ है। समुद्र ने तीनों को इस तरह फेंका की कोशिश करने पर भी उन्हें चलने लायक नहीं बनाया जा सका।
मेरी माँ कहती थी, सूरज ढले आँगन के पेड़ों से पत्ते मत तोड़ो, पेड़ रोएँगे। दिया-बत्ती के वक्त फूलों को मत तोड़ो, फूल बद्दुआ देते हैं। दरिया पर जाओ तो उसे सलाम किया करो, वह खुश होता है। कबूतरों को मत सताया करो, वो हज़रत मुहम्मद के अज़ीज़ हैं। उन्होंने उन्हें अपनी मज़ार के नीले गुम्बद पर घोंसले बनाने की इज़ाज़त दे रखी है। मुर्गे को परेशान नहीं किया करो, वह मुल्ला जी से पहले मोहल्ले में अज़ान देकर सबको सवेरे जगाता है -
सब की पूजा एक-सी, अलग-अलग है रीत।

(यहाँ लेखक बचपन में दी गई अपनी माँ की सीख का वर्णन कर रहा है)

लेखक कहता है कि बचपन में उनकी माँ हमेशा कहती थी कि जब भी सूरज ढले अर्थात शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं। दिया-बत्ती के समय अर्थात पूजा के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि उस समय फूलों को तोड़ने पर फूल श्राप देते हैं। नदी पर जाओ तो उसे नमस्कार करनी चाहिए वह खुश हो जाती है। कभी भी कबूतरों को परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि कबूतर हज़रत मुहम्मद को बहुत प्यारे हैं। हज़रत मुहम्मद ने कबूतरों को अपनी दरगाह के गोलकार शिखर पर रहने की इज़ाज़त दी हुई है। मुर्गों को भी कभी परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि वह मुल्ला जी से पहले ही पूरे मोहल्ले को बांग दे कर जगाता है –

सबकी पूजा एक सी अर्थात चाहे हिंदु हो या मुस्लिम या फिर सीख हो या ईसाई । सभी एक ही ईश्वर का गुणगान करते हैं।केवल तरीका अलग होता है।कोई मंदिर,तो कोई मस्जिद,कोई गिरजा तो कोई गुरुद्वारे जाता है। इसलिए कहा जाता है कि रीत अलग है।उसी प्रकार मौलवी मस्जिद में जाकर लोगों को अलल्ह की इबादत सुनाकर प्रसन्न करता है वैसे ही कोयल बागों में,पेड़ों में बैठकर अपने मधुर बोल से सबको प्रसन्न करती है।

ग्वालियर में हमारा एक मकान था, उस मकान के दालान में दो रोशनदान थे। उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अण्डा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुःख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंडा उसी के हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर परेशानी से इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आँखों में दुःख देख कर मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस गुनाह को खुदा से मुआफ़ कराने के लिए उसने पुरे दिन रोज़ा रखा। दिन भर कुछ खाया पिया नहीं। सिर्फ़ रोती रही और बार बार नमाज़ पढ़-पढ़कर खुदा से इस गलती को मुआफ़ करने की दुआ माँगती रही।

(यहाँ लेखक अपने जीवन की एक घटना का वर्णन कर रहा है)

ग्वालियर में लेखक का एक मकान था, उस मकान के बरामदे में दो रोशनदान थे। उन रोशनदानों में कबूतर के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था। एक बार बिल्ली ने उछलकर उस घोंसले के दो अण्डों में से एक अंडे को गिरा दिया जिसके कारण वो अंडा टूट गया। जब लेखक की माँ ने ये सब देखा तो उसे बहुत दुःख हुआ। लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। ये सब देख कर कबूतरों का जोड़ा परेशान हो कर इधर-उधर फड़फड़ाने लगा। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने

पुरे दिन का उपवास रखा। उसने पुरे दिन न तो कुछ खाया और न ही कुछ पिया। वह सिर्फ रो रही थी और बार-बार नमाज़ पढ़-पढ़कर खुदा से अपने द्वारा किये गए पाप को माफ़ करने की प्रार्थना कर रही थी।

ग्वालियर से बंबई की दूरी ने संसार को काफी कुछ बदल दिया है। वर्सोवा में जहाँ आज मेरा घर है, पहले यहाँ दूर तक जंगल था। पेड़ थे, परिंदे थे और दूसरे जानवर थे। अब यहाँ समंदर के किनारे लम्बी-चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिन्दों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़ कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा दाल लिया है। इनमें से दो कबूतरों ने मेरे फ्लैट के एक मचान में घोंसला बना लिया है। बच्चे अभी छोटे हैं। उनके खिलाने-पिलाने की जिम्मेवारी अभी बड़े कबूतरों की है। वे दिन में कई-कई बार आते-जाते हैं। और क्यों न आए-जाए उनका भी घर है। लेकिन उनके आने-जाने से हमें परेशानी भी होती है। वे कभी किसी चीज़ को गिराकर तोड़ देते हैं। कभी मेरी लाइब्रेरी में घुस कर कबीर या मिर्ज़ा ग़ालिब को सताने लगते हैं। लेखक कहता है कि ग्वालियर से बंबई के बीच समय के साथ काफी बदलाव हुए हैं। वर्सोवा में जहाँ लेखक का घर है, वहाँ लेखक के अनुसार किसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल था। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कितने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के किनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कितने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन लिया है। इन पशु-पक्षियों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर अस्थाई घर बना लिए हैं। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता। इन में से ही दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर अपना घोंसला बना रखा है। उनके बच्चे अभी छोटे हैं। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। बड़े कबूतर दिन में बहुत बार उन छोटे कबूतरों को खाना खिलाने आते जाते रहते थे। और आए-जाए क्यों न यहाँ उनका भी तो घर था। लेकिन उनके आने-जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर किसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कभी लेखक की लाइब्रेरी में घुसकर कबीर और मिर्ज़ा ग़ालिब की पुस्तकों को गिरा देते थे।

इस रोज़-रोज़ की परेशानी से तंग आ कर मेरी पत्नी ने उस जगह जहाँ उनका आशियाना था, एक जाली लगा दी है, उनके बच्चों को दूसरी जगह कर दिया है। उनके आने की खिड़की को भी बंद किया जाने लगा है। खिड़की के बाहर अब दोनों कबूतर रात-भर खामोश और उदास बैठे रहते हैं। मगर अब न सोलोमन है जो उनकी जुबान को समझ कर उनका दुःख बाँटे, न मेरी माँ है, जो उनके दुःख में सारी रात नमाजो में काटे –

(यहाँ लेखक समय के साथ आए व्यक्तियों के व्यवहार का वर्णन कर रहा है)

लेखक कहता है कि कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा दी थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खिड़की को भी बंद किया जाने लगा था। अब दोनों कबूतर खिड़की के बाहर रात-भर चुप-चाप और दुखी बैठे रहते थे। मगर अब न तो सोलोमेन है जो उन कबूतरों की भाषा को समझ कर उनका दुःख दूर करे और न ही लेखक की माँ है जो उन कबूतरों के दुःख को देख कर रात भर प्रार्थना करती रहे। अर्थ यह हुआ कि समय के साथ-साथ व्यक्तियों की भावनाओं में बहुत अंतर आ गया है।

नदिया सींचे खेत को, तोता कुतरे आम।
सूरज ठेकेदार-सा, सबको बाँटे काम।।

इन पंक्तियों के द्वारा लेखक कहना चाहता है कि जिस तरह नदियाँ बिना किसी भेदभाव के सभी खेतों को अपना पानी देती है और तोता जिस तरह से किसी भी आम के बगीचे से आम खाने पहुँच जाता है अर्थात उसे कोई फर्क नहीं पड़ता की आम का बगीचा किस जाति के व्यक्ति ने लगाया है। उसी प्रकार सूरज भी बिना किसी भेदभाव के सभी को जागकर काम करने के लिए प्रेरित करता है। उसी तरह हमें भी नदी और सूरज की तरह दुसरो के हित के कार्य करने चाहिए और तोते की तरह सभी को सामान समझना चाहिए तभी संसार के सभी जीवधारी प्रसन्न और सुखी रह सकते हैं।

Q1- इस कहानी के लेखक कौन है ?

A) निदा फ़ाज़ली

B) अंतोन

C) खुशवंत सिंह

D) कोई नहीं

Q2- निदा फाज़ली का जन्म कब हुआ ?

A) १२ अक्टूबर १९३८ में

B) १९३६ में

C) १९७८ में

D) कोई नहीं

Q3- निदा फाज़ली का जन्म कहा हुआ ?

A)लाल किला में

B) दिल्ली में

C) जयपुर में

D) कोई नहीं

Q4- निदा फाज़ली किसके महत्त्वपूर्ण स्तम्भ माने जाते है ?

A) उर्दू की साठोस्तरी कविता के

B) कविता के

C) कहानी के

D) कोई नहीं

Q5- निदा फ़ाजली की प्रमुख रचनाओं के नाम बतायें |

A)लफ़्जों का पुल, खोया हुआ सा

B) दीवारों के बीच, दीवारों के पार

C) तमाशा मेरे आगे

D) सभी

Q6- लेखक के अनुसार किस तरह के लोग अब नहीं हैं ?

A) सूझ बूझ वाले

B) दूसरो के दुःख में दुखी होने वाले

C) अमीर

D) कोई नहीं

Q7- सुलेमान किसके साथ रास्ते से गुज़र रहा था ?

A) अपने घोड़े के साथ

B) अपनी बच्चो के साथ

C) अपने लश्कर के साथ

D) कोई नहीं

Q8- घोड़ों के टापों की आवाज़ किसने सुनी ?

A) घोड़ों ने

B) सुलेमान ने

C) चींटियों ने

D) किसी ने नही

Q9- चींटिया एक दूसरे को कहाँ चलने को कह रहीं थी ?

A) पेड़ पर

B) खेतों में

C) अपने अपने बिलों में

D) नदी में

Q10- चींटियों को सुलेमान ने क्या कह कर धीरज बंधाया ?

A) मैं मुसीबत नहीं मोहब्बत हूँ , रखवाला हूँ

B) मैं तुम्हे कुछ नहीं कहूंगा ,

C) मैं तुम्हारा रखवाला हूँ

D) मैं रखवाला हूँ

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) दीजिए -

1- अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं ?

उ- अरब में लशकर को नूह के नाम से इसलिए याद करते हैं क्योंकि वे हमेशा रोते रहते थे अर्थात दूसरों के दुःख में दुखी रहते थे। नूह को ईश्वर का सन्देश वाहक भी कहा जाता है।

2- लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थी और क्यों ?

उ- लेखक की माँ कहती थी कि जब भी सूरज ढले अर्थात शाम के समय पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि उस समय यदि पत्ते तोड़ोगे तो पेड़ रोते हैं।

3- प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ ?

उ-प्रकृति में आए असंतुलन का बहुत अधिक भयानक परिणाम हुआ, गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफ़ान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ जन्म ले लेती है और मानव का जीवन बहुत अधिक कठिन हो गया है।

4- लेखक की माँ ने पुरे दिन का रोज़ा क्यों रखा ?

उ-बिल्ली ने जब कबूतर के एक अंडे को तोड़ दिया तो लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़ कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। परन्तु इस कोशिश में दूसरा अंडा लेखक की माँ के हाथ से छूट गया और टूट गया। ये सब देख कर कबूतरों का जोड़ा परेशान हो कर इधर-उधर फड़फड़ाने लगा। कबूतरों की आँखों में उनके बच्चों से बिछुड़ने का दुःख देख कर लेखक की माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस पाप को खुदा से माफ़ कराने के लिए लेखक की माँ ने पुरे दिन का उपवास रखा।

5- लेखक ने ग्वालियर से बम्बई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उ-लेखक कहता है कि ग्वालियर से बंबई के बीच समय के साथ काफी बदलाव हुए हैं। वर्सोवा में जहाँ लेखक का घर है, वहाँ लेखक के अनुसार किसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल था। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कितने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के किनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कितने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन लिया है। इन पशु-पक्षियों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर भी अस्थाई घर बना लिए हैं। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता।

3- समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी ? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला ?

उ- कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लिए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। बेचारा समुद्र लगातार सिकुड़ता जा रहा था। पहले तो समुद्र ने अपनी फैली हुई टांगों को इकठ्ठा किया और सिकुड़ कर बैठ गया।

फिर जगह कम होने के कारण घुटने मोड़ कर बैठ गया। अब भी बिल्डर नहीं माने तो समुद्र खड़ा हो गया.... जब समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है। एक को वर्ली के समुद्र के किनारे फेंका तो दूसरे को बांद्रा के कार्टर रोड के सामने मुँह के बल गिरा दिया और तीसरे को गेट-वे-ऑफ इंडिया के पास पटक दिया जो अब घूमने आये लोगों का मनोरंजन का साधन बना हुआ है। समुद्र ने तीनों को इस तरह फेंका की कोशिश करने पर भी उन्हें चलने लायक नहीं बनाया जा सका।

4--मिट्टी से मिट्टी मिले,
खो के सभी निशान।
किसमें कितना कौन है,
कैसे हो पहचान।। इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है ?स्पष्ट कीजिए।

उ-लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहता है कि उस ईश्वर ने हम सभी प्राणधारियों को एक ही मिट्टी से बनाया है। यदि सभी से प्राण निकाल कर वापिस मिट्टी बना दिया जाए तो

किसी का कोई निशान नहीं रहेगा जिससे पहचाना जा सके कि कौन सी मिट्टी किस प्राणी की है। भाव यह हुआ की लेखक कहना चाहता है व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व पर घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि यह कोई नहीं जानता की उसमें कितनी मनुष्यता है और कितनी पशुता।

5-'डेरा ढलने ' से आप क्या समझते हैं?स्पष्ट कीजिए।

उ-'डेरा' अर्थात अस्थाई घर। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन तोड़ कर चला जाये कोई नहीं जनता। बड़ी-बड़ी इम्मारतें बन जाने के कारण कई पक्षी बेघर हो गए और जब उन्हें अपना घोंसला बनाने की जगह नहीं मिली तो उन्होंने इन इमारतों में अपना डेरा डाल लिया।

6- शेख अयाज़ के पिता अपनी बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर क्यों उठ खड़े हुए?

उ-एक दिन शेख अयाज़ के पिता कुँए से नहाकर लौटे। उनकी माँ ने भोजन परोसा। अभी उनके पिता ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़ा ही था कि उनकी नज़र उनके बाजू पर धीरे-धीरे चलते हुए एक काले च्योंटे पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने कीड़े को देखा वे भोजन छोड़ कर खड़े हो गए। उनको खड़ा देख कर शेख अयाज़ा की माँ ने पूछा कि क्या बात है? क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? इस पर शेख अयाज़ के पिता ने जवाब दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है वे उसी को उसके घर यानि कुँए के पास छोड़ने जा रहें हैं।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) दीजिए -

1- बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उ-जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे-वैसे समुद्र अपनी जगह से पीछे हटने लगा है, लोगों ने पेड़ों को काट कर रास्ते बनाना शुरू कर दिया है। प्रदुषण इतना अधिक फैल रहा है कि उससे परेशान हो कर पंछी बस्तियों को छोड़ कर भाग रहे हैं। बारूद से होने वाली मुसीबतों ने सभी को परेशान कर रखा है। वातावरण में इतना अधिक बदलाव हो गया है कि गर्मी में बहुत अधिक गर्मी पड़ती है, बरसात का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है, भूकम्प, सैलाब, तूफ़ान और रोज कोई न कोई नई बीमारियाँ न जाने और क्या-क्या ,ये सब मानव द्वारा किये गए प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ का नतीजा है। इन सभी के कारण मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। मानव के जीवन पर इसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है।

2- लेखक की पत्नी को खिड़की पर जाली क्यों लगानी पड़ी ?

उ-दो कबूतरों ने लेखक के फ्लैट में एक ऊँचे स्थान पर अपना घोंसला बना रखा है। उनके बच्चे अभी छोटे हैं। उनके पालन-पोषण की जिम्मेवारी उन बड़े कबूतरों की थी। बड़े कबूतर दिन में बहुत बार उन छोटे कबूतरों को खाना खिलाने आते जाते रहते थे। लेकिन उनके आने-

जाने के कारण लेखक और लेखक के परिवार को बहुत परेशानी होती थी। कभी कबूतर किसी चीज़ से टकरा जाते थे और चीज़ों को गिराकर तोड़ देते थे। कबूतरों के बार-बार आने-जाने और चीज़ों को तोड़ने से परेशान हो कर लेखक की पत्नी ने जहाँ कबूतरों का घर था वहाँ जाली लगा थी, कबूतरों के बच्चों को भी वहाँ से हटा दिया था। जहाँ से कबूतर आते-जाते थे उस खिड़की को भी बंद किया जाने लगा था।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए -

1-नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई (मुंबई) में देखने को मिला था।

उ- प्रकृति एक सीमा तक ही सहन कर सकती है। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। प्रकृति को भी जब गुस्सा आता है तो क्या होता है इसका एक नमूना कुछ साल पहले मुंबई में आई सुनामी के रूप में देख ही चुके हैं। ये नमूना इतना डरावना था कि मुंबई के निवासी डर कर अपने-अपने देवी-देवताओं से उस मुसीबत से बचाने के लिए प्रार्थना करने लगे थे।

2- जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है।

उ-कई सालों से बड़े-बड़े मकानों को बनाने वाले बिल्डर मकान बनाने के लिए समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी जमीन पर कब्ज़ा कर रहे थे। जब समुद्र के पास खड़े रहने की जगह भी कम पड़ने लगी और समुद्र को गुस्सा आ गया। कहा जाता है कि जो जितना बड़ा होता है उसको गुस्सा उतना ही कम आता है परन्तु जब आता है तो उनके गुस्से को कोई शांत नहीं कर सकता। समुद्र के साथ भी वही हुआ जब समुद्र को गुस्सा आया तो एक रात वह अपनी लहरों के ऊपर दौड़ता हुआ आया और तीन जहाज़ों को ऐसे उठा कर तीन दिशाओं में फेंक दिया जैसे कोई किसी बच्चे की गेंद को उठा कर फेंकता है।

3- इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिन्दों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़ कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा दाल लिया है।

उ-लेखक कहता है कि ग्वालियर से बंबई के बीच किसी समय में दूर तक जंगल ही जंगल थे। पेड़-पौधे थे, पशु-पक्षी थे और भी न जाने कितने जानवर थे। अब तो यहाँ समुद्र के किनारे केवल लम्बे-चौड़े गाँव बस गए हैं। इन गाँव ने न जाने कितने पशु-पक्षियों से उनका घर छीन लिया है। इन पशु-पक्षियों में से कुछ तो शहर को छोड़ कर चले गए हैं और जो नहीं जा सके उन्होंने यहीं कहीं पर भी अस्थाई घर बना लिए हैं। अस्थाई इसलिए क्योंकि कब कौन उनका घर तोड़े कर चला जाये कोई नहीं जनता।

4- शेख अयाज़ के पिता बोले,'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में छिपी हुई उनकी भावना को स्पष्ट कीजिए।

उ-शेख अयाज़ के पिता बोले,'नहीं यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुँए पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में शेख अयाज़ के पिता की छिपी हुई भावना यह थी कि वे पशु-पक्षियों की भावना को समझते थे। वे अपना खाना छोड़ कर केवल एक काले च्योंटे को उसके घर कुँए पर छोड़ने चल पड़े। उनका व्यक्तित्व ऐसा था जो किसी को भी तकलीफ नहीं देना चाहते थे।

पद्य भाग

पाठ--8 –कर चले हम फ़िदा

(कैफ़ी आजम़ी)

प्रवेश :-प्रस्तुत कविता में देश के सैनिकों की भावनाओं का वर्णन है। सैनिक कभी भी देश के मानसम्मान को बचाने से पीछे नहीं हटेगा। फिर चाहे उसे अपनी जान से ही हाथ क्यों ना गवाना पड़े। भारत - चीन युद्ध के दौरान सैनिकों को गोलियाँ लगने के कारण उनकी साँसें रुकने वाली थी ,ठण्ड के कारण उनकी नाड़ियों में खून जम रहा था परन्तु उन्होंने किसी चीज़ की परवाह न करते हुए दुश्मनों का बहदुरी से

मुकाबला किया और दुश्मनों को आगे नहीं बढ़ने दिया। सैनिक गर्व से कहते है कि हमें अपने सर भी कटवाने पड़े तो हम ख़ुशी ख़ुशी कटवा देंगे पर हमारे गौरव के प्रतिक हिमालय को नहीं झुकने देंगे अर्थात हिमालय पर दुश्मनों के कदम नहीं पड़ने देंगे। लेकिन देश के लिए प्राण न्योछावर करने की ख़ुशी कभी कभी किसी किसी को ही मिल पाती है अर्थात सैनिक देश पर मर मिटने का एक भी मौका नई खोना चाहते। जिस तरह से दुल्हन को लाल जोड़े में सजाया जाता है उसी तरह सैनिकों ने भी अपने प्राणों का बलिदान दे कर धरती को खून से लाल कर दिया है सैनिक कहते हैं कि हम तो देश के लिए बलिदान दे रहे हैं परन्तु हमारे बाद भी ये सिलसिला चलते रहना चाहिए। जब भी जरुरत हो तो इसी तरह देश की रक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आना चाहिए। सैनिक अपने देश की धरती को सीता के आँचल की तरह मानते हैं और कहते हैं कि अगर कोई हाथ आँचल को छूने के लिए आगे बड़े तो उसे तोड़ दो। अपने वतन की रक्षा के लिए तुम ही राम हो और तुम ही लक्ष्मण हो अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम पर है।

पाठ व्याख्या-

कर चले हम फ़िदा जानोतन साथियो-
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरतेमरते रहा बाँकपन साथियो-
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो|

प्रसंग -: प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि कैफ़ी आज़मी हैं। इन पंक्तियों में कवि एक वीर सैनिक का अपने देशवासियों को दिए आखरी सन्देश का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि सैनिक अपने आखिरी सन्देश में कह रहें है कि वो अपने प्राणों को देश हित के लिए न्योछावर कर रहें है ,अब यह देश हम जाते जाते आप देशवासियों को सौंप रहें हैं। सैनिक उस दृश्य का वर्णन कर रहें है जब दुश्मनों ने देश पर हमला किया था। सैनिक कहते है कि जब हमारी साँसे हमारा साथ नहीं दे रही थी और हमारी नाड़ियों में खून जमता जा रहा ,फिर भी हमने अपने बढ़ते क़दमों को जारी रखा अर्थात दुश्मनों को पीछे धकेलते गए। सैनिक गर्व से कहते है कि हमें अपने सर भी कटवाने पड़े तो हम ख़ुशी ख़ुशी कटवा देंगे पर हमारे गौरव के प्रतिक हिमालय को नहीं झुकने देंगे अर्थात हिमालय पर दुश्मनों के कदम नहीं

पड़ने देंगे। हम मरते दम तक वीरता के साथ दुश्मनों का मुकाबला करते रहे अब इस देश की रक्षा का भार आप देशवासियों को सौंप रहे हैं।

जिंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोज आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुलहन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि कैफ़ी आज़मी हैं। इन पंक्तियों में कवि सैनिक के बलिदान का भावनात्मक रूप से वर्णन कर रहा।

व्याख्या - सैनिक कहते हैं कि हमारे पूरे जीवन में हमें जिन्दा रहने के कई अवसर मिलते हैं लेकिन देश के लिए प्राण न्योछावर करने की ख़ुशी कभी कभी किसी किसी को ही मिल पाती है अर्थात सैनिक देश पर मर मिटने का एक भी मौका नई खोना चाहते। सैनिक देश के नौजवानों को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि सुंदरता और प्रेम का त्याग करना सीखो क्योंकि वो सुंदरता और प्रेम ही क्या ,जवानी ही क्या जो देश के लिए अपना खून न बहा सके। सैनिक देश की धरती को दुल्हन की तरह मानते है और कहते है कि जिस तरह दुल्हन को स्वयंवर में हासिल करने के लिए राजा किसी भी मुश्किल को पार कर जाते थे उसी तरह तुम भी अपनी इस दुल्हन को दुश्मनों से बचा कर रखना। क्योंकि अब हम देश की रक्षा का दायित्व आप देशवासियों पर छोड़ कर जा रहे हैं।

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फतह का जश्न इस जश्न के बाद है
जिंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से कफन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2' से ली गई हैं। इसके कवि कैफ़ी आज़मी हैं। इन पंक्तियों में सैनिक देशवासियों को देश के लिए बलिदान करने के लिए तैयार रहने को कहते हैं।

व्याख्या - सैनिक कहते हैं कि हम तो देश के लिए बलिदान दे रहे हैं परन्तु हमारे बाद भी ये सिलसिला चलते रहना चाहिए। जब भी जरुरत हो तो इसी तरह देश की रक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आना चाहिए। जीत की ख़ुशी तो देश पर प्राण न्योछावर करने की ख़ुशी के बाद दोगुनी हो जाती है। उस स्थिति में ऐसा लगता है मनो जिंदगी मौत से गले मिल रही हो। अब ये देश आप देशवासियों को सौंप रहे हैं अब आप अपने सर पर मौत की चुनरी बांध लो अर्थात अब आप देश की रक्षा के लिए तैयार हो जाओ।

खींच दो अपने खूँ से जमीं पर लकीर
इस तरफ आने पाए न रावन कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक ' स्पर्श भाग -2 ' से ली गई हैं। इसके कवि कैफ़ी आज़मी हैं। इन पंक्तियों में सैनिक देशवासियों को प्रेरित कर रहे हैं।

व्याख्या - सैनिक कहते हैं कि अपने खून से लक्ष्मण रेखा के समान एक रेखा तुम भी खींच लो और ये तय कर लो कि उस रेखा को पार करके कोई रावण रूपी दुश्मन इस पार ना आ पाय। सैनिक अपने देश की धरती को सीता के आँचल की तरह मानते हैं और कहते हैं कि अगर कोई हाथ आँचल को छूने के लिए आगे बड़े तो उसे तोड़ दो। अपने वतन की रक्षा के लिए तुम ही राम हो और तुम ही लक्ष्मण हो ।अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम पर है।

Q1- कर चले हम फ़िदा गीत के गीतकार कौन हैं ?

A) कैफ़ी आजमी

B) पन्त

C) मोहम्मद रफ़ी

D) कोई नहीं

Q2- कैफ़ी आजमी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

A) 1719 मे आजम नगर मे

B) 1819 मे अभय्पुर मे

C) 1919 मे आजम गढ मे

D) कोई नहीं

Q3- कैफ़ी आजमी का परिवार कैसा परिवार था ?

A) चिकित्सको का

B) अभिनेताओ का

C) नेताओ का

D) कलाकारो का

Q4- कैफ़ी आजमी के कितने कविता संग्रह प्रकाशित हुए ?

A) 4
B) 3
C) 7
D) 5

Q5- कैफ़ी आजमी मूलतः किस भाषा के शायर हैं ?

A) अरबी

B) यूनानी

C) सभी

D) उर्दू

Q6- कैफ़ी आजमी के कविता संग्रहो के नाम बताये |

A) झङ्कार

B) आखिर ए शब

C) आवारा सजदे

D) सभी

Q7- सैनिक देश को किसके हवाले कर के जा रहे हैं ?

A) माता पिता के

B) भाई बहनो के

C) दोस्तो के

D) देश वासिओ के

Q8- साँस थमती गई से क्या भाव है ?

A) मौत का नजदीक होना

B) बर्फ़ के पास होना

C) बहुत थण्ड होना

D) हैरान होते गए

Q9- सैनिकों को किस बात की खुशी हो रही है ?

A) उन्होने अपने देश की शान मे कोई दाग नही लगने दिया

B) कि वे बहादुर हैं

C) उन्होने दुश्मन को हरा दिया

D) किसी बात की नहीं

Q10- जीवन मे कौन सा समय बार बार आता है ?

A) मरने का

B) बलिदान करने का

C) बचपन का

D) जीवित रहने का

(क)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1-क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है ?

उ- यह गीत सन 1962 के भारत -चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चीन ने तिब्बत की ओर से युद्ध किया और भारतीय वीरों ने इसका बहदुरी से सामना किया।

2-'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया ',इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतिक है ?

उ- हिमालय भारत के मानसम्मान का प्रतिक है। देश के वीर जवानों ने अपने प्राणों का बलिदान दे कर भी देश के मान सम्मान की रक्षा की।

3- इस गीत में धरती को दुलहन क्यों कहा गया है?

उ-गीत में धरती को दुल्हन इसलिए कहा गया है, क्योंकि सन् 1962 के युद्ध में भारतीय सैनिकों के बलिदानों से, उनके रक्त से धरती लाल हो गई थी, मानो धरती ने किसी दुलहन की भाँति लाल पोशाक पहन ली हो अर्थात भारतीय सैनिकों के रक्त से पूरी युद्धभूमि लाल हो गई थी।

4- गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि वे जीवन भर याद रह जाते हैं?

उ- जीवन भर याद रह जाने वाले गीतों में हृदय का स्पर्श करने वाली भाषा और संगीत का अद्भुत तालमेल होता है।जो व्यक्ति के अंतर्मन में स्वतः ही प्रवेश कर जाता है। इस तरह गीतों के बोल सरल भाषा व प्रभावोत्पादक शैली में होने चाहिए ताकि वह व्यक्ति की जुबान पर आसानी से चढ़ सके। इन गीतों का विषय जीवन के मर्मस्पर्शी पहलुओं से जुड़ा होना चाहिए। ऐसे गीत हृदय की गहराइयों में समा जाते हैं और इन गीतों के सुर, लहरियाँ संपूर्ण मन मस्तिष्क को सकारात्मकता से ओत-प्रोत कर देती है और गीत जीवनभर याद रह जाते हैं।

5- कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

उ-कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग देशवासियों के लिए किया है, जो देश की एकता को दर्शा रहा है। देशवासियों का संगठन ही देश को प्रगतिशील, विकासशील तथा समृद्धशाली बनाता है। देशवासियों का परस्पर साथ ही देश की 'अनेकता में एकता' जैसी विशिष्टता को मजबूत बनाता है।

6- कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

उ-'काफिले' शब्द का अर्थ है-यात्रियों का समूह। कवि ने इस कविता में देश के लिए न्योछावर होने वाले अर्थात् देश के मान-सम्मान व रक्षा की खातिर अपने सुखों को त्याग कर, मर मिटने वाले बलिदानियों के काफिले को आगे बढ़ते रहने की बात कही है। कवि का मानना है कि बलिदान का यह क्रम निरंतर चलते रहना चाहिए क्योंकि हमारा देश तभी सुरक्षित रह सकता है, जब बलिदानियों के काफिले शत्रुओं को परास्त कर तथा विजयश्री को हासिल कर आगे बढ़ते रहेंगे।

7- इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है?

उ-इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' देश के लिए अपना सर्वस्व अर्थात् संपूर्ण समर्पण की ओर संकेत करता है। सिर पर कफन बाँधकर चलने वाला व्यक्ति अपने प्राणों से मोह नहीं करता, बल्कि अपने प्राणों का बलिदान देने के लिए सदैव तैयार रहता है इसलिए हर सैनिक सदा मौत को गले लगाने के लिए तत्पर रहता है।

8- इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उ-प्रस्तुत कविता उर्दू के प्रसिद्ध कवि कैफ़ी आज़मी द्वारा रचित है। यह गीत युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित फिल्म हकीकत के लिए लिखा गया है। इस कविता में कवि ने उन सैनिकों के हृदय की आवाज़ को व्यक्त किया है, जिन्हें अपने देश के प्रति किए गए हर कार्य, हर कदम, हर बलिदान पर गर्व है। इसलिए इन्हें प्रत्येक देशवासी से कुछ अपेक्षाएँ हैं कि उनके इस संसार से विदा होने के पश्चात वे देश की आन, बान व शान पर आँच नहीं आने देंगे, बल्कि समय आने पर अपना बलिदान देकर देश की रक्षा करेंगे।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1-साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उ- भाव-इन पंक्तियों का भाव यह है कि हमारे वीर सैनिक देश रक्षा के लिए दिए गए अपने वचन का पालन अपने जीवन के अंतिम क्षण तक करते रहे युद्ध में घायल इन सैनिकों को अपने प्राणों की जरा भी परवाह नहीं की। उनकी साँसें भले ही रुकने लगीं तथा भयंकर सर्दी के कारण उनकी नब्ज़ चाहे जमती चली गई किंतु किसी भी परिस्थिति में उनके इरादे डगमगाए नहीं। भारत माँ की रक्षा के लिए उनके बढ़ते कदम न तो पीछे हटे और न ही रुके। वे अपनी अंतिम साँस तक शत्रुओं का मुकाबला करते रहे।

2-खींच दो अपने खू से जमीं पर लकीर
इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई

उ-इन अंशों का भाव है कि सैनिकों ने अंतिम साँस तक देश की रक्षा की। युद्ध में घायल हो जाने पर जब सैनिकों की साँसें रुकने लगती हैं अर्थात् अंतिम समय आने पर तथा नब्ज़ के रुक-रुककर चलने पर, कमज़ोर पड़ जाने पर भी उनके कदम नहीं रुकते, क्योंकि वे भारतमाता की रक्षा हेतु आगे बढ़ते रहते हैं और हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं।

3-छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो

उ-भावइन पंक्तियों का भाव यह है कि भारत की भूमि सीता माता की तरह पवित्र है। इसके दामन - को छूने का दुस्साहस किसी को नहीं होना चाहिए। यह धरती राम और लक्ष्मण जैसे अलौकिक वीरों की धरती है जिनके रहते सीमा पर से कोई शत्रु रूपी रावण देश में प्रवेश कर देश की अस्मिता को लूट नहीं सकता। अतः हम सभी देशवासियों को मिलकर देश की गरिमा को बनाए रखना है अर्थात् देश के मानसम्मान व उसकी पवित्रता की रक्षा करना है।-

----

पाठ-७ -पतझर की टूटी पत्तियाँ

लेखक परिचय
लेखक - रविंद्र केलेकर
जन्म - 7 मार्च 1925 (कोंकण)

पतझर की टूटी पत्तियाँ पाठ प्रवेश
ऐसा माना जाता है कि कम शब्दों में अधिक बात कहना एक कविता का सबसे महत्वपूर्ण गुण होता है। जब कभी इस गुण का प्रयोग कवियों के साथ-साथ लेखक भी करे अर्थात जब कभी कविताओं के साथ-साथ गद्य में भी इस गुण (कम शब्दों में अधिक बात कहने) का प्रयोग हो, तो उस गद्य को पढ़ने वाले को यह मुहावरा याद आ ही जाता है - 'सार-सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय' अर्थात सही और सार्थक (जिनका कोई अर्थ हो)शब्दों का प्रयोग करके और निरर्थक (जिनका कहीं कोई अर्थ न हो) शब्दों का प्रयाग नहीं करना चाहिए।

आसान शब्दों का प्रयोग करना और कम शब्दों में अधिक शब्दों का अर्थ निकलने वाले वाक्यों का प्रयोग करना बहुत कठिन कम है। फिर भी लेखक इस काम को करते आए हैं। सूक्ति कथाएँ, आगम कथाएँ, जातक कथाएँ, पंचतंत्र की कहानियाँ इसी तरह से लिखी गई कथाएँ और कहानियाँ हैं। यही काम प्रस्तुत पाठ के लेखक रविंद्र केलेकर ने भी किया है।

लेखक ने प्रस्तुत पाठ में जो प्रसंग प्रस्तुत किए गए हैं उनमें भी लेखक पढ़ने वालों से उम्मीद कर रहे हैं कि वे उनके द्वारा कहे गए काम शब्दों में अधिक अर्थों को निकाले। ये प्रसंग केवल पढ़ने के ही लिए नहीं हैं ,बल्कि एक जागरूक और सक्रीय नागरिक बनने की प्रेरणा भी देते हैं।

पहले प्रसंग (गिन्नी का सोना) जीवन में अपने लिए सुख-साधन जुटाने वालों से नहीं बल्कि उन लोगो से परिचित करवाता है जो इस संसार को सब के लिए जीने और रहने योग्य बनाए हुए हैं।<

दूसरा प्रसंग (झेन की देन) बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की उस पद्धति की याद दिलाता है जिसके कारण जापान के लोग आज भी अपनी व्यस्ततम दिन भर के कामों के बीच भी कुछ चैन भरे या सुकून के पल हासिल कर ही लेते हैं।

पतझर की टूटी पत्तियाँ पाठ सार

लेखक ने प्रस्तुत पाठ में जो प्रसंग प्रस्तुत किए हैं, उनमें पहले प्रसंग (गिन्नी का सोना) जीवन में अपने लिए सुख-साधन जुटाने वालों से नहीं बल्कि उन लोगो से परिचित करवाता है जो इस संसार को सब के लिए जीने और रहने योग्य बनाए हुए हैं। लेखक कहते हैं कि शुद्ध सोने में और सोने के सिक्के में बहुत अधिक फर्क होता है, सोने के सिक्के में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया जाता है, जिस कारण अधिक चमक आ जाती है और यह अधिक मज़बूत भी होता है। औरतें अकसर उन्हीं सोने के सिक्कों के गहनें बनवाती हैं। लेखक कहते हैं कि किसी व्यक्ति का जो उच्च चरित्र होता है वह भी शुद्ध सोने की तरह होता है उसमें कोई मिलावट नहीं होती। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने चरित्र में ताँबा अर्थात मिलावटी व्यवहार मिला देते हैं, उन्ही लोगों को सभी लोग व्यावहारिक आदर्शवादी कह कर उनका गुणगान करते हैं। लेखक हम सभी को ये बताना चाहते हैं कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वर्णन कभी भी आदर्शों का नहीं होता, बल्कि आपके व्यवहार का होता है। कुछ लोग कहते हैं कि गाँधी जी भी व्यावहारिक आदर्शवादियों में से एक थे। यदि गाँधी जी अपने आदर्शो को महत्त्व नहीं देते तो पूरा देश उनके साथ हर समय कंधे-से-कन्धा मिला कर खड़ा न होता। जो लोग केवल अपने व्यवहार पर ही ध्यान देते हैं, केवल वैज्ञानिक ढंग से ही सोचते हैं, वे व्यवहारवादी लोग कहे जाते हैं और ये लोग हमेशा चौकाने रहते हैं कि कहीं इनसे कोई ऐसा काम न हो

जाए जिसके कारण इनको हानि उठानी पड़े। सबसे महत्पूर्ण बात तो यह है कि खुद भी तरक्की करो और अपने साथ-साथ दूसरों को भी आगे ले चलो और ये काम हमेशा से ही आदर्शो को सबसे आगे रखने वाले लोगो ने किया है। हमारे समाज में अगर हमेशा रहने वाले कई मूल्य बचे हैं तो वो सिर्फ आदर्शवादी लोगो के कारण ही बच पाए हैं।

दूसरा प्रसंग (झेन की देन) बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की उस पद्धति की याद दिलाता है जिसके कारण जापान के लोग आज भी अपनी व्यस्ततम दिन भर के कामों के बीच भी कुछ चैन भरे या सुकून के पल हासिल कर ही लेते हैं।

लेखक ने जब अपने जापानी मित्र से वहाँ की सबसे खतरनाक बीमारी के बारे में पूछा तो उसने कहा कि जापान के लोगों को सबसे अधिक मानसिक बीमारी का शिकार होना पड़ता है। लेखक के इस मानसिक बिमारी की वजह पूछने पर लेखक के मित्र ने उत्तर दिया कि उनके जीवन की तेजी औरों से अधिक है। जापान में कोई आराम से नहीं चलता, बल्कि दौड़ता है अर्थात सब एक दूसरे से आगे जाने की सोच रखते हैं। कोई भी व्यक्ति आराम से बात नहीं करता, वे लोग केवल काम की ही बात करते हैं। जापान के लोग अमेरिका से प्रतियोगिता में लग गए जिसके कारण वे एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही ख़त्म करने की कोशिश करने लगे। यही कारण है कि जापान के लोगो में मानसिक बिमारी फैल गई है।

लेखक कहते हैं कि एक शाम को उनका जापानी दोस्त उन्हें चा-नो-यू अर्थात जापान के चाय पीने के एक विशेष आयोजन में ले गया। लेखक और उनका मित्र चाय पिने के आयोजन के लिए जहाँ गए थे वह एक छः मंजिल की इमारत थी। उसकी छत पर एक सरकने वाली दीवार थी जिस पर चित्रकारी की गई थी और पत्तों की एक कुटिया बनी हुई थी जिसमें जमीन पर चटाई बिछी हुई थी। उसके बाहर बैडोल-सा मिट्टी का एक पानी भरा हुआ बरतन था। लेखक और उनके मित्र ने उस पानी से हाथ-पाँव धोकर अंदर गए। अंदर चाय देने वाला एक व्यक्ति था जिसे चानीज कहा जाता है। उन्हें देखकर वह खड़ा हो गया। कमर झुका कर उसने उन्हें प्रणाम किया और बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी को जलाया और उस पर चाय बनाने वाला बरतन रख दिया। वह साथ वाले कमरे में गया और कुछ बरतन ले कर आया। फिर तौलिए से बरतन साफ किए।

ये सारा काम उस व्यक्ति ने बड़े ही सलीके से पूरा किया और उसकी हर एक मुद्रा या काम करने के ढंग से लगता था कि जैसे जयजयवंती नाम के राग की धुन गूँज रही हो।

उस जगह का वातावरण इतना अधिक शांत था कि चाय बनाने वाले बरतन में उबलते हुए पानी की आवाज़ें तक सुनाई दे रही थी।
लेखक कहते हैं कि चाय बनाने वाले ने चाय तैयार की और फिर उन प्यालों को लेखक और उनके मित्रों के सामने रख दिया। जापान में इस चाय समारोह की सबसे खास बात शांति होती है। इसलिए वहाँ तीन से ज्यादा व्यक्तियों को नहीं माना जाता। वे करीब डेढ़ घंटे तक प्यालों से चाय को धीरे-धीरे पीते रहे। पहले दस-पंद्रह मिनट तो लेखक को बहुत परेशानी हुई। लेकिन धीरे -धीरे लेखक ने महसूस किया कि उनके दिमाग की रफ़्तार कम होने लेगी है। और कुछ समय बाद तो लगा कि दिमाग बिलकुल बंद ही हो गया है।
लेखक हमें बताना चाहते हैं कि हम लोग या तो बीते हुए दिनों में रहते हैं या आने वाले दिनों में। जबकि दोनों ही समय झूठे होते हैं। जो समय अभी चल रहा है वही सच है। और यह समय कभी न ख़त्म होने वाला और बहुत अधिक फैला हुआ है। लेखक कहते हैं कि जीना किसे कहते यह उनको चाय समारोह वाले दिन मालूम हुआ। जापानियों को ध्यान लगाने की यह परंपरा विरासत में देन में मिली है।
पतझर की टूटी पत्तियाँ पाठ की व्याख्या

प्रसंग -1गिन्नी का सोना

शुद्ध सोना अलग है और गिन्नी सोना अलग। गिन्नी के सोने में थोड़ासा ताँबा - मिलाया हुआ होता है, इसलिए वह ज्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मज़बूत भी होता है। औरतें अकसर इसी सोने के गहने बनवा लेती हैं।
फिर भी होता तो वह है गिन्नी का ही सोना।
शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के जैसे ही होते हैं। चंद लोग उनमें व्यवहारिकता का थोड़ासा - ताँबा मिला देते हैं और चलाकर दिखाते हैं। तब हम लोग उन्हें'प्रेक्टिकल आइडियलिस्ट' कहकर उनका बखान करते हैं।

गिन्नी सिक्का -

उच्चतम चरित्र - आदर्श

व्यावहारि - व्यवहारिकताक रूप में होने वाली स्थितियाँ
वर्णन – बखान

यहाँ लेखक यह बताना चाहते हैं कि किस तरह लोग अपने चरित्र में बनावटी पन)
(लाते हैं

लेखक कहते हैं कि शुद्ध सोने में और सोने के सिक्के में बहुत फर्क होता है। जो सोने का सिक्का होता है उसमें थोड़ा सा ताँबा मिलाया जाता-है, जिस कारण उसमें शुद्ध सोने से अधिक चमक आ जाती है और यह शुद्ध सोने से ज्यादा अधिक मज़बूत भी होता है। औरतें अकसर उन्हीं सोने के सिक्कों के गहनें बनवाती हैं। चाहे औरतें इस सोने के सिक्के के गहने बनवाती हों परन्तु होता तो यह सोने का सिक्का ही है कोई शुद्ध सोना नहीं।

लेखक कहते हैं कि किसी व्यक्ति का उच्च चरित्र भी शुद्ध सोने की तरह होता है उसमें कोई मिलावट नहीं होती। उसमें चमक नहीं होती जिस वजह से व्यक्ति शुद्ध चरित्र को शुद्ध सोने की तरह कम प्रयोग में लाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने चरित्र में ताँबा अर्थात मिलावटी व्यवहार मिला देते हैं और लोगो के बीच अपने आप को अच्छा साबित कर देते हैं। उन्ही लोगों को सभी लोग व्यावहारिक आदर्शवादी कह कर उनका गुणगान करते हैं।

ये बात न भूलें कि बखान आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है। और जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रेक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यवहारिक सूझबूझ ही आने लगती है। सोना पीछे रहकर ताँबा ही आगे आता है।

चंद लोग कहते हैं, गाँधी जी 'प्रेक्टिकल आइडियालिस्टों' थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी कीमत जानते थे। इसलिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। वरना हवा में ही उड़ते रहते। देश उनके पीछे न जाता।

सूझबूझ - सोचने समझने की शक्ति
विलक्षण - अत्यंत लक्षणों वाला

लेखक हम सभी को ये बताना चाहते हैं कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वर्णन कभी भी आदर्शों का नहीं होता, बल्कि आपके व्यवहार का होता है। और जब किसी के व्यवहार का वर्णन होना शुरू होता है तो जिन्हें व्यावहारिक आदर्शवादी लोग समझते हैं उन

आदर्शवादी लोगों के जीवन से आदर्श व्यावहारिक वर्णन के कारण कम होने लगते हैं और उनकी सोचने की शक्ति बढ़ने लगती है। कुछ लोग कहते हैं कि गाँधी जी भी व्यावहारिक आदर्शवादियों में से एक थे। वे अपनी व्यावहारिकता को जानते थे और उसकी कीमत को भी पहचानते थे। इन्हीं कारणों की वजह से वे अपने अनेक लक्षणों वाले आदर्श चला सके। वरना वे हवा में ही उड़ते रहते अर्थात उनके पास धन-दौलत, शिक्षा सब कुछ था उन्हें किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं थी। यदि गाँधी जी अपने आदर्शों को महत्त्व नहीं देते तो पूरा देश उनके साथ हर समय कंधे-से-कन्धा मिला कर खड़ा न होता।

हाँ, पर गाँधी जी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यवहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।

इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर लें चलें, यही महत्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

सजग - सतर्क, सावधान

हिसाब - लेखा-जोखा

शाश्वत - सदा रहने वाला

(लेखक ने यहाँ व्यवहारवादी लोगों के बारे में वर्णन किया है)

लेखक कहते हैं कि गाँधी जी कभी भी अपने आदर्शों को अपने व्यवहार पर हावी नहीं होने देते थे । बल्कि वे अपने व्यवहार में ही अपने आदर्शों को रखने की कोशिश करते थे। वे किसी भी तरह के आदर्शों में कोई भी व्यावहारिक मिलावट नहीं करते थे बल्कि व्यव्हार में आदर्शों को मिलाते थे जिससे आदर्श ही सबको दिखे और सब आदर्शों का ही पालन करे और आदर्शों की कीमत बढ़े। जो लोग केवल अपने व्यवहार पर ही ध्यान देते हैं, केवल वैज्ञानिक ढंग से ही सोचते हैं, वे व्यवहारवादी लोग कहे जाते हैं और ये लोग

हमेशा चौकन्ने रहते हैं कि कहीं इनसे कोई ऐसा काम न हो जाए जिसके कारण इनको हानि उठानी पड़े। वे अपने जीवन में बहुत सफल होते हैं, दूसरों से आगे भी बढ़ जाते हैं, पर क्या वे लोग सही मायने में आगे बढ़ते हैं या इज़्ज़त हासिल करते हैं ?

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि खुद भी तरक्की करो और अपने साथ-साथ दूसरों को भी आगे ले चलो और ये काम हमेशा से ही आदर्शो को सबसे आगे रखने वाले लोगो ने किया है। हमारे समाज में अगर हमेशा रहने वाले कई मूल्य बचे हैं तो वो सिर्फ आदर्शवादी लोगो के कारण ही बच पाए हैं। व्यवहारवादी लोग तो केवल अपने आप को आगे लाने में लगे रहते हैं । उनको कोई फर्क नहीं पड़ता अगर समाज को नुक्सान हो रहा हो।

प्रसंग 2 – झेन की देन<

जापान में मैंने अपने एक मित्र से पूछा, "यहाँ के लोगों को कौन सी बीमारियाँ अधिक होती हैं ?" "मानसिक", उसने जवाब दिया,"यहाँ के अस्सी फीसदी लोग मनोरुग्ण हैं।"
"इसकी क्या वजह है ?"

कहने लगे ,"हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं। .... अमेरिका से हम प्रतिस्पर्धा करने लगे। एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करने लगे। वैसे भी दिमाग की रफ़्तार हमेशा तेज़ ही रहती है। उसे 'स्पीड' का इंजन लगाने पर वह हजार गुना अधिक रफ्तार से दौड़ने लगता है। फिर एक क्षण ऐसा आता है जब दिमाग का तनाव बढ़ जाता है और पूरा इंजन टूट जाता है। ...... यही कारण है जिससे मानसिक रोग यहाँ बढ़ गए हैं। ....
"

फीसदी – प्रतिशत
मनोरुग्ण - मानसिक रोग /मानसिक बिमारी
रफ़्तार - तेज़ी
प्रतिस्पर्धा - प्रतियोगिता /मुकाबला
तनाव - द्वेष की स्थिति /टेंशन

लेखक ने जापान के अपने एक मित्र से पूछा कि वहाँ के लोगों को सबसे अधिक कौन सी बीमारियाँ होती है । इस पर लेखक के मित्र में जवाब दिया कि जापान के लोगों को

सबसे अधिक मानसिक बीमारी का शिकार होना पड़ता है। जापान के अस्सी प्रतिशत लोग मानसिक बिमारी से ग्रस्त हैं। लेखक के इस मानसिक बिमारी के इतना अधिक होने की वजह पूछने पर लेखक के मित्र ने उत्तर दिया कि उनके जीवन की तेजी औरों से अधिक है। जापान में कोई आराम से नहीं चलता ,बल्कि दौड़ता है अर्थात सब एक दूसरे से आगे जाने की सोच रखते हैं।

जापान में कोई भी व्यक्ति आराम से बात नहीं करता ,वे लोग केवल काम की ही बात करते हैं। यहाँ तक की जब जापान के लोग कभी अपने आप को अकेला महसूस करते हैं तो वे किसी और से नहीं बल्कि अपने आप से ही बातें करते हैं। जापान के लोग अमेरिका से प्रतियोगिता में लग गए जिसके कारण वे एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही ख़त्म करने की कोशिश करने लगे। वैसे भी दिमाग हमेशा तेज ही रहता है और अगर उसमें स्पीड का इंजन लगा दिया जाए तो उसकी राफ्तार में कई हज़ार गुना तेजी आ सकती है और वह दौड़ने लगता है। फिर एक समय ऐसा भी आता है जब दिमाग थक जाता है और टेंशन में आ कर पूरा इंजन टूट जाता है। यही कारण है कि जापान के लोगो में मानसिक बिमारी इतनी अधिक फैल गई है।

शाम को वह मुझे एक 'टी-सेरेमनी' में ले गए। चाय पीने की यह एक विधि है। जापानी में उसे चा-नो-यू कहते हैं।

वह एक छः मंजिली इमारत थी जिसकी छत पर दफ़्ती की दीवारोंवाली और तातामी (चटाई) की ज़मीनवाली एक सुंदर पर्णकुटी थी। बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बर्तन था। उसमें पानी भरा हुआ था। हमने अपने हाथ-पाँव इस पानी से धोए। तौलिए से पोंछे और अंदर गए। अंदर 'चानीज़' बैठा था। हमें देखकर वह खड़ा हुआ। कमर झुका कर उसने हमें प्रणाम किया। दो....झो...(आइए, तशरीफ़ लाइए) कहकर स्वागत किया। बैठने की जगह हमें दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया। तौलिए से बरतन साफ किए। सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों। वहाँ का वातावरण इतना शांत था कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई दे रहा था।

टी-सेरेमनी - जापान में चाय पिने का विशेष आयोजन

चा-नो-यू - जापान ने टी-सेरेमनी का नाम

दफ़्ती - लकड़ी की खोखली सरकने वाली दीवार जिस पर चित्रकारी होती है

पर्णकुटी - पत्तों की बनी कुटिया

बेढब-सा - बेडौल-सा चानीज़ - जापानी विधि में चाय पिलाने वाला

गरिमापूर्ण - सलीके से

भंगिमा - मुद्रा

जयजयवंती - एक राग का नाम

खदबदाना - उबलना

(यहाँ लेखक जापान की चाय पिने की विशेष विधि का वर्णन कर रहे हैं)
लेखक कहते हैं कि एक शाम को उनका जापानी दोस्त उन्हें जापान के चाय पीने के एक विशेष आयोजन में ले गया। जापान में चाय पिने की इस विधि को चा-नो-यू कहा जाता है। लेखक और उनका मित्र चाय पिने के आयोजन के लिए जहाँ गए थे वह एक छः मंजिल की इमारत थी । उसकी छत पर एक सरकने वाली दीवार थी जिस पर चित्रकारी की गई थी और पत्तों की एक कुटिया बनी हुई थी जिसमें जमीन पर चटाई बिछी हुई थी। उसके बाहर बैडोल-सा मिट्‌टी का एक बरतन था, जिसमें पानी भरा हुआ था। लेखक और उनके मित्र ने उस पानी से हाथ-पाँव धोए और तौलिए से हाथ-पाँव पोंछ कर अंदर गए। अंदर चाय देने वाला एक व्यक्ति था जिसे चानीज कहा जाता है। वह लेखक और उनके मित्र को देखकर खड़ा हो गया। कमर झुका कर उसने लेखक और उनके दोस्त को प्रणाम किया।
उसने दो... झो..अर्थात आइए, तशरीफ़ लाइए ऐसा कह कर उनका स्वागत किया। उसने उन्हें बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी को जलाया और उस पर चाय बनाने वाला बरतन रख दिया। वह साथ वाले कमरे में गया और कुछ बरतन ले कर आया। फिर तौलिए से बरतन साफ किए। ये सारा काम उस व्यक्ति ने बड़े ही सलीके से पूरा किया और उसकी हर एक मुद्रा या काम करने के ढंग से लगता था कि जैसे जयजयवंती नाम के राग की धुन गूँज रही हो। उस जगह का वातावरण इतना अधिक शांत था कि चाय बनाने वाले बरतन में उबलते हुए पानी की आवाज़ें तक सुनाई दे रही थी।
चाय तैयार हुई। उसने वह प्यालों में भरी। फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए गए। वहाँ हम तीन मित्र ही थे। इस विधि में शांति मुख्य बात होती है। इसलिए वहाँ तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता। प्याले में दो घूँट से अधिक चाय नहीं थी। हम ओठों से प्याला लगाकर एक-एक बूँद चाय पीते रहे। करीब डेढ़ घंटे तक चुसकियों

का यह सिलसिला चलता रहा। पहले दस-पंद्रह मिनट तो मैं उलझन में पड़ा। फिर देखा दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे धीमी पड़ती जा रही है। थोड़ी देर में बिलकुल बंद भी हो गई। मुझे लगा, मानो अनंतकाल में मैं जी रहा हूँ। यहाँ तक की सन्नाटा भी मुझे सुनाई देने लगा।

चुसकी - होंठों से कोई तरल पदार्थ थोड़ा-थोड़ा तथा धीरे-धीरे करके पीने की क्रिया का भाव

सिलसिला - क्रम

उलझन - असमंजस की स्थिति

अनंतकाल - कभी ख़त्म न होने वाला समय

सन्नाटा - मौन /शांति

(यहाँ लेखक जापान के चाय पिने के समारोह में अपना पहला अनुभव व्यक्त कर रहा है) लेखक कहते हैं कि चाय बनाने वाले ने चाय तैयार की। उसने चाय को प्यालों में भरा और फिर उन प्यालों को लेखक और उनके मित्रों के सामने रख दिया। वहाँ लेखक और उनके मित्रों के अलावा कोई नहीं था वे केवल तीन ही व्यक्ति थे। जापान में इस चाय समारोह की सबसे खास बात शांति होती है। इसलिए वहाँ तीन से ज्यादा व्यक्तियों को नहीं माना जाता। उन चाय के प्यालों में दो-दो घूँट से ज्यादा चाय नहीं थी। लेखक और उनके मित्र प्यालों को अपने होठों से लगा कर एक-एक बूँद चाय पी रहे थे। लेखक कहते हैं कि वे करीब डेढ़ घंटे तक प्यालों से चाय को धीरे-धीरे पीते रहे। पहले दस-पंद्रह मिनट तो लेखक को बहुत परेशानी हुई।

लेकिन धीरे -धीरे लेखक ने महसूस किया कि उनके दिमाग की रफ़्तार कम होने लेगी है। और कुछ समय बाद तो लगा कि दिमाग बिलकुल बंद ही हो गया है। लेखक को लगा जैसे वह कभी न ख़त्म होने वाले समय में जी रहा है। यहाँ तक की लेखक का मन इतना शांत हो गया था की बाहर की शांति भी शोर लग रही थी।

अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग से भूत-भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था। और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था।

जीना किसे कहते है, उस दिन मालूम हुआ।
झेन परंपरा की यह बड़ी देन मिली है जापानियों को!
मिथ्या - झूठ
विस्तृत - बहुत अधिक फैला हुआ
झेन परंपरा - ध्यान लगाने की परंपरा
लेखक हमें बताना चाहते हैं कि हम लोग या तो बीते हुए दिनों की अच्छी-बुरी यादों में उलझ कर रह जाते हैं या फिर आने वाले समय के बारे में सपने देखने लगते हैं। हम लोग या तो बीते हुए दिनों में रहते हैं या आने वाले दिनों में। जबकि दोनों ही समय झूठे होते हैं। वो इसलिए क्योंकि एक बीत चूका होता है और दूसरा अभी आया भी नहीं होता। तो बात आती है कि सच क्या है तो लेखक कहते हैं कि जो समय अभी चल रहा है वही सच है। और यह समय कभी न ख़त्म होने वाला और बहुत अधिक फैला हुआ है।
लेखक कहते हैं कि जीना किसे कहते यह उनको चाय समारोह वाले दिन मालूम हुआ। जापानियों को ध्यान लगाने की यह परंपरा विरासत में देन में मिली है।

Q1- पतझर में टूटी पत्तियाँ का लेखक कौन है ?
A) रवीन्द्र केलेकर
B) खुशवंत सिंह
C) मुंशी प्रेम चंद
D) कोई नहीं
Q2- केलेकर का जन्म कब हुआ?
A) ७ मार्च १९२५ को
B) ४ मार्च १९२६ को
C) ५ मार्च १९७८ को
D) कोई नहीं

Q3- केलेकर का जन्म कहाँ हुआ ?
A) कोंकण में
B) मुंबई में

C) कर्नाटका

D) कोई नहीं

Q4- छात्र जीवन में केलेकर का झुकाव किस ओर था ?

A)

गोवा मुक्ति आंदोलन में

B) भारत मुक्ति आंदोलन में

C) हरित क्रान्ति में

D) कोई नहीं

Q5- केलेकर किस दर्शन से प्रभावित थे ?

A) गाँधी

वादी दर्शन से

B) भारत दर्शन से

C) गीता दर्शन से

D) दर्शन से

6- केलेकर ने हिंदी के अलावा और किन भाषाओं में लिखा ?

A) कोंकणी और मराठी

B) कोंकणी और गुजराती

C) कोंकणी और तेलगू

D) तेलगू और गुजराती

Q7- केलेकर की प्रमुख रचनाओं के नाम बताएं |

A) समि

धा

B) सांगली ेथाबे

C) जापान जसा दिसला

D) सभी

Q8- पतझर में टूटी पत्तिओं में दो प्रसंगो के माध्यम से लेखक ने किस बात की प्रेरणा दी है ?

A) सक्रिय नागरिक बनने की

B) जागरूक रहने की

C) अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने की

D) जागरूक रहने की

Q9- झेन की देन में लेखक जापानी लोगों के बारे में क्या कहता है ?

A) जापानी लोगो को मानसिक बीमारिया अधिक हैं

B) जापानी लोग स्मार्ट हैं

C) जापानी लोग गतिवान हैं

D) कोई नहीं

Q10- लेखक के अनुसार कुछ लोग गाँधी जी को क्या कहते हैं ?

A) गांधीवादी

B) प्रैक्टिकल आईडियलिस्ट

C) राष्ट्रपिता

D) आईडियलिस्ट

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न १ .लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने की बात क्यों कही है?

उत्तर-दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने से वह दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है। जापान के लोग पूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धा में हैं, वे किसी भी तरीके से उन्नति करके अमेरिका से आगे निकलना चाहते हैं। इसलिए उनका मस्तैिष्क सदा तनावग्रस्त रहता है। इस कारण वे मानसिक रोगों के शिकार होते हैं। लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगाने की बात इसलिए कही क्योंकि वे तीव्र गति से प्रगति करना चाहते हैं। महीने के काम को एक दिन में पूरा करना चाहते हैं इसलिए उनका दिमाग भी तेज़ रफ्तार से स्पीड इंजन की भाँति सोचता है।

प्रश्न २ जापानी में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं?

उत्तर- जापानी में चाय पीने की विधि को चा-नो-यू कहते हैं।

प्रश्न ३ जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

उत्तर-जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, वह स्थान पर्णकुटी जैसा सजा होता है। वहाँ बहुत शांति

होती है। प्राकृतिक ढंग से सजे हुए इस छोटे से स्थान में केवल तीन लोग बैठकर चाय पी सकते हैं। यहाँ अत्यधिक शांति का वातावरण होता है।

प्रश्न ४ चाजीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं?

उत्तर-चाजीन ने टी-सेरेमनी से जुड़ी सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से की। यह सेरेमनी एक पर्णकुटी में पूर्ण हुई। चाजीन द्वारा अतिथियों का उठकर स्वागत करना आराम से अँगीठी सुलगाना, चायदानी रखना, दूसरे कमरे से चाय के बर्तन लाना, उन्हें तौलिए से पोंछना व चाय को बर्तनों में डालने आदि की सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग अर्थात् बड़े ही आराम से, अच्छे व सहज ढंग से की।

प्रश्न ४ चाजीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं?

उत्तर-चाजीन ने टी-सेरेमनी से जुड़ी सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से की। यह सेरेमनी एक पर्णकुटी में पूर्ण हुई। चाजीन द्वारा अतिथियों का उठकर स्वागत करना आराम से अँगीठी सुलगाना, चायदानी रखना, दूसरे कमरे से चाय के बर्तन लाना, उन्हें तौलिए से पोंछना व चाय को बर्तनों में डालने आदि की सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग अर्थात् बड़े ही आराम से, अच्छे व सहज ढंग से की।

प्रश्न ५ 'टी-सेरेमनी में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

उत्तर-'टी-सेरेमनी' में केवल तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता है। ऐसा शांति बनाए रखने के लिए किया जाता है।

प्रश्न ६ चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

उत्तर-चाय पीने के बाद लेखक ने महसूस किया कि जैसे उसके दिमाग की गति मंद हो गई हो। धीरे-धीरे उसका दिमाग चलना बंद हो गया हो उसे सन्नाटे की आवाजें भी सुनाई देने लगीं। उसे लगा कि मानो वह अनंतकाल से जी रहा है। वह भूत और भविष्य दोनों का चिंतन न करके वर्तमान में जी रहा हो। उसे वह पल सुखद लगने लगे।

ख) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न १ हमारे जीने की रफ्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।

उत्तर-जापान के लोगों के जीवन की गति बहुत अधिक बढ़ गई है इसलिए वहाँ लोग चलते नहीं, बल्कि दौड़ते हैं। कोई बोलता नहीं है, बल्कि जापानी लोग बकते हैं और जब ये अकेले होते हैं, तो स्वयं से ही बड़बड़ाने लगते हैं अर्थात् स्वयं से ही बातें करते रहते हैं।

प्रश्न २ अभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूंज रहे हों।

उत्तर-लेखक जब अपने मित्रों के साथ जापान की 'टी-सेरेमनी में गया तो चाजीन ने झुककर उनका स्वागत किया। लेखक को वहाँ का वातावरण बहुत शांतिमय प्रतीत होता है। लेखक देखता है कि वहाँ की सभी क्रियाएँ अत्यंत गरिमापूर्ण ढंग से की गईं। चाजीन द्वारा लेखक और उसके मित्र का स्वागत करना, अँगीठी जलाना, चायदानी रखना, बर्तन लगाना, उन्हें तौलिए से पोंछना, चाय डालना आदि सभी

क्रियाएँ मन को भाने वाली थीं। यह देखकर लेखक भाव-विभोर हो गया। वहाँ की गरिमा देखकर लगता था कि जयजयवंती राग का सुर गूंज रहा हो।

प्रश्न २ पाठ में वर्णित 'टी-सेरेमनी' का शब्द चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर'टी-सेरेमनी 'का शब्द चित्र- एक छह मंजिली इमारत की छत पर झोपड़ीनुमा कमरा है, जिसकी दीवारें दफ़्ती की बनी है। फ़र्श पर चटाई बिछी है। वातावरण अत्यंत शांतिपूर्ण है। बाहर ही एक बड़े से बेडौल मिट्टी के बरतन में पानी रखा है। लोग यहाँ हाथ-पाँव धोकर अंदर जाते हैं। अंदर बैठा चाजीन झुककर सलाम करता है। बैठने की जगह की ओर इशारा करता है और चाय बनाने के लिए अँगीठी जलाता है। उसके बर्तन अत्यंत साफ़-सुथरे और सुंदर हैं। वातावरण इतना शांत है कि चायदानी में उबलते पानी की आवाज साफ़ सुनाई दे रही है। वह बिना किसी जल्दबाजी के चाय बनाता है। वह कप में दो-तीन घूट भर ही चाय देता है जिसे लोग धीरे-धीरे चुस्कियाँ लेकर एक डेढ़ घंटे में पीते हैं|

प्रश्न ३ लेखक के मित्र के अनुसार जापानी किस रोग से पीड़ित हैं और क्यों?

उत्तर-लेखक के मित्र के अनुसार जापानी मानसिक रुग्णता से पीड़ित हैं। इसका कारण उनकी असीमित आकांक्षाएँ, उनको पूरा करने के लिए किया गया भागम-भाग भरा प्रयास, महीने का काम एक दिन में करने की चेष्टा, अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र से प्रतिस्पर्धा आदि है।

प्रश्न ३ 'टी-सेरेमनी' की चाय का लेखक पर क्या असर हुआ?

उत्तर-'टी-सेरेमनी' में चाय पीते समय लेखक पहले दस-पंद्रह मिनट उलझन में पड़ा। फिर उसके दिमाग की रफ्तार धीमी होने लगी। जो कुछ देर में बंद-सी हो गई। अब उसे सन्नाटा भी सुनाई दे रहा था। उसे लगने लगा कि वह अनंतकाल में जी रहा है।

प्रश्न ४ 'जीना इसी का नाम है' लेखक ने ऐसा किस स्थिति को कहा है?

उत्तर-'जीना इसी का नाम है' लेखक ने ऐसा उस स्थिति को कहा है जब वह भूतकाल और भविष्य दोनों को मिथ्या मानकर उन्हें भूल बैठा। उसके सामने जो वर्तमान था उसी को उसने सच मान लिया था। टी-सेरेमनी में चाय पीते-पीते उसके दिमाग से दोनों काले उड़ गए थे। वह अनंतकाल जितने विस्तृत वर्तमान में जी रहा था|

प्रश्न .५-'झेन की देन' पाठ से आपको क्या संदेश मिलता है?

उत्तर-'झेन की देन' पाठ हमें अत्यधिक व्यस्त जीवनशैली और उसके दुष्परिणामों से अवगत कराता है। पाठ में जापानियों की व्यस्त दिनचर्या से उत्पन्न मनोरोग की चर्चा करते हुए वहाँ की 'टी-सेरेमनी' के माध्यम से मानसिक तनाव से मुक्त होने का संकेत करते हुए यह संदेश दिया है कि अधिक तनाव मनुष्य को पागल बना देता है। इससे बचने का उपाय है मन को शांत रखना। बीते दिनों और भविष्य की कल्पनाओं को भूलकर वर्तमान की वास्तविकता में जीना और वर्तमान का भरपूर आनंद लेना। इसके मन से चिंता, तनाव और अधिक काम की बोझिलता हटाना आवश्यक है ताकि शांति एवं चैन से जीवन कटे।

संचयन-भाग
पाठ-3-टोपी शुक्ला

शुक्ल टोपी :-

प्रस्तुत पाठ में लेखक टोपी की कहानी पाठकों को सुनाना चाहते हैं। इसलिए लेखक कहता है कि वह इफ़्फ़न की कहानी पूरी नहीं सुनाएगा बल्कि केवल उतनी ही सुनाएगा जितनी टोपी की कहानी के लिए उसे जरुरी लग रही है। इफ़्फ़न टोपी की कहानी का एक ऐसा हिस्सा है जिसके बिना शायद टोपी की कहानी अधूरी है। ये दोनों लेखक की कहानी के दो चरित्र हैं। एक का नाम बलभद्र नारायण शुक्ला है और दूसरे का नाम सय्यद जरगाम मुरतुज़ा। एक को सभी प्यार से टोपी कह कर पुकारते हैं और दूसरे को इफ़्फ़न। इफ़्फ़न की दादी पूरब की रहने वाली थी। नौ या दस साल की थी जब उनकी शादी हुई और वह लखनऊ आ गई, परन्तु जब तक ज़िंदा रही, वह पूरब की ही भाषा बोलती रही। लखनाऊ की उर्दू तो उनके लिए ससुराल की भाषा थी। उन्होंने तो मायके की भाषा को ही गले लगाए रखा था क्योंकि उनकी इस भाषा के सिवा उनके आसपास कोई ऐसा नहीं था जो उनके दिल की बात समझ पाता। जब उनके बेटे की शादी के दिन आए तो गाने बाजाने के लिए उनका दिल तड़पने लगा, परन्तु इस्लाम के आचार्यों के घर गाना -बजाना भला कैसे हो सकता था? बेचारी का दिल उदास हो गया। लेकिन इफ़्फ़न के जन्म के छठे दिन के स्नानउत्सव पर उन्होंने जी भरकर उत्सव मना लिया था।/पूजन/ इफ़्फ़न को अपनी दादी से बहुत ज्यादा प्यार था। प्यार तो उसे अपने अब्बू, अम्मी, बड़ी बहन और छोटी बहन नुज़हत से भी था परन्तु दादी से वह सबसे ज्यादा प्यार किया करता था। अम्मी तो कभी कभार इफ़्फ़न को डाँट-देती थी और कभीकभी तो मार भी दिया करती थी। - कभी डाँटती और मारती थी। अब्बू भी-बड़ी बहन भी अम्मी की ही तरह कभीकभीकभार घर - को न्यायालय समझकर अपना फैसला सुनाने लगते थे। नुजहत को जब भी मौका मिलता वह उसकी कापियों पर तस्वीरें बनाने लगती थी। बस एक दादी ही थी जिन्होंने कभी भी किसी बात पर उसका दिल नहीं दुखाया था। वह रात को भी उसे बहराम डाकू, अनार परी, बारह बुर्ज, अमीर हमज़ा, गुलबकावली, हातिमताई, पंच फुल्ला रानी की कहानियाँ सुनाया करती थी।

इफ़्फ़न की दादी की बोली टोपी के दिल में उतर गई थी, उसे भी इफ़्फ़न की दादी की बोली बहुत अच्छी लगती थी। इफ़्फ़न की दादी टोपी को अपनी माँ की पार्टी की दिखाई दी कहने का अर्थ है टोपी की माँ और इफ़्फ़न की दादी की बोली एक जैसी थी। टोपी को अपनी दादी बिलकुल भी पसंद नहीं थी। उसे तो अपनी दादी से नफ़रत थी। वह पता नहीं कैसी भाषा

बोलती थी। टोपी को अपनी दादी की भाषा और इफ़्फ़न के अब्बू की भाषा एक जैसी लगती थी। लेखक कहता है कि टोपी जब भी इफ़्फ़न के घर जाता था तो उसकी दादी के ही पास बैठने की कोशिश करता था। टोपी को इफ़्फ़न की दादी का हर एक शब्द शक़्कर की तरह मिठ्ठा लगता था। पके आम के रस को सूखाकर बनाई गई मोटी परत की तरह मज़ेदार लगता। तिल के बने व्यंजनों की तरह अच्छा लगता था।

लेखक कहता है कि टोपी ने दस अक्तूबर सन पैंतालीस को कसम खाई कि अब वह किसी भी ऐसे लड़के से कभी भी दोस्ती नहीं करेगा जिसके पिता कोई ऐसी नौकरी करते हो जिसमें बदली होती रहती हो। दस अक्तूबर सन पैंतालीस का टोपी के जीवन के इतिहास में बहुत अधिक महत्त्व है, क्योंकि इस तारीख को इफ़्फ़न के पिता बदली पर मुरादाबाद चले गए। टोपी दादी के मरने के बाद तो अकेला महसूस कर ही रहा था और अब इफ़्फ़न के चले जाने पर वह और भी अकेला हो गया था क्योंकि दूसरे कलेक्टर ठाकुर हरिनाम सिंह के तीन लड़कों में से कोई उसका दोस्त नहीं बन सका था।डब्बू बहुत छोटा था। बीलू बहुत बड़ा था। गुड्डू था तो बराबर का परन्तु केवल अंग्रेजी बोलता था। अब न तो इफ़्फ़न था और न ही इफ़्फ़न की दादी जो उसे समझ सके। घर में ले देकार एक बूढ़ी नौकरानी-सीता थी जो उसका दुःखदर्द समझती थी। - तो वह अब सीता के साथ ही समय गुजारने लगा।

टोपी के सभी दोस्त दसवीं कक्षा में थे। इसलिए वह उन्हीं से मिलता और उन्हीं के साथ खेलता था। अपने साथ नवीं कक्षा में पढ़ने वालों में से किसी के साथ उसकी दोस्ती नहीं थी। वह जब भी कक्षा में बैठता, उसे अजीब लगता था। टोपी ने किसी न किसी तरह इस साल को झेल लिया। परन्तु जब सन इक्यावन में भी उसे नवीं कक्षा में ही बैठना पड़ा तो वह बिलकुल गीली मिट्टी का पिंड हो गया, क्योंकि अब तो दसवें में भी कोई उसका दोस्त नहीं रह गया था। जो विद्यार्थी सन उनचास में आठवीं कक्षा में थे वे अब दसवीं कक्षा में थे। जो सन उनचास में सातवीं कक्षा में थे वे टोपी के साथ पहुँच गए थे। उन सभी के बीच में वह अच्छाख़ासा बूढ़ा - दिखाई देने लगा था।वहीद जो कक्षा का सबसे तेज़ लड़का था, उसने टोपी से पूछा कि वह उन लोगों के साथ क्यों खेलता है। उसे तो आठवीं कक्षा वालों से दोस्ती करनी चाहिए। क्योंकि वे लोग तो आगे दसवीं कक्षा में चले जाएँगे और टोपी को तो आठवीं वालों के साथ ही रहना है तो उनसे दोस्ती करना टोपी के लिए अच्छा होगा। यह बात टोपी को बहुत बुरी लगी और ऐसा लगा जैसे यह बात उसके दिल के आरपार हो गई हो। और उसने उसी समय कसम खाई कि - इस साल उसे टाइफ़ाइड हो या टाइफ़ाइड का बाप, वह पास होकर ही दिखाएगा। परन्तु साल के बीच में ही चुनाव आ गए। टोपी के पिता डॉक्टर भृगु नारायण, नीले तेल वाले, चुनाव लड़ने के लिए खड़े हो गए। अब जिस घर में कोई चुनाव के लिए खड़ा हो, उस घर में कोई पढ़ लिख - कैसे सकता हैरु वह तो जब टोपी के पिता चुनाव हार गए तब घर में थोड़ी शांति हुई और टोपी

ने देखा कि उसकी परीक्षा को ज्यादा समय नहीं रहा है। वह पढ़ाई में जुट गया। परन्तु जैसा वातावरण टोपी के घर में बना हुआ था ऐसे वातावरण में कोई कैसे पढ़ सकता था? इसलिए टोपी का पास हो जाना ही बहुत था। टोपी के दो साल एक ही कक्षा में रहने के बाद जब वह पास हुआ तो उसकी दादी बोली कि वाहबंद से बचाए। बहुत अच्छी -टोपी को भगवान नजरे ! रफ़्तार पकड़ी है। तीसरे साल पास हुआ वो भी तीसरी श्रेणी में, चलो पास तो हो गया।
लेखक कहता है कि सीता टोपी को इसलिए समझा रही थी क्योंकि बात यह हुई कि ठण्ड के दिन थे और मुन्नी बाबू के लिए कोट का नया कपड़ा आया और भैरव के लिए भी नया कोट बना लेकिन टोपी को मुन्नी बाबू का पुराना कोट मिला। वैसे कोट बिलकुल नया ही था क्योंकि जब वह बनाया गया तब वह मुन्नी बाबू को पसंद नहीं आया था। फिर भी बना तो उन्हीं के लिए था। भले ही वह उसे ना पहनते हो। टोपी ने वह कोट उसी वक्त दूसरी नौकरानी केतकी के बेटे को दे दिया। वह खुश हो गया। नौकरानी के बच्चे को दे दी गई कोई भी चीज़ वापिस तो ली नहीं जा सकती थी, इसलिए तय हुआ कि टोपी ठण्ड ही खाएगा। टोपी छोटा था इसलिए ठण्ड खाने का अर्थ समझा नहीं और भोलेपन से बोला कि वह कोई ठण्ड नहीं खाएगा। वह तो भात खाएगा। इस पर टोपी की दादी सुभद्रादेवी बोली कि वह तो जूते खाएगा। टोपी उनकी इस बात पर झट से बोल पड़ा कि क्या उन्हें इतना भी नहीं पता कि जूता खाया नहीं जाता बल्कि पहना जाता है। टोपी के इस तरह बोलने पर मुन्नी बाबू गुस्से से टोपी को डाँटते हुए बोले कि वह दादी का अपमान क्यों कर रहा है? इस पर भी टोपी उल्टा जवाब देता हुआ बोला कि तो क्या वह उनकी पूजा करे? यह सुनते ही दादी ने बहुत अधिक शोर मचाना शुरू कर दिया और टोपी की माँ रामदुलारी ने टोपी को पीटना शुरू कर दिया।"तूँ दसवाँ में पहुँच गइल बाड़।" सीता ने कहा, "तूँ हें दादी से टर्राव के त ना न चाही। कीनों ऊ तोहार दादी बाड़िन।"
सीता ने तो बड़ी आसानी से कह दिया कि वह दसवें में पहुँच गया है, परन्तु यह बात इतनी आसान नहीं थी। दसवें में पहुँचाने के लिए उसे बड़े पापड़ बेलने पड़े। दो साल तो वह फेल ही हुआ। नवें में तो वह सन उनचास ही में पहुँच गया था, परन्तु दसवें में वह सन बावन में पहुँच सका।
जब वह पहली बार फ़ेल हुआ मुन्नी बाबू इन्टरमीडिएट में फ़र्स्ट आए और भैरव छठे में। सारे घर ने उसे ज़बान की नोक पर रख लिया। वह बहुत रोया। बात यह नहीं थी कि वह गाउदी था। वह काफ़ी तेज़ था परन्तु उसे कोई पढ़ने ही नहीं देता था। जब भी वह पढ़ने बैठता मुन्नी बाबू को कोई काम निकल आता या रामदुलारी को कोई ऐसी चीज़ मँगवानी पड़ जाती जो नौकरों से नहीं मँगवाई जा सकती थी-यह सब कुछ न होता तो पता चलता कि भैरव ने उसकी कापियों के हवाई जहाज़ उड़ा डाले हैं।
दूसरे साल उसे टाइफ़ाइड हो गया। तीसरे साल वह थर्ड डिवीज़न में पास हो गया। यह थर्ड

डिवीज़न कलंक के टिके की तरह उसके माथे से चिपक गया।जब टोपी को उसकी माँ ने दादी को उल्टा जवाब देने के लिए पीटा तो उनकी बूढी नौकरानी सीता टोपी को समझाने लगी कि अब वह दसवीं कक्षा में पहुँच गया है। उसे दादी से इस तरह बात नहीं करनी चाहिए आखिरकार वह उसकी दादी है। सीता ने तो बड़ी आसानी से कह दिया कि टोपी दसवीं कक्षा में पहुँच गया है परन्तु टोपी के लिए दसवीं कक्षा में पहुँचना इतना भी आसान नहीं था। दसवीं कक्षा में पहुँचने के लिए टोपी को बहुत अधिक मेहनत करनी पड़ी थी। दो साल तो टोपी फेल ही हुआ था। नवीं कक्षा में तो टोपी सन उनचास ही में पहुँच गया था, परन्तु दसवीं कक्षा में पहुँचते-पहुँचते साल बावन हो चूका था। जब टोपी पहली बार फेल हुआ तो उसका बड़ा भाई मुन्नी बाबू माध्यमिक (10th) कक्षा में प्रथम आया और उसका छोटा भाई भैरव छठी कक्षा में प्रथम आया। सभी घरवाले हर समय टोपी की ही बात करने लगे। उस समय टोपी बहुत रोया था। ऐसी बात नहीं थी कि वह मुर्ख या मन्दबुद्धि था। वह पढ़ाई में बहुत तेज़ था परन्तु उसे कोई पढ़ने ही नहीं देता था। जब भी टोपी पढ़ाई करने बैठता था तो कभी उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू को कोई काम याद आ जाता था या उसकी माँ को कोई ऐसी चीज़ मँगवानी पड़ जाती जो नौकरों से नहीं मँगवाई जा सकती थी, अगर ये सारी चीज़े न होती तो कभी उसका छोटा भाई भैरव उसकी कापियों के पन्नों को फाड़ कर उनके हवाई जहाज़ बना कर उड़ाने लग जाता। यह तो थी पहले साल की बात। दूसरे साल उसे टाइफ़ाइड हो गया था। जिसके कारण वह पढ़ाई नहीं कर पाया और दूसरी साल भी फेल हो गया। तीसरे साल वह पास तो हो गया परन्तु थर्ड डिवीज़न में। यह थर्ड डिवीज़न कलंक के टिके की तरह उसके माथे से चिपक गया। परन्तु लेखक कहता है कि सभी को उसकी मुश्किलों को भी ध्यान में रखना चाहिए कि वह किस वजह से दो साल में फेल हुआ और तीसरी साल में थर्ड डिवीज़न से पास हुआ।

लेखक कहता है कि सन उनचास में टोपी अपने साथियों के साथ था। जब वह फेल हो गया तो उसके सभी साथी आगे निकल गए और वह नवीं कक्षा में ही रह गया। सन पचास में उसे उसी कक्षा में उन लड़कों के साथ बैठना पड़ा जो पिछले साल आठवीं कक्षा में थे। पिछली कक्षा वालों के साथ एक ही कक्षा में बैठना कोई आसान काम नहीं होता। टोपी के सभी दोस्त दसवीं कक्षा में थे। इसलिए वह उन्हीं से मिलता और उन्हीं के साथ खेलता था। अपने साथ नवीं कक्षा में पढ़ने वालों में से किसी के साथ उसकी दोस्ती नहीं हो सकी थी। वह जब भी कक्षा में बैठता, उसे अपना उस कक्षा में बैठना अजीब लगता था। उस पर ज़ुल्म यह हुआ कि कक्षा के कमज़ोर लड़कों को जब मास्टर जी समझाते तो उस का उदाहरण देते हुए

कहते कि साम अवतार (या मुहम्मद अली), बलभद्र की तरह इसी कक्षा में टिके रहना चाहते हो क्या? यह सुन कर सारी कक्षा हँसने लगती। हँसने वाले वे विद्यार्थी होते थे जो पिछले साल

आठवीं कक्षा में थे। टोपी ने किसी न किसी तरह इस साल को झेल लिया। परन्तु जब सन इक्यावन में भी उसे नवीं कक्षा में ही बैठना पड़ा तो उसे बहुत अधिक शर्म महसूस होने लगी, क्योंकि अब तो दसवें में भी कोई उसका दोस्त नहीं रह गया था। जो विद्यार्थी सन उनचास में आठवीं कक्षा में थे वे अब दसवीं कक्षा में थे। जो सन उनचास में सातवीं कक्षा में थे वे टोपी के साथ पहुँच गए थे। उन सभी के बीच में वह अच्छा-ख़ासा बूढ़ा दिखाई देने लगा था।
वह अपने भरे-पूरे घर की ही तरह अपने स्कूल में भी अकेला हो गया था। मास्टरों ने उसका नोटिस लेना बिलकुल ही छोड़ दिया था कोई सवाल किया जाता और जवाब देने के लिए वह भी हाथ उठता तो कोई मास्टर उससे जवाब न पूछता। परन्तु जब उसका हाथ उठता ही रहा तो एक दिन अंग्रेजी-साहित्य के मास्टर साहब ने कहा -
"तीन बरस से यही किताब पढ़ रहे हो, तुम्हें तो सारे जवाब ज़ुबानी याद हो गए होंगे! इन लड़कों को अगले साल हाई स्कूल का इम्तिहान देना है। तुमसे पारसाल पूछ लूँगा।"
टोपी इतना शर्माया कि उसके काले रंग लाली दौड़ गई। और जब तमाम बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े तो वह बिलकुल मर गया। जब वह पहली बार नवें में आया था तो वह भी इन्हीं बच्चों की तरह बिलकुल बच्चा था।

लेखक कहता है कि जिस तरह टोपी अपने भरे-पूरे घर में भी अकेलापन महसूस करता था, उसी तरह अपने स्कूल में भी अकेला हो गया था। मास्टरों ने उसकी ओर ध्यान देना बिलकुल ही छोड़ दिया था, कोई सवाल किया जाता और जवाब देने के लिए जब टोपी भी हाथ उठाता, तो कोई मास्टर उससे जवाब नहीं पूछता था। परन्तु जब टोपी ने हार नहीं मानी और अपना हाथ उठाता ही रहा, तो एक दिन अंग्रेजी-साहित्य के मास्टर साहब ने कहा कि टोपी तो तीन साल से यही किताब पढ़ रहा है, उसे तो सारे जवाब

ज़ुबानी याद हो गए होंगे, उसके साथ बैठे इन लड़कों को अगले साल हाई स्कूल की परीक्षा देनी है। उन्हें इस साल इन लड़कों से प्रश्न पूछने दो, टोपी से तो वे आने वाले साल में भी पूछ सकते हैं। अंग्रेजी- साहित्य के मास्टर साहब की इस बात को सु न कर टोपी इतना शर्माया कि उसका काला रंग भी लाल हो गया। और जब सभी बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े तो टोपी मानो बिलकुल मर ही गया हो। जब वह पहली बार नवीं कक्षा में आया था, तो वह भी इन्हीं बच्चों की तरह बिलकुल बच्चा ही था। और अब दो साल इसी कक्षा में होने के कारण वह बिलकुल बूढ़ा लगता था
एक ऐसी बात कही कि टोपी बहुत अधिक गुस्से में आ गया। वहीद कक्षा का सबसे तेज़ लड़का था। कक्षा का मुखिया भी था।सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह लाल तेल वाले डॉक्टर शुरफ़ुद्दीन का बेटा था। अबदुल वहीद ने टोपी से कहा कि वह उन लोगों के साथ क्यों खेलता

है। उसे तो आठवीं कक्षा वालों से दोस्ती करनी चाहिए क्योंकि वे लोग तो आगे दसवीं कक्षा में चले जाएँगे और टोपी को तो आठवीं वालों के साथ ही रहना है तो उनसे दोस्ती करना टोपी के लिए अच्छा होगा। यह बात टोपी को बहुत बुरी लगी और ऐसा लगा जैसे यह बात उसके दिल के आरपार हो गई हो। और- उसने उसी समय कसम खाई कि इस साल उसे टाइफ़ाइड हो या टाइफ़ाइड का बाप, वह पास होकर ही दिखाएगा।परन्तु साल के बीच में ही चुनाव आ गए। टोपी के पिता डॉक्टर भृगु नारायण, नीले तेल वाले, चुनाव लड़ने के लिए खड़े हो गए। अब जिस घर में कोई चुनाव के लिए खड़ा हो, उस घर में कोई पढ़-लिख कैसे सकता है? वह तो जब डॉक्टर साहब चुनाव हार गए तब घर में थोड़ी शांति हुई और टोपी ने देखा कि उसकी परीक्षा को ज्यादा समय नहीं रहा है। वह पढ़ाई में जुट गया। परन्तु जैसा वातावरण टोपी के घर में बना हुआ था ऐसे वातावरण में कोई कैसे पढ़ सकता था? इसलिए टोपी का पास हो जाना ही बहुत था। टोपी के दो साल एक ही कक्षा में रहने के बाद जब वह पास हुआ तो उसकी दादी बोली कि वाह !टोपी को भगवान नजरे-बंद से बचाए। बहुत अच्छी रफ़्तार पकड़ी है। तीसरे साल पास हुआ वो भी तीसरी श्रेणी में, चलो पास तो हो गया।

प्रश्न उत्तर:-

प्रश्न 1 - इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है?

उत्तर - इफ़्फ़न टोपी का पहला दोस्त था। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे थे। दोनों एक दूसरे से कोई बात नहीं छुपाते थे। टोपी का इफ़्फ़न की दादी से भी बहुत गहरा नाता था क्योंकि जो प्यार और अपनापन टोपी को उसके घर में नहीं मिला वह इफ़्फ़न और इफ़्फ़न की दादी से मिला। इसलिए कहा जा सकता है कि इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

प्रश्न 2 - इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर क्यों जाना चाहती थीं?

उत्तर - इफ़्फ़न की दादी किसी इस्लामी आचार्य की बेटी नहीं थी बल्कि एक जमींदार की बेटी थी। दूध-घी खाती हुई बड़ी हुई थी परन्तु लखनऊ आ कर वह उस दही के लिए तरस गई थी। जब भी वह अपने मायके जाती तो जितना उसका मन होता, जी भर के खा लेती क्योंकि लखनऊ वापिस आते ही उन्हें फिर मौलविन बन जाना पड़ता। यही कारण था कि इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर जाना चाहती थीं।

प्रश्न 3 - दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी क्यों नहीं कर पाई?

उत्तर - दादी की शादी एक मौलवी परिवार में हुई थी और मौलवियों के घर में शादी-ब्याह के अवसर

पर कोई गाना-बजाना नहीं होता। इसी वजह से दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी नहीं कर पाई।

प्रश्न 4 - 'अम्मी' शब्द पर टोपी के घरवालों की क्या प्रतिक्रिया हुई?
उत्तर - अम्मी! यह शब्द सुनते ही खाने की मेज़ पर बैठे सभी लोग चौंक गए, उनके हाथ खाना खाते-खाते रुक गए। वे सभी लोग टोपी के चेहरे की ओर देखने लगे। 'अम्मी' शब्द उर्दू का था और टोपी हिन्दू था, उसके मुँह से यह शब्द सुन कर ऐसा लग रहा था जैसे रीति-रिवाजों की दीवार हिलने लगी हो। टोपी की दादी सुभद्रादेवी तो उसी वक्त खाने की मेज़ से उठ गई और टोपी की माँ रामदुलारी ने टोपी को बहुत मारा।

प्रश्न 5 - दस अक्तूबर सन पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में क्या महत्त्व रखता है?
उत्तर - दस अक्तूबर सन पैंतालीस का ऐसे तो कोई महत्त्व नहीं है परन्तु टोपी के जीवन के इतिहास में इस तारीख का बहुत अधिक महत्त्व है, क्योंकि इस तारीख को इफ़्फ़न के पिता बदली पर मुरादाबाद चले गए। इफ़्फ़न की दादी के मरने के थोड़े दिनों बाद ही इफ़्फ़न के पिता की बदली हुई थी। टोपी दादी के मरने के बाद तो अपनेआप को अकेला महसूस कर ही रहा था और अब इफ़्फ़न के चले जाने पर वह और भी अकेला हो गया था। इसीलिए टोपी ने दस अक्तूबर सन पैंतालीस को कसम खाई कि अब वह किसी भी ऐसे लड़के से कभी भी दोस्ती नहीं करेगा जिसके पिता कोई ऐसी नौकरी करते हो जिसमें बदली होती रहती हो।

प्रश्न 6 - टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही?
उत्तर - इफ़्फ़न के घर में टोपी का सबसे अधिक मेलमिलाप उसकी दादी से था। दादी की बोली उसे बहुत पसंद थी और टोपी की माँ की बोली भी वही थी। टोपी को इफ़्फ़न की दादी का हर एक शब्द शक्कर की तरह मीठा लगता था। पके आम के रस को सूखाकर बनाई गई मोटी परत की तरह मज़ेदार लगता। तिल के बने व्यंजनों की तरह अच्छा लगता और वह दादी की डाँट सुन कर चुपचाप उनके पास चला आता। टोपी को अपनी दादी बिलकुल भी अच्छी नहीं लगती थी। इसीलिए टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही।

प्रश्न 7 - पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह क्यों था?
उत्तर - इफ़्फ़न को अपनी दादी से बहुत ज्यादा प्यार था। प्यार तो उसे अपने अब्बू, अम्मी, बड़ी बहन और छोटी बहन नुज़हत से भी था परन्तु दादी से वह सबसे ज्यादा प्यार किया करता था। अम्मी तो कभी-कभार इफ़्फ़न को डाँट देती थी और कभी-कभी तो मार भी दिया करती थी। बड़ी बहन भी अम्मी की ही तरह कभी-कभी डाँटती और मारती थी। अब्बू भी कभी-कभार घर को न्यायालय समझकर अपना फैसला सुनाने लगते थे। नुजहत को जब भी मौका मिलता वह उसकी कापियों पर तस्वीरें बनाने लगती थी। बस एक दादी ही थी जिन्होंने कभी भी किसी बात पर उसका दिल नहीं दुखाया था। यही कारण था कि पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह था।

प्रश्न 8 - इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा क्यों लगा?
उत्तर - टोपी और दादी में एक ऐसा सम्बन्ध हो चूका था जिसे शायद अगर इफ़्फ़न के दादा जीवित होते तो वह भी बिलकुल उसी तरह न समझ पाते जैसे टोपी के घरवाले न समझ पाए थे। दोनों अलग-अलग अधूरे थे। एक ने दूसरे को पूरा कर दिया था। दोनों ही प्यार के प्यासे थे और एक ने दूसरे की इस प्यास को बुझा दिया था। दोनों अपने-अपने घरों में अजनबी और भरे घर में अकेले थे क्योंकि दोनों को ही उनके घर में कोई समझने वाला नहीं था। दोनों ने एक दूसरे के अकेलापन को दूर कर दिया था। दादी जितना प्यार इफ़्फ़न से करती थी उतना ही टोपी से भी करती थी। दादी दोनों को ही कहानियाँ सुनाया करती थी। इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा इसलिए भी लगा क्योंकि टोपी इफ़्फ़न के घर में केवल दादी से ही मिलने जाया करता था।

प्रश्न 9 - टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथा के आलोक में अपने विचार लिखिए।
उत्तर - टोपी हिन्दू धर्म से था और इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम थी। परन्तु टोपी और दादी का रिश्ता इतना अधिक अटूट था कि टोपी को इफ़्फ़न के घर जाने के लिए मार भी पड़ी थी परन्तु टोपी दादी से मिलने, उनकी कहानियाँ सुनाने और उनकी मीठी पूरबी बोली सुनने रोज इफ़्फ़न के घर जाता था। दादी रोज उसे कुछ-न-कुछ खाने को देती पर टोपी कभी नहीं खाता था। उसे तो दादी का हर एक शब्द गुड़ की डली की तरह लगता था। टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। दोनों एक दूसरे को खूब समझते थे।

प्रश्न 10 - टोपी नवीं कक्षा में दो बार फेल हो गया। बताइए -
(क) ज़हीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के क्या कारण थे?
उत्तर - वह पढ़ाई में बहुत तेज़ था परन्तु उसे कोई पढ़ने ही नहीं देता था। जब भी टोपी पढ़ाई करने बैठता, तो कभी उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू को कोई काम याद आ जाता या उसकी माँ को कोई ऐसी चीज़ मँगवानी पड़ जाती जो नौकरों से नहीं मँगवाई जा सकती थी। अगर ये सारी चीज़े न होती तो कभी उसका छोटा भाई भैरव उसकी कापियों के पन्नों को फाड़ कर उनके हवाई जहाज़ बना कर उड़ाने लग जाता। यह तो थी पहले साल की बात। दूसरे साल उसे टाइफ़ाइड हो गया था। जिसके कारण वह पढ़ाई नहीं कर पाया और दूसरी साल भी फेल हो गया।
(ख) एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा?
उत्तर - मास्टरों ने उसकी ओर ध्यान देना बिलकुल ही छोड़ दिया था, कोई सवाल किया जाता और जवाब देने के लिए जब टोपी भी हाथ उठाता, तो कोई मास्टर उससे जवाब नहीं पूछता था। वहीद जो कक्षा का सबसे तेज़ लड़का था, उसने टोपी से कहा कि वह उन लोगों के साथ क्यों खेलता है। उसे तो आठवीं कक्षा वालों से दोस्ती करनी चाहिए क्योंकि वे लोग तो आगे दसवीं कक्षा में चले जाएँगे और टोपी को तो आठवीं वालों के साथ ही रहना है तो उनसे दोस्ती करना टोपी के लिए अच्छा होगा। टोपी

ने किसी न किसी तरह एक साल को झेल लिया। परन्तु जब सन इक्यावन में भी उसे नवीं कक्षा में ही बैठना पड़ा तो वह बिलकुल गीली मिट्टी का पिंड हो गया, क्योंकि अब तो दसवीं में भी कोई उसका दोस्त नहीं रह गया था। जो विद्यार्थी सन उनचास में आठवीं कक्षा में थे वे अब दसवीं कक्षा में थे। जो सन उनचास में सातवीं कक्षा में थे, वे टोपी के साथ पहुँच गए थे। उन सभी के बीच में वह अच्छा-ख़ासा बूढा दिखाई देने लगा था।

(ग) टोपी की भावनात्मक परेशानियों को मद्देनज़र रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक बदलाव सुझाइए।

उत्तर - बच्चे फ़ेल होने पर मानसिक रूप से परेशान हो जाते हैं। वे उसी कक्षा में अपने से छोटे विद्यार्थियों के साथ बैठने में शर्म महसूस करते हैं। अध्यापको को चाहिए की वे फेल हुए बच्चों पर भी उतना ही ध्यान दें, जितना दूसरे बच्चों पर दिया जाता है। बच्चों को केवल किताबी ज्ञान पर ही नहीं परखना चाहिए।

प्रश्न 11 - इफ़्फ़न की दादी के मायके का घर कस्टोडियन में क्यों चला गया?

उत्तर कस्टोडियन अर्थात सरकारी कब्ज़ा। इफ़्फ़न की दादी के मायके वाले जब कराची में रहने चले - गए तो उनके पुराने घर की देखभाल के लिए कोई नहीं रह गया था। उनका उनके घर पर कोई मालिकाना हक़ भी नहीं रहा था। इसी कारण इफ़्फ़न की दादी के मायके का घर कस्टोडियन में चला गया।

पाठ-९-आमंतरण

रबिन्द्रनाथ ठाकुर

आत्मत्राण पाठ सार

इस कविता के कवि 'कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर ' हैं। इस कविता का बंगला से हिंदी रूपांतरण आचार्य हरी प्रसाद द्विवेदी जी ने किया है। इस कविता में कविगुरु ईश्वर से अपने दुःख दर्द कम न करने को कह रहे है। वे उनसे दुःख दर्दों को झेलने की शक्ति मांग रहे हैं। कविगुरु ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि किसी भी परिस्थिति में मेरे मन में आपके प्रति संदेह न हो। कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु ! दुःख और कष्टों से मुझे बचा कर रखो में तुमसे ऐसी कोई भी प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ। बल्कि मैं तो सिर्फ तुमसे ये चाहता हूँ कि तुम मुझे उन दुःख तकलीफों को झेलने की शक्ति दो। उन कष्टों के समय में मैं कभी ना डरूँ और उनका सामना करूँ। मुझमें इतना आत्मविश्वास भर दो कि मैं हर कष्ट पर जीत हासिल कर सकूँ। मेरे कष्टों के भार को भले ही कम ना करो और न ही मुझे तसल्ली दो। आपसे केवल इतनी प्रार्थना है की मेरे अंदर निर्भयता भरपूर डाल दें ताकि मैं सारी परेशानियों का डट कर सामना कर सकूँ। सुख के दिनों में भी मैं आपको एक क्षण के लिए भी ना भूलूँ

अर्थात हर क्षण आपको याद करता रहूं। दुःख से भरी रात में भी अगर कोई मेरी मदद न करे तो भी मेरे प्रभु मेरे मन में आपके प्रति कोई संदेह न हो इतनी मुझे शक्ति देना।

आत्मत्राण की पाठ व्याख्या

विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ भय।
दुःख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुख को मैं कर सकूँ सदा जय।
कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष न हिले;
हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।।

शब्दार्थ - Difficult Word Meaning
विपदा - विपत्ति ,मुसीबत
करुणामय - दूसरों पर दया करने वाला
दुःख-ताप - कष्ट की पीड़ा

व्यथित - दुःखी
चित्त - मन
सांत्वना - दिलासा
सहायक - मददगार
पौरुष - पराक्रम
वंचना – वंचित
क्षय – नाश

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 'से ली गई हैं। इसके कवि 'कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर ' हैं। इन पंक्तियों का बंगला से हिंदी रूपांतरण आचार्य हरी प्रसाद द्विवेदी जी ने किया है। इन पंक्तियों में कविगुरु ईश्वर से अपने दुःख दर्द कम न करने को कह रहे है वे उन दुःख दर्दों को झेलने की शक्ति मांग रहे हैं।

व्याख्या - इन पंक्तियों में कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु ! दुःख और कष्टों से मुझे बचा कर रखो,मैं तुमसे ऐसी कोई भी प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ। बल्कि मैं तो सिर्फ तुमसे ये चाहता हूँ कि तुम मुझे उन दुःख तकलीफों को झेलने की शक्ति दो। कष्टों के समय में मैं कभी ना डरूँ और उनका सामना करूँ। दुःख की पीड़ा से दुःखी मेरे मन को आप हौंसला मत दो परन्तु हे प्रभु !

मुझमें इतना आत्मविश्वास भर दो कि मैं हर कष्ट पर जीत हासिल कर सकूँ। कष्टों में कहीं कोई सहायता करने वाला भी ना मिले तो कोई बात नहीं परन्तु वैसी स्थिति में मेरा पराक्रम कम नहीं होना चाहिए। मुझे अगर इस संसार में हानि भी उठानी पड़े और लाभ से हमेशा वंचित ही रहना पड़े तो भी कोई बात नहीं पर मेरे मन की शक्ति का कभी नाश नहीं होना चाहिए अर्थात मेरा मन हर परिस्थिति में आत्मविश्वास से भरा रहना चाहिए।

मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करुणायम)
तरने की हो शक्ति अनामय।
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय-
वहन कर सकूँ इसको निर्भय।
नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दुःख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय।।

त्राण - भय निवारण ,बचाव
अनुदिन - प्रतिदिन
तरने - पार करना
अनामय - रोग रहित
लघु - कम
सांत्वना - हौसला ,तसली देना
अनुनय- - विनय
वहन - सामना करना
निर्भय - बिना डर के
नत शिर - सिर झुका कर
दुःख-रात्रि - दुःख से भरी रात
निखिल - सम्पूर्ण
संशय – संदेह

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 'से ली गई हैं। इसके कवि 'कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर ' हैं। इन पंक्तियों का बंगला से हिंदी रूपांतरण आचार्य हरी प्रसाद द्विवेदी जी ने किया है। इन पंक्तियों में कविगुरु ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि किसी भी परिस्थिति में मेरे मन में आपके प्रति संदेह न हो।

व्याख्या - इन पंक्तियों में कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु ! मेरी आपसे यह प्रार्थना नहीं है कि आप प्रतिदिन मुझे भय से दूर रखें। आप केवल मुझे निरोग अर्थात स्वस्थ रखें ताकि मैं अपनी शक्ति के सहारे इस संसार रूपी सागर को पार कर सकूँ। मेरे कष्टों के भार को भले ही कम ना करो और न ही मुझे तसली दो। आपसे केवल इतनी प्रार्थना है की मेरे अंदर निर्भयता भरपूर डाल दें ताकि मैं सारी परेशानियों का डट कर सामना कर सकूँ। सुख के दिनों में भी मैं आपको एक क्षण के लिए भी ना भूलूँ अर्थात हर क्षण आपको याद करता रहूं। दुःख से भरी रात में भी अगर कोई मेरी मदद न करे तो भी मेरे प्रभु मेरे मन में आपके प्रति कोई संदेह न हो इतनी मुझे शक्ति देना।

आत्मत्राण प्रश्न अभ्यास (महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर)

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

प्रश्न 1 - कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है ?

उत्तर - कवि करुणामय ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है की उसे भले ही दुःख दर्द और कष्ट दे परन्तु उन सबसे लड़ने की शक्ति भी दे। चाहे दुःख हो या ख़ुशी वो ईश्वर को कभी न भूले। उसके मन में कभी ईश्वर के प्रति संदेह न हो इतनी शक्ति की माँग कवि कर रहा है।

प्रश्न 2 - 'विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं'- कवि इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर - कवि इस पंक्ति में ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मैं ये नहीं कहता की मुझ पर कोई विपदा न आये और कोई दुःख न आये। बस मैं ये चाहता हूँ कि मुझे उन विपदाओं और कष्टों को झेलने की शक्ति या ताकत देना।

प्रश्न 3 - कवि सहायक के न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है ?

उत्तर - कवि सहायक के न मिलने पर प्रार्थना करता है कि उसके पुरुषार्थ में कोई कमी न आये ,यदि संसार में उसे कोई हानि हो और कोई लाभ भी ना हो तो भी उसके मन की शक्ति का नाश नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 4 - अंत में कवि क्या अनुनय करता है ?

उत्तर - अंत में कवि अनुनय करता है कि चाहे सब लोग उसे धोखा दें , उसके बुरे समय में कोई उसका साथ ना दे और सब दुःख दर्द उसे घेर लें फिर भी उसका विश्वास ईश्वर पर कभी कम नहीं होगा। ईश्वर के प्रति उसकी आस्था कभी कम नहीं होगी।

प्रश्न 5 - 'आत्मत्राण ' शीर्षक की सार्थकता कविता के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - 'आत्मत्राण' का अर्थ है आत्मा का त्राण अर्थात आत्मा या मन के भय का निवारण या भय की मुक्ति। कवि ईश्वर से यह प्रार्थना नहीं कर रहा है कि उसे दुःख ना मिले बल्कि वह मिले हुए दुःखों को सहने और झेलने की शक्ति ईश्वर से मांग रहा है। अतः यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

प्रश्न 6 - अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना के अतिरिक्त आप और क्या - क्या प्रयास करते हैं ? लिखिए।

उत्तर - अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना के अतिरिक्त परिश्रम ,संघर्ष ,सहनशीलता और कठिनाई से परेशानिओं का सामना करना जैसे प्रयास आवश्यक हैं। धैर्य पूर्वक हम इन प्रयासों के जरिये अपनी इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 7 - क्या कवि की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है। यदि हाँ, तो कैसे ?

उत्तर - यह प्रार्थना गीत अन्य प्रार्थना गीतों से भिन्न है क्योंकि अन्य गीतों में ईश्वर से दुःख दर्द ,कष्टों को दूर करने और सुख शांति की कामना की जाती है। परन्तु इस गीत में ईश्वर से दुःख दर्द और कष्टों को दूर करने के लिए नहीं बल्कि उन दुःख दर्द और कष्टों को सहने की और झेलने की शक्ति देने के लिए कहा है।

(ख) निम्नलिखित अंशों के भाव स्पष्ट कीजिए -

(1) नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।

उत्तर - इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि सुख के दिनों में भी ईश्वर को एक क्षण के लिए भी ना भूलूँ अर्थात हर क्षण ईश्वर को याद करता रहूं। मेरे प्रभु मेरे मन में आपके प्रति कोई संदेह न हो इतनी मुझे शक्ति देना।

(2) हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही

उत्तर - इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि उन्हें अगर इस संसार में हानि भी उठानी पड़े और लाभ से हमेशा वंचित ही रहना पड़े तो भी कोई बात नहीं पर उनके मन की शक्ति का कभी नाश नहीं होना चाहिए अर्थात उनका मन हर परिस्थिति में आत्मविश्वास से भरा रहना चाहिए।

(3) तरने की हो शक्ति अनामय।
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।

उत्तर - इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि हे प्रभु ! आप केवल मुझे निरोग अर्थात स्वस्थ रखें ताकि मैं अपनी शक्ति के सहारे इस संसार रूपी सागर को पार कर सकूँ। मेरे कष्टों के भार को भले ही कम ना करो और न ही मुझे तसल्ली दो। आपसे केवल इतनी प्रार्थना है की मेरे अंदर निर्भयता भरपूर डाल दें ताकि मैं सारी परेशानियों का डट कर सामना कर सकूँ।

Q1- आत्मत्राण कविता किसके द्वारा लिखी गयी है ?

A) रवीन्द्र नाथ टेगोर द्वारा

B) कोई नही

C) कैफ़ी आज्मी

D) कोई नहीं

Q2- ये कविता मूल रूप मे किस भाषा मे लिखी गयी थी ?

A) उर्दु मे

B) फ़ारसी

C) बांग्ला भाषा मे

D) उर्दू फ़ारसी

Q3- ठाकुर की कविता मे किसके दर्शन अधिक होते हैं ?

A) माता के

B) देश भक्ति के

C) किसी के नही

D) भावुकता

Q4- रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताओ मे किस भाव की अभिव्यक्ति हुई ?

A) राष्ट्र प्रेम

B) मानव प्रेम

C) अध्यात्म प्रेम

D) सभी

Q5- रवीन्द्र नाथ की भाषा की विशेषताए क्या हैं ?

A) मार्मिकता और रोचकता

B) लय और ताल

C) संगीतात्मक

D) सभी

Q6- कवि ईश्वर से प्रार्थना कर क्या कहता है ?

A) उसे मुसीबतों से बचाया जाये

B) उस पर कोई मुसीबत न आये

C) सभी संकटो से लडने की शक्ति

D) सभी

Q7- कवि ईश्वर से क्या चाहता है ?

A) धन ऐश्वर्य

B) मुसीबतों से बचाव

C) भय से मुक्ति और संकट से जूझने क साहस

D) सभी

Q8- कवि क्या है ?

A) नास्तिक

B) शाक्त

C) आस्तिक

D) पाखंडी

Q9- इस कविता की रचना किस छन्द मे की गयी है ?

A) कविता

B) दोहा

c) मुक्त

D) छंद

Q10- कवि किस पर विजय पाना चाहता है ?

A)स्वपर

B) दुश्मन पर

C) दुखो पर

D) दोस्तों पर

पाठ-८-कारतूस

हबीब तनवीर

पाठ प्रवेश-; अंग्रेज इस देश में व्यापारी का भेष धारण कर के आये थे। किसी को कोई शक न हो इसलिए वे शुरूशुरू में व्यापार ही कर रहे थे-, परन्तु उनका इरादा केवल व्यापार करने का नहीं था। व्यापार के लिए उन्होंने जिस ईस्ट इंडिया कंपनी की-स्थापना की थी, उस कंपनी ने धीरेधीरे देश की - रियासतों पर अपना अधिकार स्थापित करना शुरू कर दिया। उनके इरादों का जैसे ही देशवासियों को अंदाजा हुआ उन्होंने देश से अंग्रेजों को बाहर निकालने के प्रयास शुरू कर दिए। पाठ में भी एक ऐसे ही अपनी जान पर खेल जाने वाले शूरवीर के कारनामों का वर्णन किया गया है। जिसका केवल एक ही लक्ष्य था -अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना। कंपनी के हुक्म चलाने वालों की उसने नींद हराम कर राखी थी। वह इतना निडर था कि मुसीबत को खुद बुलावा देते हुए न सिर्फ कंपनी के अफसरों के बीच पहुँचा बल्कि उनके कर्नल पर ऐसा रौब दिखाया कि कर्नल के मुँह से भी उसकी तारीफ़ में ऐसे शब्द निकले जैसे किसी दुश्मन के लिए नहीं निकल सकते।

प्रस्तुत पाठ में एक ऐसे अपनी जान पर खेल जाने वाले शूरवीर के कारनामों का वर्णन किया गया है, जिसका केवल एक ही लक्ष्य थाअंग्रेजों को देश से- बाहर निकालना। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने चार व्यक्तियों का वर्णन किया है, वे हैं कर्नल -, लेफ़्टीनेंट, सिपाही और सवार। कर्नल और लेफ्टिनेंट आपस में वज़ीर अली के कारनामों की बात करते हुए कहते है कि वज़ीर अली ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा है और उसको देख कर उन्हें रॉबिनहुड की याद आ जाती है। फिर कर्नल लेफ्टिनेंट को सआदत अली यानि वज़ीर अली के चाचा के बारे में बताता है की किस तरह वो वज़ीर अली के पैदा होने से दुखी था और अंग्रेजो का मित्र बन गया था। अवध के सिंहासन पर बने रहने के लिए उसने अंग्रेजो को अपनी आधी दौलत और दस लाख रूपए दिए थे

लेफ्टिनेंट को जब पता चलता है की हिंदुस्तान के बहुत से राजा, बादशाह और नवाब अफगानिस्तान के नवाब को दिल्ली पर हमला करने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं तो लेफ्टिनेंट की बातों में हामी भरते हुए कर्नल कहता है, कि अगर ऐसा हुआ तो कंपनी ने जो कुछ हिन्दुस्तान में हासिल किया है वह सब कुछ गवाना पड़ेगा। खतरा है। इसलिए अंग्रेजों को किसी भी तरह वज़ीर अली को गिरफ्तार करना ही चाहिए। कर्नल कहता है कि तभी तो वह अपनी पूरी फ़ौज को ले कर उसका पीछा कर रहा है और वज़ीर अली उनको सालों से धोखा दे रहा है। वज़ीर अली बहुत ही बहादुर आदमी है। वज़ीर अली ने कंपनी के एक वकील की हत्या भी की है। कर्नल ने हत्या की घटना का वर्णन करते हुए कहा कि वजीर अली को उसके पद से हटाने के बाद अंग्रेजों ने वजीर अली को बनारस भेज दिया था, कुछ महीनो के बाद गवर्नर जनरल वजीर अली को कलकत्ता)कोलकता (में बुलाने लगा। वज़ीर अली ने कंपनी के वकील से शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता बुला रहा है। वकील ने वज़ीर अली की शिकायत पर कोई गौर नहीं किया और उल्टा वज़ीर अली को ही बुराभला कहने लगा। वज़ीर - अली के दिल में तो पहले से ही अंग्रेजों के खिलाफ नफ़रतकूटकूटकर भरी हुई थी और वकील के - इस तरह के व्यवहार ने वज़ीर अली को गुस्सा दिला दिया और उसने चाकू से वहीँ वकील की हत्या कर दी। कर्नल लेफ्टिनेंट को समझाता है कि वज़ीर अली किसी भी तरह नेपाल पहुँचना चाहता है। वहाँ पहुँच कर उसकी योजना है कि वह अफगानिस्तान का हिन्‌दुस्तान पर हमले का इंतजार करेगा, अपनी ताकत को बढ़ाएगा, सआदत अली को सिंहासन से हटाकर खुद अवध पर कब्ज़ा करेगा और अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से निकालेगा। अंग्रेजी फ़ौज और नवाब सआदत अली खाँ के सिपाही बहुत सख्ती से वज़ीर अली का पीछा कर रहे हैं। अंग्रेजी फ़ौज को पूरी जानकारी है कि वज़ीर अली जंगलों में कहीं छुपा हुआ है। लेफ्टिनेंट कहता है कि घोड़े पर सवार आदमी सीधा अंग्रेजों के तम्बू की ओर आता मालूम हो रहा है। घोड़े के टापों की आवाज़ बहुत नजदीक आकर रुक जाती है। सिपाही अंदर आकर कर्नल से कहता है कि वह सवार उससे मिलना चाहता है। कर्नल सिपाही से उस सवार को अंदर लाने के लिए कहता है। कर्नल सवार से आने का कारण पूछता है। सवार कर्नल से कुछ कारतूस मांगता है और कहता है कि वह वज़ीर अली को गिरफ्तार करना चाहता है। यह सुन कर कर्नल सवार को दस कारतूस दे देता है और जब सवार से नाम पूछता है तो सवार अपना नाम वज़ीर अली बताता है और कहता है कि कर्नल ने उसे कारतूस दिए हैं इसलिए वह

उसकी जान को बख्श रहा है। इतना कह कर वज़ीर अली बाहर चला जाता है, घोड़े के टापों की आवाजों से लगता है की वह दूर चला गया है। इतने में लेफ्टिनेंट अंदर आता है और कर्नल से पूछता है कि वह सवार कौन था । कर्नल अपने आप से कहता है कि वह एक ऐसा सिपाही था जो अपनी जान की परवाह नहीं करता और आज ये कर्नल ने खुद देख लिया था।

क)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) दीजिए –

प्रश्न 1 - वज़ीर अली के अफ़साने सुन कर कर्नल को रॉबिनहुड की याद क्यों आ जाती थी ?

उत्तर - कर्नल को वजीर अली की कहानियाँ सुन कर रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाती थी। रॉबिनहुड की ही तरह वजीर अली के मन में भी अंग्रेजों के खिलाफ बहुत अधिक नफरत भरी पड़ी थी। वज़ीर अली भी रॉबिनहुड की ही तरह बहादुर था और अंग्रेजों को अपने देश से निकलना चाहता था।

प्रश्न 2 - सआदत अली कौन था ? उसने वज़ीर अली की पैदाइश को अपनी मौत क्यों समझा ?

उत्तर - सआदत अली, वज़ीर अली का चाचा और आसिफ़उद्दौला का भाई था। वज़ीर अली के पैदा होने को सआदत अली ने अपनी मौत ही समझ लिया था क्योंकि वज़ीर अली के पैदा होने के बाद अब वह अवध के सिंहासन को हासिल नहीं कर सकता था।

प्रश्न 3 - सआदत अली को अवध के तख़्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या मकसद था ?

उत्तर - सआदत अली अंग्रेजों का दोस्त था और भोग-विलास में रहना पसंद करता था । इसी कारण उसने अपनी आधी जायदाद और दौलत अंग्रेजों को दे दी और साथ ही दस लाख रुपये नगद भी दिए ताकि अंग्रेज उसको सिहांसन पर बना रहने दें। इस तरह अंग्रेजों का उसे तख्त पर बिठाने में लाभ-ही-लाभ था।

प्रश्न 4 - कंपनी के वकील का क़त्ल करने के बाद वज़ीर अली ने अपनी हिफ़ाजत कैसे की ?

उत्तर - वज़ीर अली वकील की हत्या करने के बाद भाग गया था। वह अपने साथियों के साथ आज़मगढ़ की तरफ़ भाग गया। आज़मगढ़ के शासकों ने उन सभी को अपनी सुरक्षा देते हुए घागरा तक पहुँचा दिया। तब से वह वहाँ के जंगलों में ही रहने लगा।

प्रश्न 5 - सवार के जाने के बाद कर्नल क्यों हक्का-बक्का रह गया ?

उत्तर - वज़ीर अली बहुत ही चतुराई और बहादुरी से कर्नल के तम्बू में सवार बन कर गया था और कर्नल को बेवकूफ बना कर दस कारतूस भी ले लिए थे। जाने के समय तक कर्नल को यह जानकारी नहीं थी कि वह सवार असल में कौन है। जब जाते हुए सवार ने अपना नाम वज़ीर अली बताया तो कर्नल उसकी बहादुरी को देख कर हक्का-बक्का रह गया।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए -

प्रश्न 1 - लेफ़्टिनेंट को ऐसा क्यों लगा कि कंपनी के ख़िलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहार दौड़ गई है ?

उत्तर - जब लेफ्टिनेंट ने कहा कि कहीं से खबर है कि वज़ीर अली अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे-

ज़मा को हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए आमंत्रित कर रहा है। तो कर्नल ने कहा कि सबसे पहले अफ़गानिस्तान को हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए टीपू सुल्तान ने आमंत्रित किया था और उसके बाद वज़ीर अली ने और फिर शमसुद्दौला ने भी अफ़गानिस्तान को हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए आमंत्रण दिया। ये सब जान कर लेफ़्टिनेंट को लगा कि कंपनी के ख़िलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहार दौड़ गई है।

प्रश्न 2 - वज़ीर अली ने कंपनी के वकील का क़त्ल क्यों किया ?

उत्तर - वजीर अली को उसके नवाब के पद से हटाने के बाद अंग्रेजों ने वजीर अली को बनारस भेज दिया था, कुछ महीनो के बाद गवर्नर जनरल वजीर अली को कलकत्ता (कोलकता) बुलाने लगा। वज़ीर अली कंपनी के वकील से शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता बुला रहा है। वकील ने वज़ीर अली की शिकायत पर कोई गौर नहीं किया और उल्टा वज़ीर अली को ही बुरा-भला कहने लगा। वज़ीर अली के दिल में तो पहले से ही अंग्रेजों के खिलाफ नफ़रत कूट-कूटकर भरी हुई थी और वकील के इस तरह के व्यवहार ने वज़ीर अली को गुस्सा दिला दिया और उसने चाकू से वहीं वकील का क़त्ल कर दिया।

प्रश्न 3 -सवार ने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किया ?

उत्तर - वज़ीर अली सवार बन कर अकेले ही अंग्रेजों के तम्बू में गया और कर्नल को ऐसे दिखाया जैसे यह भी वज़ीर अली के खिलाफ है। उसने कर्नल को कहा की उसे वज़ीर अली को गिरफ़्तार करने के लिए कुछ कारतूस चाहिए। कर्नल को लगा की वह भी वज़ीर अली को पकड़ना चाहता है इसलिए कर्नल ने सवार को दस कारतूस दे दिए। इस तरह सवार ने कर्नल से कारतूस हासिल किए।

प्रश्न 4 - वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था, कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - वज़ीर अली को अंग्रेजों ने उनके नवाब पद से हटा दिया था और बनारस भेज दिया था।वजीफ़े के लिए जो रकम दी गई थी उसमे अड़चन डालने के लिए उसे कलकत्ता बुलाया जा रहा था, जब इसकी शिकायत वकील से करने गया तो वकील उल्टा उसी को बुरा-भला कहने लगा। वकील के ऐसे व्यव्हार पर उसे गुस्सा आया और उसने वकील की हत्या कर दी। महीनों अंग्रेजों को जंगलों में दौड़ाता रहा परन्तु फिर भी उनके हाथ नहीं आया। अकेले ही अंग्रेजों के तंबू में कर्नल से मिलने चला गया और उससे दस कारतूस भी ले आया और जाते-जाते अपना सही नाम भी बता दिया। इतने ज़ोखिम भरे कारनामों से सिद्ध होता है कि वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए –

(i) मुठ्ठी भर आदमी मगर ये दमखम।

उत्तर - कर्नल अपनी पूरी फ़ौज को ले कर वज़ीर अली का पीछा कर रह है और वज़ीर अली उनको सालों से धोखा दे रहा है और इन्ही जंगलों में कहीं भटक रहा है परन्तु उसकी पकड़ में नहीं आ रहा

है। वज़ीर अली के साथ कुछ अपनी जान को जोख़िम में डालने वाले लोग हैं और ये इतने थोड़े से आदमी हैं परन्तु इनकी शक्ति और दृड़ता की कोई सीमा नहीं है।

(ii) गर्द तो ऐसी उड़ रही है जैसे की पूरा एक काफ़िला चला आ रहा हो मगर मुझे तो एक ही सवार नज़र आता है।

उत्तर - जब सिपाही ने कर्नल को कहा कि दूर से धूल उड़ती हुई दिखाई दे रही है। तो कर्नल ने तुरंत सिपाही से कहा कि वह दूसरे सिपाहियों से तैयार रहने के लिए कहे। लेफ्टिनेंट खिड़की से बाहर देखने में व्यस्त था और कहने लगा धूल तो ऐसी उड़ रही है जैसे कि एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने वाले यात्रियों का समूह आ रहा हो। परन्तु दिखाई तो एक ही घुड़सवार दे रहा है। कर्नल भी खड़की के पास गया और देख कर बोला हाँ एक ही घुड़सवार लग रहा है जो तेज़ी से घोड़े को दौड़ा कर चला आ रहा है।

व्याकरण

शुद्ध-अशुद्ध –वाक्य :-

अशुद्ध – ये बक्सा बहुत भारी है।
शुद्ध – यह बक्सा बहुत भारी है।

अशुद्ध – इस वर्ष गेहूँ का फ़सल अच्छा हुआ।
शुद्ध – इस वर्ष गेहूँ की फ़सल अच्छी हुई।

अशुद्ध – पैंट सिल गया है, पर बटन नहीं टँका है ।
शुध्द – पैंट सिल गई है, पर बटन नहीं टँकें हैं।

अशुद्ध – आपके एक-एक शब्द प्रभावशाली होते।
शुध्द – आपका एक-एक शब्द प्रभावशाली होता ।

अशुद्ध –उसके अंग-अंग काट डाले गए।
शुद्ध – उसका अंग-अंग काट डाला गया।

अशुद्ध – गिरते ही उसका प्राण निकल गया।
शुद्ध – गिरते ही उसके प्राण निकल गए।

अशुद्ध – कक्षा में बीस बच्चा अवश्य होना चाहिए।
शुद्ध – कक्षा में बीस बच्चे अवश्य होने चाहिए।

अशुद्ध – घर पर सब कुशल हैं।
शुध्द – घर में सब कुशल हैं।

अशुद्ध – मैंने हँस दिया।
शुद्ध – मैं हँस दिया।

अशुद्ध – मेरा भाई कल को आएगा।
शुद्ध – मेरा भाई कल आएगा।

अशुद्ध – अच्छे व्यवहार को रखो।
शुध्द – अच्छा व्यवहार रखो।

अशुद्ध – यह पुस्तक अनंत का है।
शुद्ध – यह पुस्तक अनंत की है।

अशुद्ध – वह घर को जा रहा है।
शुद्ध – वह घर जा रहा है।

अशुद्ध – दरवाज़ा का बाईं ओर बरामदा है।
शुद्ध – दरवाज़े के बाईं ओर बरामदा है।

अशुद्ध – आप आए पर तुम बैठे नहीं।
शुद्ध – आप आए पर आप बैठे नहीं।

अशुद्ध – वह लोग कल आ जाएँगे।
शुद्ध – वे लोग कल आ जाएँगे।

अशुद्ध – तुम तुम्हारी किताब निकालो।
शुद्ध – तुम अपनी किताब निकालो।

अशुद्ध – मेरे को तेरे से जरूरी काम
शुद्ध – मुझे तुझसे ज़रूरी काम है।

अशुद्ध – इन सबों ने मेरी शिकायत करी।
शुद्ध – इन सबने मेरी शिकायत की।

अशुद्ध – मैंने आज काम पूरा कर लेना है।
शुद्ध –मैं आज काम पूरा कर लूंगा।

अशुद्ध – आपको मिलकर मैं अति प्रसन्न हुआ।
शुद्ध – आपसे मिलकर मुझे अति प्रसन्नता हुई।

अशुद्ध – क्रोध में उसने सारे आभूषण उतार फेंका।
शुध्द – क्रोध में उसने सारे आभूषण उतार फेंके।

अशुद्ध – तुमने यह क्या करा?
शुद्ध – तुमने यह क्या किया ?

अशुद्ध – यहाँ एक औरत और एक आदमी बैठा था।
शुध्द – यहाँ एक औरत और एक आदमी बैठे थे।

अशुद्ध – देश-रक्षा के लिए हम सेना पर निर्भर करते
शुद्ध – देश-रक्षा के लिए हम सेना पर निर्भर हैं।

अशुद्ध –विवेकानंद जीवन तक ब्रह्मचारी रहे।
शुद्ध – विवेकानंद आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

अशुद्ध – वहाँ कोई लगभग पाँच सौ लोग थे।.
शुध्द – वहाँ लगभग पाँच सौ लोग थे।

अशुद्ध – उसके पास केवल नाममात्र धन रह गया है।
शुध्द – उसके पास नाममात्र धन रह गया है।

अशुद्ध – सारा माल हाथ-हाथ बिक गया।
शुध्द – सारा माल हाथों-हाथ बिक गया।

अशुद्ध मेरी बात ध्यान के साथ सुनो। –
शुद्ध मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो। –

समास का तात्पर्य होता है – संछिप्तीकरण। इसका शाब्दिक अर्थ होता है छोटा रूप। अथार्त जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जो नया और छोटा शब्द बनता है उस शब्द को

समास कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जहाँ पर कम-से-कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रकट किया जाए वह समास कहलाता है।

संस्कृत, जर्मन तथा बहुत सी भारतीय भाषाओँ में समास का बहुत प्रयोग किया जाता है। समास रचना में दो पद होते हैं, पहले पद को 'पूर्वपद' कहा जाता है और दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहा जाता है। इन दोनों से जो नया शब्द बनता है वो समस्त पद कहलाता है।

समास और संधि में अंतर :-

संधि का शाब्दिक अर्थ होता है मेल। संधि में उच्चारण के नियमों का विशेष महत्व होता है। इसमें दो वर्ण होते हैं इसमें कहीं पर एक तो कहीं पर दोनों वर्णों में परिवर्तन हो जाता है और कहीं पर तीसरा वर्ण भी आ जाता है। संधि किये हुए शब्दों को तोड़ने की क्रिया विच्छेद कहलाती है। संधि में जिन शब्दों का योग होता है उनका मूल अर्थ नहीं बदलता।

समास का शाब्दिक अर्थ होता है संक्षेप। समास में वर्णों के स्थान पर पद का महत्व होता है। इसमें दो या दो से अधिक पद मिलकर एक समस्त पद बनाते हैं और इनके बीच से विभक्तियों का लोप हो जाता है। समस्त पदों को तोडने की प्रक्रिया को विग्रह कहा जाता है। समास में बने हुए शब्दों के मूल अर्थ को परिवर्तित किया भी जा सकता है और परिवर्तित नहीं भी किया जा सकता है।

जैसे :- विषधर = विष को धारण करने वाला अथार्त शिव।

पुस्तक+आलय = पुस्तकालय।

समास के भेद :

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुब्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास क्या होता है :-

इसमें प्रथम पद प्रधान होता है| इसमें प्रथम पद अव्यय होता है

जैसे-तथा ,प्रति ,आ ,यथा ,अनु, अन आदि लगा होता है|

उदाः-

- यथाशक्ति शक्ति के अनुसार =
- यथाक्रम क्रम के अनुसार =
- यथानियम नियम के अनुसार =
- प्रतिदिन प्रत्येक दिन =
- प्रतिवर्ष हर वर्ष=
- आजन्म जन्म से लेक =र
- यथासाध्य जितना साधा जा सके =
- धडाधड धड की आवाज के साथ-धड =
- घरप्रत्येक घर = घर-
- रातों रात रात ही रात में =
- आमरण म्रत्यु तक =
- यथाकाम इच्छानुसार =
- यथास्थान स्थान के अनुसार =
- अभूतपूर्व जो पहले नहीं हुआ =
- निर्भय बिना भय के =
- निर्विवाद बिना विवाद के =
- निर्विकारबिना विकार के =
- प्रतिपल हर पल =
- अनुकूल मन के अनुसार =
- अनुरूप रूप के अनुसार =
- यथासमय समय के अनुसार =
- यथाशीघ्र शीघ्रता से =
- अकारण बिना कारण के =
- यथासामर्थ्य सामर्थ्य के अनुसार =
- यथाविधि विधि के अनुसार =
- भरपेट पेट भरकर =
- हाथोंहाथ हाथ ही हाथ में =
- बेशक शक =के बिना

- खुबसूरत अच्छी सूरत वाली =

2. तत्पुरुष समास क्या होता है :- इस समास में दूसरा पद प्रधान होता है। यह कारक से जुदा समास होता है।
इसे बनाने में दो पदों के बीच कारक चिन्हों का लोप हो जाता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
उदा:

- देश के लिए भक्ति देशभक्ति =
- राजा का पुत्र राजपुत्र =
- शर से आहत शराहत =
- राह के लिए खर्च राहखर्च =
- तुलसी द्वारा कृत तुलसीदासकृत =
- राजा का महल राजमहल =
- राजा का कुमार राजकुमार =
- धर्म का ग्रंथ धर्मग्रंथ =

(को वाले)

- रथचालक रथ को चलने वाला =
- ग्रामगत ग्राम को गया हुआ =
- माखनचोर माखन को चुराने वाला=
- वनगमन वन को गमन=
- मुंहतोड़ मुंह को तोड़ने वाला =
- स्वर्गप्राप्त स्वर्ग को प्राप्त =
- देशगत देश को गया हुआ =
- जनप्रियजन को प्रिय =
- मरणासन्न मरण को आसन्न =
- गिरहकट गिरह को काटने वाला =
- कुंभकार कुंभ को बनाने वाला =
- गृहागत गृह को आगत =

- कठफोड़वा कांठ को फोड़ने वाला =
- शत्रुघ्न शत्रु को मारने वाला =
- गिरिधर गिरी को धारण करने वाला =
- मनोहर मन को हरने वाला =

(से वाले)

- स्वरचित स्व द्वारा रचित =
- मनचाहा =मन से चाहा
- शोकग्रस्त शोक से ग्रस्त =
- भुखमरी भूख से मरी =
- धनहीन धन से हीन =
- बाणाहत बाण से आहत =
- ज्वरग्रस्त ज्वर से ग्रस्त =
- मदांध मद से अँधा =
- रसभरा रस से भरा =
- आचारकुशल आचार से कुशल =
- भयाकुल भय से आकुल =
- आँखोंदेखी आँखों से देखी =
- तुलसीकृत तुलसी द्वारा =रचित
- रोगातुर रोग से आतुर =
- पर्णकुटीर पर्ण से बनी कुटीर =
- कर्मवीर कर्म से वीर =
- रक्तरंजित रक्त से रंजित =
- जलाभिषेक जल से अभिषेक =
- रोगग्रस्त रोग से ग्रस्त =

(के लिए)

- विद्यालय विद्या के लिए आलय =
- रसोईघर रसोई के लिए घर =

- सभाभवन सभा के लिए भवन =
- विश्रामगृह विश्राम के लिए गृह =
- गुरुदक्षिणा गुरु के लिए दक्षिणा =
- प्रयोगशाला प्रयोग के लिए शाला =
- देशभक्ति देश के लिए भक्ति =
- स्नानघर स्नान के लिए घर =
- सत्यागृह सत्य के लिए आग्रह =
- यज्ञशाला यज्ञ के लिए शाला =
- डाकगाड़ी डाक के लिए गाड़ी =
- देवालय देव के लिए आलय =
- गौशाला गौ के लिए शाला =
- युद्धभूमि युद्ध के लिए भूमि =
- हथकड़ी हाथ के लिए कड़ी =
- धर्मशाला धर्म के लिए शाला =
- पुस्तकालय पुस्तक के लिए आलय =
- राहखर्च राह के लिए खर्च =

(अपादान वाला से)

- कामचोर काम से जी चुराने वाला =
- दूरागत दूर से आगत =
- रणविमुख रण से विमुख =
- नेत्रहीन नेत्र से हीन =
- पापमुक्त पाप से मुक्त =
- देशनिकाला देश से निकाला =
- पथभ्रष्ट =पथ से भ्रष्ट
- पदच्युत पद से च्युत =
- जन्मरोगी जन्म से रोगी =
- रोगमुक्त रोग से मुक्त =
- जन्मांध जन्म से अँधा =

- कर्महीन कर्म से हीन =
- वनरहित वन से रहित =
- अन्नहीन अन्न से हीन =
- जलहीन जल से हीन =
- गुणहीन गुण से हीन =
- फलहीन फल से हीन =
- भयभीत भय से डरा हुआ =

(का,की,के,रा,री,रे)

- राजपुत्र राजा का पुत्र =
- गंगाजल गंगा का जल =
- लोकतंत्र लोक का तंत्र =
- दुर्वादल दुर्व का दल =
- देवपूजा देव की पूजा =
- आमवृक्ष आम का वृक्ष =
- राजकुमारी राज की कुमारी =
- जलधारा जल की धारा =
- राजनीति राजा की नीति =
- सुखयोग सुख का योग =
- मूर्तिपूजा मूर्ति की पूजा =
- श्रधकण श्रधा के कण =
- शिवालय शिव का आलय =
- देशरक्षा देश की रक्षा =
- सीमारेखा सीमा की रेखा =

(में,पर वाला)

- राजपुत्र राजा का पुत्र =
- गंगाजल गंगा का जल =
- लोकतंत्र लोक का तंत्र =

- दुर्वादल दुर्व का दल =
- देवपूजा देव की पूजा =
- आमवृक्ष आम का वृक्ष =
- राजकुमारी राज की कुमारी =
- जलधारा जल की धारा =
- राजनीति राजा की नीति =
- सुखयोग सुख का योग =
- मूर्तिपूजा मूर्ति की पूजा =
- श्रधकण श्रधा के कण =
- शिवालय शिव का आलय =
- देशरक्षा देश की रक्षा =
- सीमारेखा सीमा की रेखा =

- वनवास वन में वास =
- ईस्वरभक्ति ईस्वर में भक्ति =
- आत्मविश्वास आत्मा पर विश्वास =
- दीनदयाल = दीनों पर दयाल
- दानवीर दान देने में वीर =
- आचारनिपुण आचार में निपुण =
- जलमग्न जल में मग्न =
- सिरदर्द सिर में दर्द =
- क्लाकुशल कला में कुशल =
- शरणागत शरण में आगत =
- आनन्दमग्न आनन्द में मग्न =
- आपबीती आप पर बीती =
- नगरवास नगर में वास =
- रणधीर रण में धीर =
- क्षणभंगुर =क्षण में भंगुर
- पुरुषोत्तम पुरुषों में उत्तम =
- लोकप्रिय लोक में प्रिय =

- गृहप्रवेश गृह में प्रवेश =
- युधिष्ठिर युद्ध में स्थिर =
- शोकमग्न शोक में मग्न =
- धर्मवीर धर्म में वीर =

3. कर्मधारय समास क्या होता है :- इस समास में विशेषण-विशेष्य और उपमेय-उपमान से मिलकर बनते हैं उसे कर्मधारय समास कहते हैं। पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है|

- चरणकमल =कमल के समान चरण
- नीलगगन =नीला है जो गगन
- चन्द्रमुख =चन्द्र जैसा मुख
- पीताम्बर =पीत है जो अम्बर
- महात्मा =महान है जो आत्मा
- लालमणि =लाल है जो मणि
- महादेव =महान है जो देव
- देहलता =देह रूपी लता
- नवयुवक =नव है जो युवक
- अधमरा =आधा है जो मरा
- प्राणप्रिय =प्राणों से प्रिय
- श्यामसुंदर =श्याम जो सुंदर है
- नीलकंठ =नीला है जो कंठ
- महापुरुष =महान है जो पुरुष
- नरसिंह =नर में सिंह के समान
- कनकलता =कनक की सी लता
- नीलकमल =नीला है जो कमल
- परमानन्द =परम है जो आनंद
- सज्जन =सत् है जो जन
- कमलनयन =कमल के समान नयन

- कमलनयन कमल के समान नयन =

4. द्विगु समास क्या होता है :-

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक होता है और कभी-कभी दूसरा पद भी संख्यावाचक होता हुआ देखा जा सकता है।

- नवग्रह = नौ ग्रहों का समूह
- दोपहर = दो पहरों का समाहार
- त्रिवेणी = तीन वेणियों का समूह
- पंचतन्त्र = पांच तंत्रों का समूह
- त्रिलोक = तीन लोकों का समाहार
- शताब्दी = सौ अब्दों का समूह
- पंसेरी = पांच सेरों का समूह
- सतसई = सात सौ पदों का समूह
- चौगुनी = चार गुनी
- त्रिभुज = तीन भुजाओं का समाहार
- चौमासा = चार मासों का समूह
- नवरात्र = नौ रात्रियों का समूह
- अठन्नी = आठ आनों का समूह
- सप्तऋषि = सात ऋषियों का समूह

5. द्वंद्व समास क्या होता है :-

इस समास में दोनों पद ही प्रधान होते हैं| ये दोनों पद एक-दूसरे पद के विलोम होते हैं लेकिन ये हमेशा नहीं होता है। दो पदों के बीच योजक(-) लगा होता है इसका विग्रह करने पर और, अथवा, या, एवं का प्रयोग होता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

- जलवायु = जल और वायु
- अपना-पराया = अपना या पराया
- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य

- राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण
- अन्न-जल = अन्न और जल
- नर-नारी = नर और नारी
- गुण-दोष = गुण और दोष
- देश-विदेश = देश और विदेश
- अमीर-गरीब = अमीर और गरीब
- नदी-नाले = नदी और नाले
- धन-दौलत = धन और दौलत
- सुख-दुःख = सुख और दुःख
- आगे-पीछे = आगे और पीछे
- ऊँच-नीच = ऊँच और नीच
- आग-पानी = आग और पानी
- मार-पीट = मारपीट
- राजा-प्रजा = राजा और प्रजा

6. बहुब्रीहि समास क्या होता है :-

इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। जब दो पद मिलकर तीसरा पद बनाते हैं तब वह तीसरा पद प्रधान होता है। इसका विग्रह करने पर वाला , है, जो, जिसका, जिसकी, जिसके, वह आदि आते हैं वह बहुब्रीहि समास कहलाता है।

- गजानन = गज का आनन है जिसका (गणेश)
- त्रिनेत्र = तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)
- नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका (शिव)
- लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
- दशानन = दश हैं आनन जिसके (रावण)
- चतुर्भुज = चार भुजाओं वाला (विष्णु)
- पीताम्बर = पीले हैं वस्त्र जिसके (कृष्ण)
- चक्रधर= चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
- वीणापाणी = वीणा है जिसके हाथ में (सरस्वती)

- स्वेताम्बर = सफेद वस्त्रों वाली (सरस्वती)
- सुलोचना = सुंदर हैं लोचन जिसके (मेघनाद की पत्नी)
- दुरात्मा = बुरी आत्मा वाला (दुष्ट)
- घनश्याम = घन के समान है जो (श्री कृष्ण)
- मृत्युंजय = मृत्यु को जीतने वाला (शिव)
- निशाचर = निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)
- गिरिधर = गिरी को धारण करने वाला (कृष्ण)
- पंकज = पंक में जो पैदा हुआ (कमल)
- त्रिलोचन = तीन है लोचन जिसके (शिव)
- विषधर = विष को धारण करने वाला (सर्प)

कर्मधारय समास और बहुब्रीहि समास में अंतर :-

समास के कुछ उदहारण है जो कर्मधारय और बहुब्रीहि समास दोनों में समान रूप से पाए जाते हैं, इन दोनों में अंतर होता है। कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है। इसमें शब्दार्थ प्रधान होता है। कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा पहला पद विशेष्य के विशेषण का कार्य करता है। जैसे :- नीलकंठ = नीला कंठ

बहुब्रीहि समास में दो पद मिलकर तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं इसमें तीसरा पद प्रधान होता है। जैसे :- नीलकंठ = नील+कंठ अर्थात =शिव ,मोर

द्विगु समास और बहुब्रीहि समास में अंतर :-

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जबकि बहुब्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है।

जैसे :-

- चतुर्भुज चार भुजाओं का समूह –
- चतुर्भुज चार हैं भ –ुजाएं जिसकी

द्विगु और कर्मधारय समास में अंतर :-

(1) द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो दूसरे पद की गिनती बताता है जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नहीं होता है।
(2) द्विगु का पहला पद्द ही विशेषण बन कर प्रयोग में आता है जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है।

जैसे :-

- नवरात्र नौ रात्रों का समूह –
- रक्तोत्पल रक्त है जो उत्पल –